मुकुन्दलाल अग्रवाल

श्रीहरिः

श्रीविष्णु अग्रसेन वंश पुराण

अग्रवाल इतिहास ग्रन्थ समुच्चय

पूर्वार्ध ४ खण्ड

जिसमें अष्टादश गोत्रों सहित अग्रोहा तीर्थधाम का वर्णन और अग्रवंशकी उत्पत्ति, वंशावली, अग्रसेन जीवन चरित्र, अनुभव खण्ड, विचार खण्ड, भूत खण्ड वर्तमान खण्ड का वर्णन किया गया है।

लेखक और प्रकाशक—ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी (अग्रोहाके जीर्णोधारक)
मु० अग्रोहा, पो० किरमारा, जि० हिसार।

मुद्रक—दाऊदयाल सक्सेना—सक्सेना प्रिंटिङ्ग वर्क्स।
नं० ४, जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता।

पुस्तक मिलनेका पता—
आल इण्डिया सेन्ट्रल अग्रवाल दरबार (रजिस्टर्ड नं० ३३८०)
अग्रोहा—जि० हिसार।

प्रथमबार १००० } मूल्य १॥)

कोई सज्जन बिना प्रकाशककी अनुमतिके न छापें।

योग मार्ग प्रवर्तक--ब्रह्मानन्द ।

गौड़ कुलावतंस पं० ब्रह्मदत्तजी

श्रीहरियाना कुरुक्षेत्र गौशाला हिसारके प्रमुख नेता ।

ब्रह्मानन्दजी (कैलाश यात्राके समय

अथः श्रीविष्णु अग्रसेन वंश पुराण

—को—

विषय-सूची ।

* अनुभव खण्ड *	पृष्ठ संख्या
अग्रोहा जिर्णोधार अग्रवाल भाग्योदय	३
नवरात्रियों में सरस्वती पूजन	४
अग्रोहा धाम की यात्रा और सती सम्वाद	६-८
सतिओं का और गणेशजी का सम्वाद	९-११
श्रीगणपतिजी का अग्रोहामें प्रगट होना	१२
श्रीगणेशजी को गणेशीलाल वकील के घर लाना	१२-१४
गणेशीलाल ब्रह्मानन्द का सम्बाद थे ऊपर	१४-१७
भविश्य उपदेश और अग्रोहे में भूमि पञ्चो से मांगना	१७-२०
* विचार खण्ड *	
हिसारमें ब्रह्मानन्दका व्याख्यान जैन और आर्य्योंको समझाना	२०-२२
गणेशीलाल और ब्रह्मानन्द की बार्त्तालाप	२२-२३
लाला सोहनलाल और ब्रह्मानन्द का सम्बाद हिसार में	२३-२४
लाला शिवनारायण का पञ्चों को इकठ्ठा करने की सलाह देना और ब्रह्मानन्द का पञ्चोंके यहां जाना	२४-२७
ब्रह्मानन्द का पञ्चोंको उपदेश	२७-२९
लाला गणेशीलाल का पंचों को सम्मति देना	२९-३०
अगरोहा के सुधार के लिये हिसार के पंचों का सारे अग्रवालों के नाम पंचायत करने का प्रार्थना पत्र	३१-३३

	पृष्ट संख्या
हिसारमें अग्रवाल महाजनोंकी पञ्चायतका होना औरपञ्चायती निर्णय	३३
पंचायत के निर्णयानुसार ब्रह्मानन्द को प्रचार करने के लिये प्रतिष्ठा प्रत्र देना पंचोके दस्तखत	३३-३६
* भूत खण्ड *	
मङ्गलाचरण	१-२
प्रताप नगर का राज्य स्थापित करना	३
वैश्य वंश वंशावली सूक्ष्म रूपसे ब्राह्मणोत्पति मार्तण्डसे उधृत	३-५
सूर्य्यवंशी राजा मानधाता का भूप होना	६
मानधाता भूप की वंशाँवली की विवेचना	६-७
इतिहासिक पण्डित गौरीशंकर	७
राजधानी अमरावती और चन्द्रावती का वर्णन	७
ऋषो केश का वर्णन	७
राजा मैनका पैदा होना	८
राजा श्याम का पैदा होना	८
राजा महीधर का पैदा होना	९
राजा महीधर को ब्राह्मण कन्या का श्राप देना	९
महाराजा अग्रसेन और उनकी बहन कमौदी का जन्म होना	१०
राजा महीधर का सुरपुर गमन	१०
राजा अग्रसेनका पिताकी पिन्ड गया करने जाना अग्रसेनका निराश होना और पिता की आज्ञासे लोहागढ़में यज्ञ की रचना करना	११
राजा अग्रसेन का लोहागढ़ से वापिस आते बखत रास्ते में अग्रोहे की स्थापना करना और विजयरायकी सलाह ।	११-१२
राजा अग्रसेन को परशुरामजीका श्राप देना	१२
अग्रोहे का वर्णन	१३

	पृष्ठ संख्या
गौड़ ब्राह्मण और अग्रवालों के सम्बन्धमें	१४
राजा अग्रसेन की बहन कमुदी की व्याख्या	१५
अग्रसेन का तपकरने को वन जाना और कौशिक मुनि की आज्ञा से वैश्य धर्म्म मंजूर कर लेना	१५
विश्वामित्र का अग्रसेन का गुरू होना	१६
अग्रसेन के नव पुत्रों का जन्म होना	१६
अग्रवाल बंश के गोत्र वेद शाखा प्रवर सूत्र	१६-१७
नागवन्शी राजावों की व्याख्या	१७
नागबन्शी राज्य कन्यायों के लिये वर की खोज करते हुए ब्राह्मणो का अग्रोहे में आगमन	१८।१६
अग्रसेन राजाको श्री विष्णु भगवानका पुत्र आठ देना	१६
नाग वन्शी कन्यायोंके नाम जो राजा अग्रसेनके पुत्रको व्याही गई	२०
राज्यवन्शी कन्यायोंके नाम जो राजा अग्रसेनके पुत्रोंको व्याही गई	२१
नाग वन्शी और राज्यवन्शी कन्यायों से पुत्र और पुत्रियां हुई उनके नाम	२२।२८
प्रवर गोत्रों के नम्बरवार	२६
शिवजी का राजा अग्रसेन को पुत्र प्रदान करना	३०
अही नगरी को बरात का प्रस्थान	३१।३२
अही नगरी के राजा का १८ पुत्रियों कीबर मांग करना	३३
राजा अग्रसेन का जसराज के पास जानाऔर पुत्रों की शादी करके घर लाना	३३-३५
जसराज का चोलों सहित जल जाना और उनको शिबजीका सरजीवन करना	३५-३७
जसराज विजयराय को बभुतिया भाट बनाना	३७
राजा अग्रसेनका अपने परिवार को आपिस में गोत्र बचाकरब्याह करने का हुक्म देना	३६

	पृष्ट संख्या
अग्रोहे के राज्य प्रवन्धकों में फुट और सिकन्दर शाह का आक्रमण और अग्रोहे का पतन	३८-४७
रानियों का सती होना	४८
शाह सिकन्दरका उत्तमचन्द्रको राज्य देना और छत्र चंवर बखशना	४८
महाराजा नन्दका राज प्रबन्ध	४६
अग्रोहे का बिनाश और पतन	४६-५५
सेठ हरभज शाह और श्यालभद्र	५६
लखीसिंह बनजारा और लखी तलाव	५७-५६
मुसाफिर नामा	५६-६०
कौम महाजन अग्रवाल की तवारीख डिप्टी अमीचन्द की रिपोर्ट जिले हिसार के इतिहास से उधृत	६१-६४
पैदाइस कौम अग्रवाल व हाल कसवा अग्रोहा	६४-६८
सती महिमा और अग्रसेन के बारे में आलोचना	६८-७४
अग्रवाल शब्द मीमांसा	७५-७८
प्राचीन अग्रोहेका वर्णन	७८-७६
राजा अग्रसेन और उग्रसेन	७६-८०
नाग बंश	८०-८४
बासुकि नाग	८४-८६
छत्र और चंवर उदयपुर का पत्र व्यवहार और हुकम	८७-८८

* बर्तमान खण्ड *

श्रीमान् गवरनर जनरल साहेब सरकारको भारतके समस्त बड़े २ अग्रवालोंके हस्ताक्षर सहित मेमोरियल भेजना।	
अग्रवाल दरबार का विवरण पुत्रों सहित चित्र	१
महाराजा अग्रसेनकी स्तुती और आरती अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर गाई गयी।	१-५

	पृष्ट संख्या
अग्रोहे के विषय पर कवित	५
अष्टादश यज्ञ का विवरण	६
अग्रोहे के सम्बन्ध में कवित	७-८
नन्द राजा का दरबार	९
१७॥ गोत्रोंका बयान	१०-११
आल इन्डिया सेन्ट्र अग्रवाल दरबार मूल भट बाणी विरदावली	//
आसका कितीं माला व्योंक विस्तार	११-१५
अग्रवाल वैश्य महाजनों की वंशावली भाटोक्त	१६-१८
दूसरे भाटों की कीर्ति माला याने मोहमदी भांट और अन्य जातों के भाट जागा कापड़ी बडवा बागोरा दसोन्धी	१८-१९
असली बभुतियां की बाणी	१९-२०
गौरक्षक निरभयानन्द और ब्रह्मानन्द का उपदेश	२१
पुराणों के आधार पर महाराजा अग्रसेनजी के पूर्वजों की वंशावली चौधरी नन्दकिशोर लिखित	२२-२५
अग्रवाल इतिहास पर दृष्टि और जोधपुर की रिपोर्ट	२५-३०
अग्रोहे की बर्तमान और भविष्य की मिश्रित कविता	३०-३३
ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी का रामगढ़ में अग्रोहे के लिये प्रचार करना	३३-३४
अग्रोहे के सम्बन्ध में गौरक्ष का प्रचार	३५-३७
अग्रवालो तेजना	३७-४१
अग्रोहे में मेला प्रचार के लिये भारत भ्रमण	४१-४५
ब्रह्मानन्द का हिसार में व्याख्यान	४६-४७
बिकानेर में ब्रह्मानन्द का आगमन	४८-४९
आश्विन शुक्ल ७ से ९ तक मेलेका प्रबन्ध	५०-५२
अग्रोहा सुधार के लिये कमलापतजीको उपदेश	५२-५३
अग्रोहा में उपदेश और पञ्चायत	५४-५५

	पृष्ट संख्या
पञ्चो से प्रश्नोत्तर	५५-५६
गोरक्षा भजन	५८-५९
रामगढ़ और फतेहपुर का पत्र व्यवहार	६०-६२
मेले के लिये आम नोटिस हांसी, हिसार, भिवाणीसरसे कलकत्तादि मुल्कों में पंचायती प्रस्ताव पास होना	६३-६४

चतुर्भुज भाटके इन ८ प्रश्नोंके उत्तर इसी पुस्तकमें है

१—अग्रसेन जी के पुर्वजों की राजधानी किस २ स्थानमें थी ओर उनके नाम क्या क्या थे

२—अग्रसेन जी के पूर्वज क्षत्रि थे वावैश्य, यदि क्षत्रि थे तो बैश्य किस प्रकार होगये।

३—अग्रसेनजी का विवाह किस वंश में और कोनसे राजा के हुआ था सब रानी कितनी थीं और उनके नाम क्या क्या थे।

४—अग्रसेन जी के समस्त पुत्र कितने थे, और वे किस किस रानी के जन्मे थे और उनके नाम क्या क्या थे

५—अग्रसेनजीके पुरोहित प्रारम्भमें कोन थे पश्चात कौन किस प्रकार हुए।

६—अग्रसेन जी के तनय क्षत्रीवंश में विवाहें थे वा बैश्य वंश में। उनकी रानियों के क्या २ नाम थे और उनकी संतानों का विवाह संस्कार किन २ के यहां था।

७—महाराजा अग्रसेन जी को आप किन २ से हुआ व किस २ ने लिये उद्धार किससे हुआ था।

८—भाट जाति का अग्रवालों से इतना दृढ़ सम्बन्ध क्यों है। और कब से इनके भाट कौनसे हैं।

अग्रवाल कुलदीपक

महादेवलाल खेतान ।

श्रीगणेशाय नम ।

भूमिका ।

आज श्री परम पिता परमात्माकी कृपासे वैश्य अग्रवाल व श्रीमहाराजा धिराज अग्रसेनजी का इतिहास लिखनेका सुअवसर प्राप्त हुआ है। जिस इतिहासके प्राप्त करनेके लिये बड़े बड़े इनाम बोले गये थे। जिसके लिये अग्रवाल दरबार २५ सालसे परिश्रम कर रहा था। वह अब यह आपकी सेवा में समर्पित है। इसमें सृष्टि की उत्पत्तिसे लेकर आज दिन तक अग्रवालोंकी व अग्रोहाकी क्या क्या दशा हुई और किस किस समयमें ? अग्रसेन जी कौन थे और उनके पुत्रों के अलग २ गोत्र होने का और आधे गोत्र का क्या कारण है ? व सृष्टिकी उत्पत्ति के समय में वैश्य वर्ण कौन सा था और अग्रवालोंका उनसे क्या सम्बन्ध है। अग्रवाल नागबंशी राजबंशी, बहत्तरिये, दस्से और बिसे क्यों कहलाते हैं। इनका आपसमें क्या बर्त्ताव है व अग्रोहे से अग्रसेन जी का किस प्रकार सम्बन्ध था और फिर अग्रोहा किस प्रकार उजड़ा और किस समय में। अग्रोहामें अग्रवालो को जो बाहरसे आकर बसते थे उनको एक एक रुपया और एक २ जोड़ा ईंट देके बराबरका लखपति बनानेकी प्रथा किसने डाली और कब। अग्रोहा कई दफा बसा और कई दफा उजड़ा वह कब और क्यों। और अब फिर आबाद होना व अग्रवाल जाति छत्र और चँवर विवाहके समय पर क्यों लगाती है। इसकी असल जड़ क्या है। और फिलहाल कई रियासतोंने छत्र चँवर विवाहोत्सव पर लगाना मना कर दिया था। फिर अग्रवालों का हक़ स्थापित रहा उसकी नकलात व लिखा पढ़ी व बर्तमान सरकारी कागजात अग्रोहा बन्दोबस्तके शर्त वाजिबुलर्ज व अग्रसेन स्मार्क जीर्णोद्धार सम्बन्धी लिखा पढ़ी इस पुस्तकमें पूर्ण रूपसे तमाम विषयोंका सारांश है सो आपको देखनेसे ज्ञात होगा।

इस पुस्तकके लिखनेमें श्रीहस्तलिखित अग्रसेन वंश पुराण, भट्टवाणियां (भाटोंकी बहियोंके लेख), जनश्रुति प्रोहित गाथा डिपुटी अमीचन्दजी की रिपोर्ट, बूरन साहिब की शिजरे किस्तबन्दी. खेवट जोधपुरकी रिपोर्ट, मुसाफिरनामा, आइन अकबरी, अग्रसेना स्वमेध, अग्रवंशकुल भूषण, राजा अग्रसेनका जीवनचरित्र, अग्रवालोत्पत्ति अग्रवश प्रकाश, अग्रवाल वैश्योत्कर्ष, अग्रवाल इतिहास परिचय अग्रवालाङ्कुश, अग्रवाल इतिहास व अग्रवाल अग्रोहा की जागती ज्योति, गजटीयर आफ पंजाब, टाड इतिहास, वैश्योपकारक, जाति भास्कर, वैश्यइतिहास कल्पद्रुम, सतिशिला महतादिवान की जीवनी, अग्रवंशभूमिका अनुभव, पुराने सिकेदमडी शिला लेखादिसे सहायता ली गई है। बहुत कुछ संग्रह करके जनता की सेवा में प्रकाशित किया जाता है। ठुमरी, गजल, चौबोला, अष्टकली, दोहे, चौपाई, छंद, श्लोक, दौड़, चौक, सिद्धान्त चौक, लावनी खड़ी बोली आदि भिन्न भिन्न राग रागिणियोंमें और प्राकृतिक भाषा गद्य पद्य में लिखा गया है। अनुभवखण्ड वचारखण्ड भूतखण्ड वर्तमानखण्ड भविष्यखण्ड पांच खण्डोंमें विभक्त किया है। इस पुस्तकोंके देखने के बाद नाना प्रकार की भ्रमना में पड़ने की सम्भावना नहीं है। यह इतिहास अग्रवालोंका सौभाग्य वर्धक होगा। आशा है कि पाठकगण अपना अमूल्य समय खर्च करके सका अवलोकन करेंगे और लेखक का परिश्रम सुफल करेंगे और जो भूल चूक रह गई हो वह क्षा करेंगे।

प्रार्थना।

ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि. वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि॥
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि॥

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अनुभव खण्ड

श्रीअग्रोहा जोर्णोद्धार अग्रवाल भाग्योदय।

सम्बत् १९६४ विक्रमीय रविवार तारिख २८ अप्रैल सन् १९०७ को मैं काशीजी से चलकर भारत भ्रमण करता हुवा अग्रोहे पहुँचा और इस थेह को रमणीक देखकर इस के ऊपर जाकर समाधि लगाई अ अपना नित्य कर्म करने लग गया उस समय मेरे को दो सर्प और दो साधु और ५ कन्या दिखाई दी में अपने ध्यान में संलग्न था। कुछ समय पश्चात् साधु और सर्प तो चले गये परन्तु कन्या मेरे सामने खड़ी रही। जब में कुछ अवस्था को बदलना चाहता था कि कन्यायें हाथ जोड़कर कहने लगी कि आप इस अग्रोहें का जीर्णोद्धार करिये हमारे मन्दिर टूट गये है इन्हें बनवाइये। आप जैसे सन्त महात्मा तो पर उपकार के ही लिये देह धारण किया करते हैं।

श्रीविराटदेव की उपासना।

जो परमात्मा. सब का आत्मा, सत् चित् आनन्द स्वरूप, अनन्त, अज न्यायकारी, निर्मल, सदा पबित्र, दयालु, सब सामर्थ्यवाला हमारा इष्टदेव हैं वह हम को सहाय नित्य देवे, जिससे महाकठिन काम भी हम लोग सहज से करने को समर्थ हों। हे कृपानिधे ? यह काम हमारा आप ही सिद्ध करने वाले हो हम आशा करते हैं कि आप अवश्य हमारी कामना सिद्ध करेंगे।

नवरात्रियों में सरस्वती पूजन अनुभव खण्ड ।

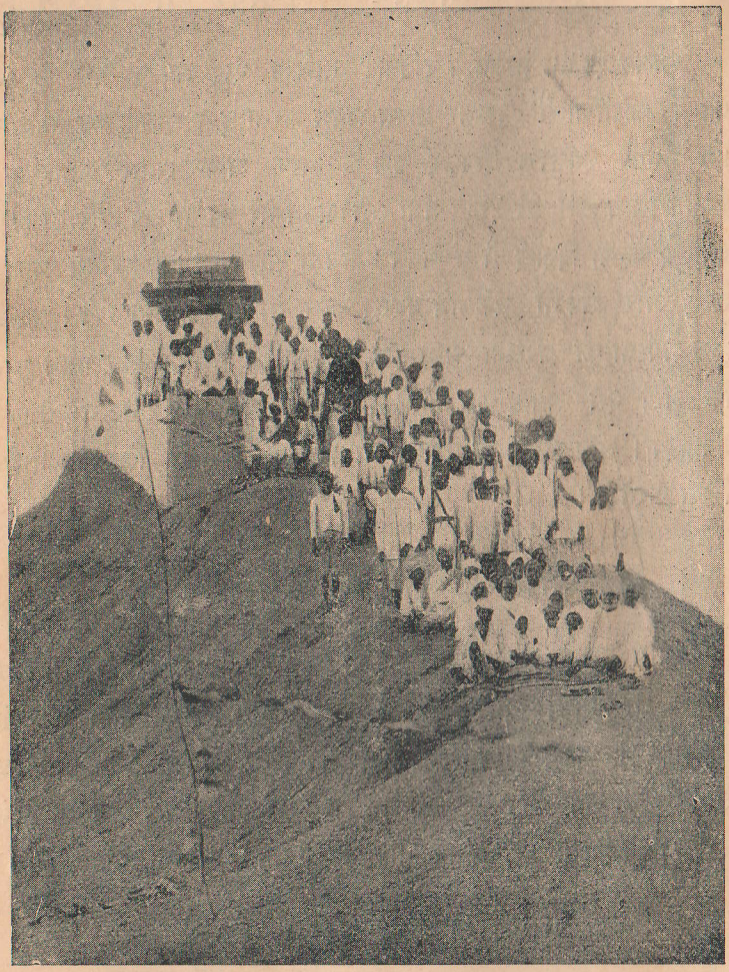

प्रथम वृत्तांत

अग्रोहामें गया जब येहि मन आई मेरे ॥
थेह कुं देखण गया में उभा णे पैरे ।
ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारीके मैं हो गया लैरे लैरे ।

दोहा ।

शिखर चढे जब थेह के देखा ऊपर जाय के ।
आस पास के गांव प्यारे देखे ध्यान लगाय के ॥
किले का था बुर्ज प्यारे समझाया बिठाय के ।
अग्रसेन का किला बीरान है पड़ा ॥
मट्टीका लगा अम्बर ऊंचा भो है बड़ा ।
लक्ष्मी का मन्दिर राख में है दवा पड़ा ।
निकलावो उसको प्यारे लाभ हो बड़ा ॥

मुझे उन ऐसा समझाया समझमें ठीक मेरे आया हुई थी ईश्वरकी माया ज्ञान मुझे ऐसा बतलाया ॥ मेरी आज्ञा मान प्यारे यहि काम हृदय धार कथ कें भजन गावो होजा सब का बेडा पार ॥ अबधू शंकर द्विज गौड कथनेमें हुशियार ॥ कमसरियट बीडसे अनुभव प्राप्त ।

संवत १९६४ विक्रमी रविवार तारिख २८ माह एप्रील ईसवी १९०७ को अग्रोहामें ब्रह्मानन्दजी और उनके निज मित्र पहुंचे एकान्त में समाधि लगाई और भजन पूजन पाठ करने लगे ।

यज्ञपति से प्रार्थना ।

ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां ँ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतांँ स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठ यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् । स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरं च । स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापते प्रजा अभूम वेट् स्वाहा ।

द्यौःशान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिस्सर्वँ शान्ति-श्शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यजु० ३६।१७ ॥

प्रतापनगर अग्रवाल कुलपूज्य
अग्रोहा धामकी यात्रा ।

दोहा ।

ब्रह्मानन्दजी एक दिन थे पर पहुंचे आन ।
आसन लाया शिखरपर, धरा हरीका ध्यान ॥ १ ॥

अपवित्र पवित्रोवा सर्वावस्थान गतो पिवा ।
यस्मरेत पुन्ठरीकाक्षं सबाह भयन्तर शुचि ॥

शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

अग्रवाल कुलपूज्य सतियोंके बचन ।
अग्रोहा जीर्णोद्धार और सती सम्बाद ।

अनुभव खण्ड ।

सतियों ने करी पंचायत बैठे थे गुरुजी ध्यान में ॥ टेक ॥
बोली सती पंचायत करके इष्टदेव के पद सिर धर के ।
देश देश में आप बिचर के सारे मुलक जहांनमें
करदो हमको विख्यायत ॥ सतियों १ ॥
प्रगट रुप हो तुम समझावो गुप्त सन्देसा हमसे पावो ।
हमरे सून्दर भवन बनावो है भूल महारी सन्तानमें है
विलकुल अज्ञायत ॥२॥ ॥ सतियों ॥
भूभर में दवि अति दुखा पाती तुम हो पुरोहित सजन संगाती ।
सब को समझावो इस भांति आवें इस मैंदान में अग्रवाल सभी
हर्षाये ॥३॥ अग्रवाल सब चलकर आवें पुत्र संगमें नारी लावे ।
गठ जोड़े की धोक लगावे गुरु मन्त्र सुनै फिर कान में नर
नार सभी हर्षायत ॥ ४ ॥ ॥ सतियों ॥

सती मन्दिर में खुड़के टाली जभी रहेगी सब की लाली ।
निर्भय ब्रह्मानन्द ॥ निर्जाली ।
कहे अवधू भज भगवान को शिरगुणियों के पद न्यायत ॥
५ ॥ सतियों ॥

ब्रह्मानन्दका सतियोंको उत्तर ।

तर्ज—मालन तो आई बीकानेर से ।

मत जाचों हमको छोड़े न हम हमारा ध्यान ॥ टेक ॥
ध्यान छोड़ हम कहिना जावे यहां ही बैठे हरिको ध्यावे ।
तुम से हम साची वतलावें चाहते हैं कल्याण ॥ १ ॥ ॥ मत जाच
मुशकील से तन पाया नरका अबमें भजन करुगा हरिका ।
मुझे सोच है अगम सफर का भली करें भगवांन ॥ २ ॥ मत जाचो ॥
यहां ही बैठा भजन करूंगा हृदय ईश्वर ध्यान धरूंगा ।
तृष्णा डर विच नहीं भरूंगा मुझको है दृढ़ ज्ञान ॥ ३ ॥ मत जाचो ॥
मेरे से मतना बतलावो और किसी को जा समझावो ।
निर्भय अवधू भजन वनावो ब्रह्मानन्द गुरु मान ॥ ४ ॥ मत जाच ।

॥ दोहा ॥

ब्रह्मानन्द से सती कहें करो खूब प्रचार ।
अग्रवाल चिताय कर करो म्हारा उद्धार ॥ १ ॥

कस कमर करो उपदेश जहां तुम्हे मिल जा अग्रबाल ॥ टेक ॥
ग्राम ग्राम पंचायत करके सब ही को समझावो । सुनकर आवें जन्मभूमिमें
वृद्ध तरुण और वाल काटे हमारे कलेश ॥ १ ॥ कस कमर ॥
ऋषि महात्मा जो होते हैं करते पर उपकार परकार्य्यों में जान गुमा गये
होकर मुनि दयाल मेट गये अन्देश ॥ २ ॥ कस कमर ॥

आठ प्रहर वे रहैं भजनमें माला रखते थे वो हाथ । ३ ॥
रामसाहके पुत्र भक्तजी पण्डित हो गये पांचों भ्रात ॥ ४ ॥
सभी भक्त जी कहने लागे ना कोई करता उनसे बात ॥ ५ ॥
आसन माला रखते हाथमें स्नान करन जात परभात ॥ ६ ॥
कह अवधू पानी ले आते भोजन करते अपने हाथ ॥ ७ ॥
कर जोड़ गणेशी बोले, तुम सुनो गुरु मेरी बात हो ॥ ८ ॥

दोहा—बड़ पुत्र जगन्नाथ जी ऐसे हुए सक्त ।
पाठ सहस्रनाम का करते थे हर वक्त ॥ १ ॥
बावन सहस्रनाम का करते थे वह पाठ ।
इसी पुण्य प्रताप से रहते थे वहां ठाट ॥ २ ॥

† कली †

कर जोड़ गणेशी बोले तुम सुनो गुरु मेरी बात ॥
सुनो गुरूजी अब मैं सब ही व्यान करूं जी ।
दुनियासे मैं नहीं डरूं जी ना समझूं उतपातको ।
मेरे ज्ञान हिये में डोले कर जोड़ गनेशी बोले ॥ १ ॥
भजन किया था पिता तुम्हारे बो प्रताप हियेमें धारे ।
तुमने भी हरिगुण चित धारे रटते थे रघुनाथ हो ।
चलते हैं ज्ञानके गोले कर जोड़ गनेशी बाले ॥ २ ॥ तुम सुनो०
ये उपकार करो ब्रह्मचारी उजड़ भूमि वस जाय हमारी ।
होवे नाम जगतमें भारी मुलकोमें विख्यात हो,
तुम मिल ज्या जस अनमोले कर जोड़ गणेशी० ॥३तुम० ॥
गौड़ विप्रके समझो मेले अग्रवाल हैं सारे चेले ।
और विप्र दे गये धकेले कर करके अपघात हो ।
भर पेट हो गये ढोले कर जोड़ गणेशी बोले ॥ २ तुम० ॥
ये कारण मोहि दीखा कामिल अब हमारी समतिमें आमिल ।
अवधू शंकर कर लो शामिल भजन कर सुर सात को हो ।

गौ शाला अन्नक्षेत्र कराकर धर्म यज्ञ ये करते हैं ॥
जहाँ तहाँ देखा जाकर प्यारे अग्रवाल ही पाये जी ॥ ३ ॥
अग्रोहा से चल कर प्यारे जिलाहिसार में आये जी ॥
सुनलो सेठो बात हमारी प्यारे हित की है सारी ॥ ४ ॥
नौ कोष पर अग्रोहा हैं जन्म भूमि हैं थारी ॥
इतने अग्रवाल तुम हो उसकी क्यों करी ख्वारी ॥ ५ ॥
जब चले थे अग्रोहा से तब करी इज्जत न्यारी न्यारी ॥
अग्रवालों को देखके मनमें हरषाये जी ॥ ६ ॥
अग्रोहासे चल कर प्यारे जिला हिसार में आये जी ॥
अग्रोहा तो जाकर देखो उजड़ा थे बिसाल ॥ ७ ॥
अग्रवाल की जन्मभूमि है दर्शन करके होय निहाल ॥
मैं आपसे कहता प्यारे अग्रोहा देखो तत्काल ॥
अपनी करो पाठशाला ब्राह्मण पढ़के होय निहाल ॥ ८ ॥
हरभज साह सेठ थे भारी अपने द्रव्यसे बसाये जी ॥
अग्रोहा से चलकर प्यरे जिला हिसार में आये जी ॥ ९ ॥
अग्रवालों तुम सुनलो भला इसी में है थारा ॥
अग्रोहा में करो बिद्यालय कटे पाप हो निस्तारा ॥ १० ॥
सारे भूमंडल में देखो इसका नामहै भारा ॥
भारतवर्षमें देखा जाकर जहां बसा अग्रबारा ॥ ११ ॥
एक एक सेठने बड़े बड़े शहर बसायेजी ॥
अग्रोहा से चल कर प्यारे जिला हिसार में आये जी ॥ १२ ।

प्रतिज्ञा भजन

कहै ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी, यह मनमें प्रतिज्ञा धारके हरे । । टेक
ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी आये अग्रवालको कहै समझाये । गर्गविसनी यहां पर पाये आर्य आदि समझायके और मनमें ऐसी विचारी कहै ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी, यह मनमें प्रतिज्ञा धार के हरे । । १ ॥ हिसारमें देखा आकर

परोपकारी जीव तुम्हीं हो करो हमारा उद्धार यह जश तुमको बड़ा जोरावर
मिल जायगा तत्काल भली करें गणेश ॥ ३ ॥ कस कमर ॥
यह कार्य्य है तुमरे लायक और नहीं करने वाला।
धन्य भाग्य है इस भूमिके जो तुम आये चाल अब कृपा करो जोगेश
कसकमर।

ब्रह्मानन्दजी का बचन।

दोहा।

ब्रह्मानन्द कहने लगे सुनो बात सती देव।
दोरंगी दुनियां बसे कोई न पाया भेव ॥ १ ॥

भजन।

यह दुनियां है दो रंग की कह उलट पलट के बात ॥ टेक ॥
जो हम दुनियां में विचरेंगे निन्दा सब ही लोग करेंगें-शिर ऊपर कोई
दोष धरेंगें कहें बात बेढंग की और समझेंगे उत्पात ॥ १ ॥ यह ॥
हम को क्या परवा समझावें पाखन्डी जग में कहलावें हम।
निर्भय हो हरिगुण गावें भक्ति करें इकलिंग की धर ध्यान श्याम परभात २
दोरंगी है दुनियां सारी बृद्ध तरुणऔर बालक नारी।
हम है सती बाल ब्रह्मचारी ना कुछ गरज पलंग की नित करें भजन दिन
रात ॥ ३ ॥ यह ॥
ऐसा काम हम कभी न करते ठाली विपत्ता सिर पर।
धरते निर्भय अबधू के दुख हरते सन्तोंकी सत संग की कर भजन पाप जर
जात ॥ ४ ॥ यह० ॥

दोहा।

ब्रह्मानन्दके सुन बचन, हो गईं सती उदास।
चिन्ता मनमें हो रही, आईं गणपतजीके पास ॥ १॥

सतियोंका गणेशजीके पास आना।

गणपतिजी के पास सती चाल के आई ॥
गणपतिजीको आ बतलाया, अपना सारा हाल सुनाया,
घाल रही लंबे सांस, सती चालके आई ॥ गणपति० ॥ २ ॥
क्या ब्रह्मा आदि ब्रह्मचारी, करते प्रथम पूजा थारी,
है पूरण विश्वास ॥ गणपति जी के पास० ॥ ३ ॥
है सुन्दर मूरत तुम्हारी, पूजा बिन हो रही ख्वारी,
खाकमें दब रहे खास सती चालके आई ॥ ४ ॥
तुम ब्रह्मानन्द पै जावो, अपना सारा हाल सुनावो,
करो यही अर्दास, गणपतिजीके पास सती चालके आई ॥ ५ ॥
ये हमें प्रतापी सृजा, करे विराटदेवकी पूजा,
काम हो सब सल रास, सती चालके आई ॥ ६ ॥
कह अवधू शंकर शुभराशी, है भारतखण्ड का वासी,
शुभचिन्तक प्रकाश, गणपतिजीके पास ॥ ७ ॥

श्रीगणेशजी महाराजका उत्तर।

अष्टकली।

गणपतिजी जब कहने लागे सुनो सती हमारी बात ॥ १ ॥
अभी जाऊ मैं ब्रह्मानन्द पै मानेंगे वह मेरी बात ॥ २ ॥
जाय कहुं मैं उनसे हाल सब अपनी जो हमने की बात ॥ ३ ॥
अपनी पूजा होवै नितही तो हो जावै उमदा बात ॥ ४ ॥
मेरे मनमें जंच गई सारी जो तुम मुझे सुनाई बात ॥ ५ ॥
पूजा बिन हम दुखी बहुत हैं पूजा हो तो अच्छी बात ॥ ६ ॥
अबतक हमको खबर नहीं थी पूजा होती है क्या बात ॥ ७ ॥
कहै अवधू गणपत हुये राजी ऐसी सुन सतियों की बात ॥ ८ ॥

श्रीगणेशजीसे सतियोंके उत्तर प्रत्युत्तर।

सब सतियोंसे पूछें गणपति बोले हंस हंसके ॥
हँस हँस गणपति बोले बोली, तुम सति हमको दीखो भोली,
हाँसी ठट्ठे करो मखोली, हमसे रस रसके सब सतियोंसे० ॥ १ ॥
ऐसा महात्मा होना मुश्किल, ऊजड़ खेड़ा बसना मुश्किल,
हमको बाहर जाना मुश्किल, पड़ रहे फँस फँसके सब सति० ॥२॥
खाक ईंटमें फंसा हुआ हूं, पग चोटी तक धंसा हुआ हूँ,
निकसूं कैसे कसा हुआ हूं, बाहर खस खसके ॥ ३ ॥
गणपत ऐसे वचन सुनाता, हमसे तो निकसा नहिं जाता,
अवधू शङ्कर भजन बनाता, अग्रोहा बस बसके ॥ ४ ॥ सब सति० ॥

अग्रवाल कुल पूज्य सतियोंका विचार और गणेशजी की स्तुति।

दोहा—गणपतजीके सुन वचन, सती कहैं यों बैन।
आदर बिना गणेशजी, पडे न चित को चैन ॥ १ ॥

राग पारवा रंगत।

म्हारे चित कूं चैन नहीं है, बिन पूजा गन्नेश जी ॥
आदर ना कुछ पूजा हमारी, ना कुछ पूजा होती थारी,
जो पूजेंगे वेदाचारी, मिट जायें सभी कलेस जी।
तुम मानो बात सही है, म्हारे चित्तको चैन नहीं० ॥ १ ॥
ब्रह्मचारी पै हमने जाके, कहे हाल सबही समझाके,
नहीं समझ में आये वाके, सत म्हारे उपदेश जी,
अब यही सोच भई है, म्हारे चितको चैन नहीं है ॥ २ ॥
अब तुम जावो ब्रह्मचारी पै, खुशी होय मूरत थारी पै,
पाप बहुत हैं संसारी पै, बिन सोचे अन्देश जी,

दुनिया पै विपत छही है, म्हारे चित को चैन नहीं हैं। बिन पूजा०
बिन मालूम ना पूजा होती, कर प्रकाश झलक जा ज्योती,
सन्तान म्हारी गफलतमें सोती, जाय बसे परदेश जी,
सब बिछुड़े कहीं कहीं है, म्हारे चितको चैन नहीं हैं। बिन पूजा०
कई पुत्र हमारे यहां आते हैं, आय झडोला उत्तराते हैं,
आश्रम बिना दुख पाते हैं, छाया बिन दुखी कई हैं ॥ ५ ॥
सुण्ड सुंडाला तुम मतवाला, धन्य धन्य शिवजीके लाला,
गल सोहै बैजयंती माला, लम्बे तेरे केस जी,
ऋद्धि सिद्धि संग लई हैं म्हारे चितको चैन नहीं० ॥ ६ ॥ बिन०
सबसे पहले पूजा थारी, करते पण्डित वेदाचारी,
अवधूशङ्कर द्विज शरण तुम्हारी, लज्जा राखो हमेशजी.
आनन्दित टेर दई है, म्हारे चितको चैन नहीं है ॥ ७ ॥ बिन०।

अष्ट-कली।

महाराज श्रीगणेशजीका उपदेश।

सती देवके सुन वचन जब गणपतजी ऐसे बोले।
बेखटके तुम रहो सतीजी मत ना करियो तुम रोले ॥१
खाय फडफडी गणपत चाले भरे राखमें अंगधोले।
चाले गणपत धूम मचाते जैसे चलें तोपके गोले ॥२
कर हुशियारी बाहर आये सुरत नहीं हो रहे भोले।
ऐसी मूरत वह सुन्दर बैठ रहा मडके औले ॥३
विश्वकर्माके वंशका लडका चाला सनमुख खुश होले।
अवधू कहता हाथ जोड़कर गणपत देखे अनमोले ॥ ४ ॥

दोहरा।

थेसे ऋद्धि-सिद्धि-दाता गणपतिजीका प्रकट होना।

* सम्वत् १९५६ विक्रमी *

गणपतजी के पास उन जाय करी प्रणाम शीस नवाया चरणमें करना जिसका नाम। गणपतजी युं कहते तेरा हमें बता दे नाम अब चहिये तेरा नाम बताया कौन जात और किसका जाया कैसे चाल मेरे पा आया कौन तेरा है धाम॥ १॥ सारा पता बता दे तेरा कठिण काम ले जाणा मेरा पूजन करि ये स्याम सवेरा फिर करिये तेरा काम॥ २॥ गणपतजी युं०॥ पूजा करके अन्न जल करिये, हाथ और किसीके ना दिये, नित रखिये लायके होये पावेगा आराम॥ ३॥ हित चित करके सेवा करना फूल पतासे आगे धरना निरभय अवधू फिर कुछ डरना रटते हैं घनश्याम॥ ४॥ गणपतजी युं०॥

दोहा—गणपतसे कहने लगा, काना मेरा नाम।
अग्रोहामें वास है, पिता नाम बुधराम॥ १॥
विश्वकरमा के वंश में, उत्पत भया शरीर।
गऊ चरावत मैं फिरूं, करके दिल गंभीर॥ २॥
काने खातीके सुन वचन, बोले जब गणराज।
ले चल तेरे द्वार पै, काना मुझको आज॥ ३॥
गणपतिजीके सुन बचन, काना किया विचार।
गणपतिजीको उठायके, आया अपने द्वार॥ ४॥

बाबू गणेशीलाल वकील और काने खातीके प्रश्नोत्तर

सिद्धान्त चौक।

झट सूरत गई न्यौली मैं लाला गणेशीलाल पै अग्रवाल सुत जान सांच कर मान। बड़ा धर्मधारी है पिता नाम श्योकरणदास बड़ा उपकारी हो मन में हुशियार, आया था बाहर। घोड़ेकी असवारी, आगे जो बात बीती

कहूं सारी। खातीके घरमें जाकर गणपतजी को सीस नवाके खातीको पास बुलाके, जब कहने लगा समझाके॥ ये मूरत मुझको दे दे जो चाहें सो ले ले मेरा सनेह॥ सुन्दर मूरत विसाल पै मेरी झटके सुरत चोली में झट सूरत गई न्योलीमें०॥ ये सुन्दर मुरत विशाल गणेशी लाल देखकर राजी ये मूरत मुझको दे दे ले ले बाजी ये सुन्दर मूरत निहार बड़ा है प्यार बात कहूं ताजी, तू ले ले रुपया सात कहता शाह जी सात रुपये दीने गणपत जी को ले लीने एसे थे रंग भीने कर चीत रुपये दीने गणेशीलाल वकील बड़ा है सील करी ना ढील हो राजी इस हाल ल्या बैठा दिया पोलीमें॥२॥ गणपतजी कूं ल्या विद्यालय अन्दर सब पूजा करणे लगे मूरतकी सुन्दर सब करते हैं आदर मान कराय, अस्नान चरच दिया चन्दन प्यारे जब फूल पतासे। आगे धरे ल्यारे॥ मध्य चौक॥ जब लाडू पेडे ल्यारे॥ और बालुस्याही न्यारे॥ खुरमें बरफी सारे। अमृत के छुटे फुहारे॥ उठत॥ पूरी कचोरी जान, जलेबी आन. बड़े पकवान भर दीने वा थाल पर, और डार दिये झोलीमें॥ ३ झट०॥ पण्डित हरद्वारी राम बापोडा ग्राम। बो लडके पढ़ाता वो गणपत, आगे हारमोनियम बाजा बजाता धन्य भाग आज प्रगटे गणराज। बड़े सुखदाता जो इनकी सेवा करें सदा सुखपाता॥ जो गणपतसे ध्यान लगाता वो मन इच्छा पाता और बैकुण्ठों में जाता॥ वो है शिवजीका लाल करो मत टाल पूजा करो हरसाल। तुम चलो सनातन चाल पै। सब समझो मेरी बोलीमें॥ ४ झट०॥ राजी होकर पूजा करते हाथ जोड़ कर चरनों सिर धरते। अवधू शंकर नाम सुमरते चित धर दीन दयाल पै॥ भजे राख हरी कोली में॥ झट सुरत गई न्यौली में॥ ५॥

पूजन

गणपतजी की पूजा करते घण्टे बाजें घनन घनन।
बाजैं शंख घड़ियाल प्यारे एक साथ होरही टनन टनन॥
झालर और नगारा बाजै मच रही गहरी झनन झनन।
कूद २ के करें आरती मुखसे बोल मनन मनन॥ ४॥

गणपतजी जब राजी हो गये बोले मुखसे दनन दनन ॥
गणेशीलाल मैं तुमपर राजी वर माँगो अब सनन सनन ॥ ५ ॥

वरदान

वरं ब्रूहि वरं ब्रूहि ऐसे कहते श्रीगणेशजी गनन गनन ॥
अवधू शंकर द्विज गौड़ वंशमें भाषा कीनी भनन भनन ॥ ६ ॥
दोहा—हाथ जोड़ कहने लगा, लाल। गणेशीलाल।
ये वर मुझको दीजिये, जो मुझ पै हुए दयाल ॥

प्रार्थना

कर गुप्तरूप से प्रेरणा धन्य धन्य शिवजीके लाला हो ॥ अग्रवाल सुत यहां ही बुलवाले कुवे मन्दिर बने शिवाले गोरक्षाहित हों गौशाले ॥ ऐसी अरजी गेरना। और बने पाठशाला बो, कर० ॥ १ ॥ अन्नक्षेत्र यहां लग जां भारी सदावर्त भी होवें जारी। बाग बगीची सुन्दर सारी। कर सुन्दर जल्दी देर ना चल आवें नदी नाला हो ॥ २ ॥ तलाव भी यहां सुन्दर होवें देखत मन सब ही के मोहै और चीज सब सुन्दर सोहै ॥ सबही को ल्यावो घेरना और बनें धरमशालावो ॥ ३ ॥ गणेशी लाल की सुनके वानी। जब बोले वे गणपत ज्ञानी। अवधू शंकर कथा बखानी निस दिन तुमको टेरना नित करिये प्रतिपाला हो ॥ कर गुप्त रूपमे प्रेरणा० ४ ॥

बाबू गणेशीलालका थे पर आना।

दोहा–गणपत जी कहने लगे, सुनो गणेशी लाल।
अब टुक देर न कीजिये, झट उस थे पर चाल ॥१॥

भजन

गणेशीलाल गणेशजी झट आये ब्रह्मचारी पै। दोनों चलकर थे पर आये ब्रह्मचारी वहां बैठे पाये जाय गनेशी शीस नवाये ॥ अरजी कीनी पेशजी चित्त धरो बात म्हारी पै ॥ १ ॥ गणैशीलाल यूं बोला वानी,

तुम ब्रह्मचारी हो दृढ़ ज्ञानी। हो आबाद अग्र रजधानी। ऐसा कर उपदेश जी, फिर फिरके संसारी पै ॥ २ ॥ सब देशोंमें आप विचरना। तुमको कोई भी है फिकर ना ॥ येही वचन मेरा चित धरना, तुम हो बड़े ऋषेशजी हम चलैं आयुस थारी पै ॥ ३ ॥ मदत देंगे गणपत देवा, वचन भराये करके सेवा कह अवधू पार करेंगे खेवा। पूजा करो हमेंशजी रख चित्त सेवा प्यारी पै ॥ ४ ॥ गणपतजी की देख मूरती ब्रह्मानन्दजी राजी हुए। हाथ पकड़ आसन बैठाये गणपतजी जब खुशी हुए। कर प्रणाम गणपत जीकूं ब्रह्मानन्दजी खड़े हुए। आपस में बतलावण लागे दोनों हाथ थे मिले हुए। हंस हंस करते बात प्रेमकी दोनों मनमें खिले हुए। गणेशीलाल जब खड़ा पासमें बातें सुनके खुशी हुए। सारी बात सुना दी गणपत जो कुछ पीछे ब्यान हुए। अवधू शंकर सुत जगदीश्वर कर सत्संग फिर ज्ञान हुए ॥

बाबू गणेशीलाल से ब्रह्मानन्दके प्रश्न।

भजन।

क्या मंसा है तेरी मेरा मुझे बता यजमान ॥ कली ॥ गणेशीलाल से कह ब्रह्मचारी। मनकी बात बता दे सारी, क्या मंशा है लाला थारी ॥ कर दे सभी बयान ॥ १ क्या० ॥ गायत्री वेदोंकी माता। उसपे जो ध्यान लगाता भजन करे नित सुख पाता, हो जावे कल्याण ॥ २ ॥ क्या० ॥ तुम भी बैठे भजन करौ जी हिरदय ईश्वर ध्यान धरो जी मतना तृष्णा बीच भरोजी। भली करें भगवान ॥ ३ क्या० ॥ करो भजन नित सुख पावो मत ना मेरा ध्यान डिगावो अवधूशंकर भजन बनावो कर हिरदे में ध्यान ॥ ॥ ४ ॥ क्या मंशा है ०।

दोहा–ब्रह्मानन्दके सुन वचन कहैं गणेशीलाल।
ये कार्य उपकार का मत ना समझो जाल ॥
जगन्नाथजी पिता तुम्हारे भजन किया था दिन औ रात।
बावन पाठ तो सहस्रनामके विष्णुभक्त हो गये विख्यात ॥ २ ॥

आठ प्रहर वे रहैं भजनमें माला रखते थे वो हाथ ।३ ॥
रामसाहके पुत्र भक्तजी पण्डित हो गये पांचों भ्रात ॥ ४ ॥
सभी भक्त जी कहने लागे ना कोई करता उनसे बात ॥ ५ ॥
आसन माला रखते हाथमें स्नान करन जात परभात ॥ ६ ॥
कह अवधू पानी ले आते भोजन करते अपने हाथ ॥ ७ ॥
कर जोड़ गणेशी बाले, तुम सुनो गुरु मेरी बात हो ॥ ८ ॥

दोहा—बड़ पुत्र जगन्नाथ जी ऐसे हुए सक्त ।
पाठ सहस्रनाम का करते थे हर वक्त ॥ १ ॥
बावन सहस्रनाम का करते थे वह पाठ ।
इसी पुण्य प्रताप से रहते थे वहां ठाट ॥ २ ॥

† कली †

कर जोड़ गणेशी बोले तुम सुनो गुरु मेरी बात ॥
सुनो गुरूजी अब मैं सब ही व्यान करूं जी ।
दुनियासे मैं नहीं डरूंजी ना समझूं उतपातको ।
मेरे ज्ञान हिये में डोले कर जोड़ गनेशी बोले ॥ १ ॥
भजन किया था पिता तुम्हारे बो प्रताप हियेमें धारे ।
तुमने भी हरिगुण चित धारे रटते थे रघुनाथ हो ।
चलते हैं ज्ञानके गोले कर जोड़ गनेशी बाले ॥ २ ॥ तुम सुनो०
ये उपकार करो ब्रह्मचारी उजड़ भूमि वस जाय हमारी ।
होवे नाम जगतमें भारी मुलकोमें विख्यात हो,
तुम मिल ज्या जस अनमोले कर जोड़ गणेशी० ॥३तुम० ॥
गौड़ विप्रके समझो मेले अग्रवाल हैं सारे चेले ।
और विप्र दे गये धकेले कर करके अपघात हो ।
भर पेट हो गये ढोले कर जोड़ गणेशी बोले ॥ २ तुम० ॥
ये कारण मोहि दीखा कामिल अब हमारी समतिमें आमिल ।
अवधू शंकर कर लो शामिल भजन कर सुर सात को हो ।

क्या ठुमरी गजल चमोले कर जोड़ गणेशी बोले ॥ ५ तुम० ॥

दोहा—ब्रह्मानन्द कहने लगे, सुनो गणेशीलाल।
ये कारज हो जायगा जो गणपत हुए दयाल ॥
पहले पूजा हम करो मनमें राखा ध्यान।
जब गणपत राजी हुए हमें दिया वरदान ॥ २ ॥

ख्याल- गणपति जी के पास सती निवली कला पहुंची हैं आय।
छूकर चरण मस्तक नवा मुखसे कहा सब हाल सुनाय ॥
तुम तो भूवल से निकल यहां आये हमको हैंगे दुःख सिवाय।
सन्तान हमारी हमको भूली उसको तुम चेताओ जाय ॥
खेड़ें पर एक योगी आया उसने आसन लिया लगाय।
विराटदेव का भजन करे है उसने हमको दिया जगाय ॥
फिर सब मिल हम मता उपाया चल सब पड़िये उसके पाय।
यह योगी अजमत का पूरा दीखे हैं यह बे परवाय ॥
निश्चय काम होयगा इससे यह सब देवे पुत्र चिताय।
नगर २ यह कर प्रचार सोते से उन्हें जगावे जाय ॥
उनके जगने पर फिर फौरन कल्याण हमारा हो जाय।
यह विचार कर लज्जा तजके पहुंची योगीके ढिग आय ॥
चरन लागके करी वीनती अपना सारा हाल सुनाय।
सुनकर सारा हाल हमारा उसने हमको दिया जताय ॥
साफ जबाब दिया योगी ने हम ना भजन छोड़के जांय।
फिर समझाया सब मिल हमने उसने लीना ध्यान लगाय ॥
हो निराशव हां से हम चल दी जब ना देखा कछू उपाय।
हम सब तुम्हरी आश कर आईं दौलत देना मता बताय ॥

भविष्य उपदेश अग्रोहामें

सुनलो पंचो बात हमारी भविष्य बात मैं कहता हूं ॥
ब्रह्मचर्य को साधके प्यारे परोपकार मैं चाहता हूं।

काशीजी से चला था पढ़के ऐसी मन में आई है।
पुराणे जब शास्त्र देखे परोपकार भलाई है ॥
ऋषि महर्षियो ने प्यारे परहित जान गँवाई है।
पढ़ना पढ़ाना धर्म ब्राह्मण का मनु महाराज ने गाई है॥
अग्रोंहा में कर विद्यालय बेद पढ़ाना चाहता हूं।
सुनलो पंचो बात हमारी भविष्य बातमैं कहता हूं॥
मैं जब चलाथा काशी जी से करी प्रतिज्ञा ये भारी।
बेद शास्त्र के पठन पाठन का सदा वर्त करूं जारी॥
धर्म शाला पाठशाला सदा वर्त कराउ जारी।
कुवा अन्नक्षेत्र लगबाके खिलें धर्म की फुलबारी॥
मैं आपसे कहता प्यारे परोपकार ही करता हूं।
सुनलो पंचो बात हमारी भविष्य बात में कहता हूं॥
ब्राह्मण कै धर्म छः यह मनु महाराज ने गाये है।
जो इनको साधते उत्तम श्रेणी के कह लाये है॥
बेद का पढ़ना और पढ़ाना यज्ञ करे तीन कहलाये है।
दान का लेना और देना यज्ञ कराना पाये है॥
क्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्यों का प्यारे धर्म बचाना चाहता हूं।
सुनलो पंचो बात हमारी भविष्य बात मैं कहता हूं॥
पंचायत तुम करलो प्यारे भला इसी में थारा है।
सब कामों का छोड़ो प्यारे धर्महिं सबसे प्यारा है॥
ऋषि महर्षियों ने प्यारे बांधा धर्म का लारा है।
देखो सारे ग्रंथ खोल कर लिखा धर्म बिस्तारा है॥
भूत भविष्यत वर्तमान तीनों काल की कहता हूं।
सुनलो पंचो बात हमारी भविश्य बात मैं कहता हूं॥

अग्रोहा बसानेको भूमि मांगना पंचोका भूमिदान।

पं० तुलेराम मास्टर गौड, आदुसिंह चौहान, स्वामी सच्चिदानन्द, सेठ चन्पालाल लोहिया, ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी अग्रवाल दरबारके प्रोप्राइटर लाला बिहारीलाल, चौधरी लेखराम सरदार बलजी सुखराम शिवराम चौधरी चुन्नीलाल मुन्शी, वीर गुलजी राजपूत, चन्दूलाल, जयकृष्ण माष्टर, बलजी राजपूत, चौधरी पुरण गोदारा, चौधरी जुहारा पं कृष्णलाल, सेवक नथु दरवान।

जमीन दो पैर की यहाँपर मिलके सारे दो॥
भारत वर्ष में यस कीर्ति कर लो॥ १॥
ब्रह्मानन्द के सुन बचन पंचो किया मंजूर॥
परोपकारी जीब हो करो कष्ट सब दूर॥२॥

हीथाई से लखी तक और चौकी तक देख ॥
बिहारी से चेने तक इसका लिख दो लेख ॥ ३ ॥
यह जमीन हमने दी इसका साख राम ॥
दुनिया सारी इससे बसे सत्य पुन्य इमान ॥ ४ ॥
पंचायत कहने लगी, सुनो गुरू महराज ॥
यह अग्रोहा वही है अग्रसेन का राज ॥ ५ ॥
ये खेड़ा जो दीखता, अग्रसेन का ग्राम ॥
अग्रवाल जात्तीका हैं प्राचीन यह धाम ॥६ ॥
सुनलो पंचो ध्यान दे यह तुम बारम्बार ॥
सम्वत् १९८० तक होय अग्रवाल दरवार ॥ ७ ॥
ब्रह्मानन्द के सुन बचन, होगये पंच निहाल ॥
ब्रह्मचारी वहाँ से चले' करके जय गोपाल ॥ ८ ॥

इति श्री विष्णु अग्रसेन पुराणांतर्गत सती संबाद अनुभव खंड समाप्त।

अथः विचार खण्ड आरम्भः

चांदनी चौक हिसार में और बड़ाबाजार।
सुनाने ब्रह्मानन्द लगे अग्रसेन वंश विस्तार ॥

हिसार में ब्रह्मानन्द का व्याख्यान।

अग्रोहा से चलके प्यारे जिला हिसार में आये जी।
देखा शहर में आकर सारे अग्रवाल ही पाये जी ॥
बड़े बड़े सेठ धनवाले अग्रवाल हि पाये जी ॥ १ ॥
अग्रोहा से चलकर प्यारे जिला हिसारमें आये जी।
सारे भूमंडल में प्यारे ऐसी कीरत्ति पाते हैं ॥
धर्मशाला पाठशाला कुवा आदि करवाते है ॥ २ ॥

आठ प्रहर वे रहैं भजनमें माला रखते थे वो हाथ ।३॥
रामसाहके पुत्र भक्तजी पण्डित हो गये पांचों भ्रात ॥ ४ ॥
सभी भक्त जी कहने लागे ना कोई करता उनसे बात ॥ ५ ॥
आसन माला रखते हाथमें स्नान करन जात परभात ॥ ६ ॥
कह अवधू पानी ले आते भोजन करते अपने हाथ ॥ ७ ॥
कर जोड़ गणेशी बाले, तुम सुनो गुरु मेरी बात हो ॥ ८ ॥

दोहा—बड़ पुत्र जगन्नाथ जी ऐसे हुए सक्त।
पाठ सहस्रनाम का करते थे हर वक्त ॥ १ ॥
बावन सहस्रनाम का करते थे वह पाठ।
इसी पुण्य प्रताप से रहते थे वहां ठाट ॥ २ ॥

† कली †

कर जोड़ गणेशी बोले तुम सुनो गुरु मेरी बात ॥
सुनो गुरूजी अब मैं सब ही व्यान करूं जी।
दुनियासे मैं नहीं डरूंजी ना समझूं उतपातको।
मेरे ज्ञान हिये में डोले कर जोड़ गनेशी बोले ॥ १ ॥
भजन किया था पिता तुम्हारे बो प्रताप हियेमें धारे।
तुमने भी हरिगुण चित धारे रटते थे रघुनाथ हो।
चलते हैं ज्ञानके गोले कर जोड़ गनेशी बाले ॥ २ ॥ तुम सुनो०
ये उपकार करो ब्रह्मचारी उजड़ भूमि वस जाय हमारी।
होवे नाम जगतमें भारी मुलकोमें विख्यात हो,
तुम मिल ज्या जस अनमोले कर जोड़ गणेशी० ॥३तुम० ॥
गौड़ विप्रके समझो मेले अग्रवाल हैं सारे चेले।
और विप्र दे गये धकेले कर करके अपघात हो।
भर पेट हो गये ढोले कर जोड़ गणेशी बोले ॥ २ तुम० ॥
ये कारण मोहि दीखा कामिल अब हमारी समतिमें आमिल।
अवधू शंकर कर लो शामिल भजन कर सुर सात को हो।

गौ शाला अन्नक्षेत्र कराकर धर्म यज्ञ ये करते हैं ॥
जहाँ तहाँ देखा जाकर प्यारे अग्रवाल ही पाये जी ॥ ३ ॥
अग्रोहा से चल कर प्यारे जिलाहिसार में आये जी ॥
सुनलो सेठो बात हमारी प्यारे हित की है सारी ॥ ४ ॥
नौ कोष पर अग्रोहा हैं जन्म भूमि हैं थारी ॥
इतने अग्रवाल तुम हो उसकी क्यों करी ख्वारी ॥ ५ ॥
जब चले थे अग्रोहा से तब करी इज्जत न्यारी न्यारी ॥
अग्रवालों को देखके मनमें हरषाये जी ॥ ६ ॥
अग्रोहासे चल कर प्यारे जिला हिसार में आये जी ॥
अग्रोहा तो जाकर देखो उजड़ा थे बिसाल ॥ ७ ॥
अग्रवाल की जन्मभूमि है दर्शन करके होय निहाल ॥
मैं आपसे कहता प्यारे अग्रोहा देखो तत्काल ॥
अपनी करो पाठशाला ब्राह्मण पढ़के होय निहाल ॥ ८ ॥
हरभज साह सेठ थे भारी अपने द्रव्यसे बसाये जी ॥
अग्रोहा से चलकर प्यारे जिला हिसार में आये जी ॥ ९ ॥
अग्रवालों तुम सुनलो भला इसी में है थारा ॥
अग्रोहा में करो बिद्यालय कटे पाप हो निस्तारा ॥ १० ॥
सारे भूमंडल में देखो इसका नामहै भारा ॥
भारतवर्षमें देखा जाकर जहां बसा अग्रबारा ॥ ११ ॥
एक एक सेठने बड़े बड़े शहर बसायेजी ॥
अग्रोहा से चल कर प्यारे जिला हिसार में आये जी ॥ १२ ।

प्रतिज्ञा भजन

कहै ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी, यह मनमें प्रतिज्ञा धारके हरे। टेक
ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी आये अग्रवालको कहै समझाये। गर्गबिसनी यहां पर
पाये आर्य आदि समझायके और मनमें ऐसी विचारी कहै ब्रह्मानन्द
ब्रह्मचारी, यह मनमें प्रतिज्ञा धार के हरे। १ ॥ हिसारमें देखा आकर

कहने लगे सबको समझाकर अग्रोहा को फिर बसवा कर करूं विद्या में
जारी कहै ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी, यह मनमें प्रतिज्ञा धारके हरे ॥ २ ॥
ब्रह्मानन्द उपदेश सुनावें अग्रवाल सुनके हर्षावें जैनी विसनी सब सुन जावें
ऐसा उपदेश यह भारी कहै ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी, यह मनमें प्रतिज्ञा धारके
हरे० ॥ ३ ॥ ऐसा व्याख्यान उन दिया विशाल जी। नर नारी सुनकर
हुए निहालजी, अग्रोहामें चल दो हाल जी, ऐसो मनमें विचारी ॥ ४ कहै
ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी मनमें प्रतिज्ञा धारके हरे ॥

दोहा—देख बैठक परशुरामकी खुशी भये ब्रह्मानन्द ।
गणेशीलाल वकील ने खूब किया परबन्ध ॥ १
गणेशीलाल कहने लगे मनमें सोच विचार ॥
आप हमारे कुल पूज्य हो करो हमारा उद्धार ॥ २

गणेशीलाल और ब्रह्मानंदकी बार्तालाप

ख्याल -गणेशीलाल यूं कहता वाणी किस विध फेर बसावोगे ।
अग्रसेन के अगरोहे का फिर प्रताप दिखावोगे ॥ टेक ॥
आवो ब्रह्मचारीजी बैठो आपसमें मिल बात करें ।
मनकी बात बता दे सारी ये मिलके कुशलात करें ।
अग्रवाल मिलवाके प्यारे सब भाइयोंको एका करें ॥
अग्रसेनके अगरोहा को फिरसे चमत्कार करें ॥
चलकर अग्रोहा से आये पञ्चायत करवावोगे ।
गणेशीलाल युं कहता वाणी किस बिध फेर बसावोगे ॥ १
नयामतसिंह जुगलकिशोर और बांकेराय पै जावो जी ।
परसराम बृन्दावन श्योनाथमलको हाल सुनावो जी ॥
रामचन्द्र हुणतराम तुलसीराम मालगुजार कहावोजी ।
मालगुजारी अग्रोहामें करके जन्मभूमि बसवावो जो ॥
क्या क्या धर्मके कारज करके गुरुजी फेर बसावोगे ॥ २ ॥

गणेशी लाल यूं कहता वाणी किस विध फेर बसायोगे ।
ब्रह्मानन्द जी कहते प्यारे यह खेड़ा बसवाऊंगा ।
अन्नक्षेत्र सदावर्त कर सतिमन्दिर चिणवाऊंगा ॥
जितने धर्म दुनिया के सारे फिर प्रकाश दिखलाऊंगा ।
पहले यहां के पञ्चोंकी जब पञ्चायत करवावोगे ॥
गणेशीलाल युं कहता बाणी किस विध फेर बसावोगे ॥ ३ ॥
अग्रसेनकी नगरी अग्रोहा यह जन्मभूमि हैं प्यारी ।
हाहा कर कह अग्रवाल से वैश्योंकी है महतारी ॥
इतने अग्रवाल के होते उसकी याद बिसारी।
अग्रवाल जो शेठ धने है दयावान हिम्मत धारी
जहाँ तहाँ हम जाकर पंचायत को समझावेंगे ।
गणेशीलाल यूं कहता बाणी किस विधि फेर बसाबोगे ॥ ४ ॥
अग्रसेनके अग्रोहा का फिर प्रताप दिखावोगे ।

लाला सोहनलाल खजानचो

॥ दोहा ॥

पंच जब कहने लगे सुनो गुरू महाराज ॥
यह कार्य हो जायगा इसकी भाबी आज ॥ १ ॥
सारे शहर हिसार में, पंच शिरोमणि दोय ॥
लाला सोहनलालजी, चन्दुलाल करे सो होय ॥ २ ॥
बजारमे चलते आये लाला जी थे बैठे हुये ॥
ब्रह्मचारी जी को आता देखा सोहन लाला जी खड़े हुये ॥ ३ ॥
देख कर लाला जी हर्षाये मन में ऐसे खुशी हुये ॥
सारे हाल सुनाबो महाराज जी बाजारमे ब्याख्यान हुये ॥ ४ ॥
ऊजाड़ खेड़ा पड़ा आपका अग्रबाल धनबान हुये ॥
ब्रह्मचारी की सुनकर बाणी बैश्यों को इतमिनान हुये ॥ ५ ॥
क्षमादत्त भाषा कथ गावें वर माँगो वरदान हुबे ॥
ब्रह्मचारी के सुन बचन लाला सोहन लाल ॥
हाथ जोड़ सिर नाय के बोले हैं तत्काल ॥ १ ॥

लाला सोहनलाल का ब्रह्मानंद को प्रोत्साहन।

भजन ।

आप करो हमारा उद्धार जी ब्रह्मानन्द कहाने वाले ॥
तुम जगन्नाथ घर जाये बिप्रो में श्रेष्ठ कहाये ।
न्यौली नगर के रहने वाले ॥ १ ॥
थारे पिता हुवे तपधारी ? जिन करी प्रतिज्ञा भारी ॥
बावन पाठके करने वाले ॥ २ ॥
आप करो हमारा उद्धार जी ब्रह्मानन्द कहाने वाले ॥
जिन पूजन करता ऐसा ऋषि लोग करता वैसा ।
शालग्राम राम के पूजने वाले ॥ ३ ।
आप करो हमारा उद्धार जी ब्रह्मानन्द कहाने वाले ॥
हमको दीख पड़ा है आप, विष्णु सहस्रनाम प्रताप ।
धर्मकी चर्चा चलानेवाले ॥ आप करो० ॥
ये ऐसे हुए अनुरागी जिनकी श्रुती धर्मसे लागी ।
गायत्री मन्त्रके जपनेवाले ॥ आप करो ॥
यह जगन्नाथजी तप धारी उसकी मेहरबानी सारी ।
आप हुए उपदेश सुनानेवाले ॥ आप करो० ॥ ६
उमर सात वर्षकी आई आपने रुद्री कन्ठ सुनाई ।
पिता को खुशी बढ़ानेवाले ॥ आप करो ॥ ७
कह क्षमादत्त कर जोरी यह ईश्वर विनती मोरी ।
बेड़ा पार लगानेवाले ॥ ८
आप करो हमारा उद्धार जी ब्रह्मानन्द कहानेवाले ॥

क्या ठुमरी गजल चमोले कर जोड़ गणेशी बोले ॥ ५ तुम० ॥
दोहा—ब्रह्मानन्द कहने लगे, सुनो गणेशीलाल ।
ये कारज हो जायगा जो गणपत हुए दयाल ॥
पहले पूजा हम करो मनमें राखा ध्यान ।
जब गणपत राजी हुए हमें दिया वरदान ॥ २ ॥

ख्याल- गणपति जी के पास सती निवली कला पहुंची हैं आय ।
छूकर चरण मस्तक नवा मुखसे कहा सब हाल सुनाय ॥
तुम तो भूवल से निकल यहां आये हमको हैंगे दुःख सिवाय ।
सन्तान हमारी हमको भूली उसको तुम चेताओ जाय ॥
खेड़ें पर एक योगी आया उसने आसन लिया लगाय ।
विराटदेव का भजन करे है उसने हमको दिया जगाय ॥
फिर सब मिल हम मता उपाया चल सब पड़िये उसके पाय ।
यह योगी अजमत का पूरा दीखे हैं यह बे परवाय ॥
निश्चय काम होयगा इससे यह सब देवे पुत्र चिताय ।
नगर २ यह कर प्रचार सोते से उन्हें जगावे जाय ॥
उनके जगने पर फिर फौरन कल्याण हमारा हो जाय ।
यह विचार कर लज्जा तजके पहुंची योगीके ढिग आय ॥
चरन लागके करी वीनती अपना सारा हाल सुनाय ।
सुनकर सारा हाल हमारा उसने हमको दिया जताय ॥
साफ जबाब दिया योगी ने हम ना भजन छोड़के जांय ।
फिर समझाया सब मिल हमने उसने लीना ध्यान लगाय ॥
हो निराशव हां से हम चल दी जब ना देखा कछू उपाय ।
हम सब तुम्हरी आश कर आईं दौलत देना मता बताय ॥

भविष्य उपदेश अयोहामें

सुनलो पंचो बात हमारी भविष्य बात मैं कहता हूं ॥
ब्रह्मचर्य को साधके प्यारे परोपकार मैं चाहता हूं ।

काशीजी से चला था पढ़के ऐसी मन में आई है।
पुराणे जब शास्त्र देखे परोपकार भलाई है ॥
ऋषि महर्षियो ने प्यारे परहित जान गँवाई है।
पढ़ना पढ़ाना धर्म ब्राह्मण का मनु महाराज ने गाई है॥
अग्रोंहा में कर विद्यालय वेद पढ़ाना चाहता हूं।
सुनलो पंचो बात हमारी भविष्य बातमैं कहता हूं॥
मैं जब चलाथा काशी जी से करी प्रतिज्ञा ये भारी।
वेद शास्त्र के पठन पाठन का सदा वर्त करूं जारी॥
धर्म शाला पाठशाला सदा वर्त कराउ जारी।
कुवा अन्नक्षेत्र लगबाके खिलें धर्म की फुलवारी॥
मैं आपसे कहता प्यारे परोपकार ही करता हूं।
सुनलो पंचो बात हमारी भविष्य बात में कहता हूं॥
ब्राह्मण के धर्म छः यह मनु महाराज ने गाये है।
जो इनको साधते उत्तम श्रेणी के कह लाये है॥
वेद का पढ़ना और पढ़ाना यज्ञ करे तीन कहलाये है।
दान का लेना और देना यज्ञ कराना पाये है॥
क्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्यों का प्यारे धर्म बचाना चाहता हूं।
सुनलो पंचो बात हमारी भविष्य बात मैं कहता हूं॥
पंचायत तुम करलो प्यारे भला इसी में थारा है।
सब कामों का छोड़ो प्यारे धर्महिं सबसे प्यारा है॥
ऋषि महर्षियों ने प्यारे बांधा धर्म का लारा है।
देखो सारे ग्रंथ खोल कर लिखा धर्म बिस्तारा है॥
भूत भविष्यत वर्तमान तीनों काल की कहता हूं।
सुनलो पंचो बात हमारी भविश्य बात मैं कहता हूं॥

अग्रोहा बसानेको भूमि मांगना पंचोका भूमिदान।

पं० तुलेराम मास्टर गौड, आदुसिंह चौहान, स्वामी सच्चिदानन्द, सेठ चन्पालाल लोहिया, ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी अग्रवाल दरबारके प्रोप्राइटर लाला बिहारीलाल, चौधरी लेखराम सरदार बलजी सुखराम शिवराम चौधरी चुन्नीलाल मुन्शी, वीर गुलजी राजपूत, चन्दूलाल, जयकृष्ण माष्टर, बलजी राजपूत, चौधरी पुरण गोदारा, चौधरी जुहारा पं कृष्णलाल, सेवक नथु दरवान।

जमीन दो पैर की यहाँपर मिलके सारे दो॥
भारत वर्ष में यस कीर्ति कर लो॥ १॥
ब्रह्मानन्द के सुन बचन पंचो किया मंजूर॥
परोपकारी जीव हो करो कष्ट सब दूर॥२॥

हीथाई से लखी तक और चौकी तक देख ॥
बिहारी से चेने तक इसका लिख दो लेख ॥ ३ ॥
यह जमीन हमने दी इसका साख राम ॥
दुनिया सारी इससे बसे सत्य पुन्य इमान ॥ ४ ॥
पंचायत कहने लगी, सुनो गुरू महराज ॥
यह अग्रोहा वही है अग्रसेन का राज ॥ ५ ॥
ये खेड़ा जो दीखता, अग्रसेन का ग्राम ॥
अग्रवाल जात्तीका हैं प्राचीन यह धाम ॥ ६ ॥
सुनलो पंचो ध्यान दे यह तुम बारम्बार ॥
सम्बत् १९८० तक होय अग्रवाल दरवार ॥ ७ ॥
ब्रह्मानन्द के सुन बचन, होगये पंच निहाल ॥
ब्रह्मचारी वहाँ से चले' करके जय गोपाल ॥ ८ ॥
इति श्री विष्णु अग्रसेन पुराणांतर्गत सती संबाद अनुभव खंड समाप्त।

अथः विचार खण्ड आरम्भः

चांदनी चौक हिसार में और बड़ाबाजार।
सुनाने ब्रह्मानन्द लगे अग्रसेन वंश विस्तार ॥

हिसार में ब्रह्मानन्द का व्याख्यान।

अग्रोहा से चलके प्यारे जिला हिसार में आये जी।
देखा शहर में आकर सारे अग्रवाल ही पाये जी ॥
बड़े बड़े सेठ धनवाले अग्रवाल हि पाये जी ॥ १ ॥
अग्रोहा से चलकर प्यारे जिला हिसारमें आये जी।
सारे भूमंडल में प्यारे ऐसी कीरत्ति पाते हैं ॥
धर्मशाला पाठशाला कुवा आदि करवाते है ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

घनी प्रसंसा क्या करूं वह पुर्व कहा जो आप
जो कुछ कहता आपसे विष्णुसहस्रनामका प्रताप ॥ १ ॥
इतनी सुन कर ब्रह्मानन्द जी अन्दर आये ॥
देखा वहाँ पर जाकर प्यारे शिवनारायण जी बैठे पाये

॥ दोहा ॥

शिवनारायण के सामने ब्रह्मचारी कहने लगे ॥
अग्रोहा आबाद करेंगे अग्रवाल के भाग जगे ॥ १ ॥

लाला शिवनारायण का धन्यवाद।

॥ ख्याल ॥

अग्रोहेके भाग हैं भारी जो आप ऋषि जी आये हैं।
धन्य धन्य है बुद्धि तुम्हारी अग्रवाल समझाये हैं ॥
हमतो आपके दास ब्रह्मचारी चन्दुलाल पा जावो जी।
जाकर हालसुनादो सारे मनमें खूब जँचावो जी ॥
अग्रोंहा बसवानेके लिये पञ्चायत करवावो जी।
जैनी विसनी आर्य मिलकर अग्रोहा बसावावो जी ॥
शिवनारायण कि सुनकर बाणी ब्रह्मानन्दजी सुख पाये हैं।
अग्रोहाके भाग है भारी जो आप ऋषिजी आये हैं ॥
ब्रह्मानन्दजी कहकर चाले चन्दुलालपाजाऊंगा ।
जाकर कहुं हाल मैं सारे बैठके समझाऊंगा ॥
आपचलो आगे पिछेसे मैं भी आऊंगा।
आपने कही जो प्रेमकी वार्ता मैं भी समझाऊंगा ॥
धन्यभाग है जन्म भूमिकेजो अग्रसेन संदेशा लाये हैं।
अग्रोहाके भाग हैं भारी जो आप ऋषिजी आये हैं ॥
लालाचन्दुलाल और ब्रह्मानन्दकी वार्तालाप ।
देख मकान चन्दुलालका ब्रह्मचारी जी हर्षाये ॥

देखा अंदर जाकर लालाजी बैठे पाये ॥
आता देखा ब्रह्मानन्द को चन्दुलाल ने शिर नाये ।
आदर किया आपका ऐसा सत्य गुरू आज पाये ।
ब्रह्मचारी को आया सुनकर सबही हर्षाये हैं ॥ १ ॥
अग्रोहाके भाग हैं भारी जो आप ऋषिजी आये हैं ॥२॥
अग्रवाल लोगोंकी अग्रोहामें कुछ नहीं है करतुती जी ।
इतने भारी सेठ दुनियां में इनकी करूं क्या स्तुती जी ॥
जब आपसमें चले बिगड़ कर कहो कुछ करूं स्तुतीजी ॥
कंकर और ठिकरें घास खड़ा हैं यह आपकी करतूती जी ॥
अग्रोहा हम देखा जाकर देख कर शर्माये हैं ॥३॥
अग्रोहा के भाग है भारी जो आप ऋषीजी आये हैं ॥
सुगनचन्द केदारनाथजी देखे सेठ हम आले ॥
धर्म मूर्ति केदारनाथ हैं सुगनचन्द के हैं बाले ॥
जो हमने खोला विद्यालय उसकी रक्षा करने वाले ॥
अग्रवाल नहीं चेतेंगे तो होय देशमें मुंह काले ॥
उनकी लेकर मदद विद्यालयें खुलवाये हैं ।
क्षमादत्त यह कहता बाणी भाषा ख्याल बनाये हैं ॥
अग्रोहा के भाग है भारी जो आप ऋषीजी आये हैं ॥
काशीजी से विद्या पढ़ कर बम्बई में पहुचा जाय ॥
वहाँ पर मिले केदारनाथजी (गंभिरचन्द) सुगनचन्द्रके पुत्र
कहाय उनसे बात चीत कर दिव्यपुरीमें पहुंचे आय ॥
पितृ ऋणका कर उद्धार बानप्रस्थ दिक्षा हमनें पाय ॥
अग्रोहा में विद्यालय खुलवाया है ॥
अग्रोहा जो अग्रवालों की जन्मभूमि कहलाय ।
ब्रह्मानन्द के सुन बचन लाला हुये लाचार ॥
फिरके मुखसे कहा मनमें सोच बिचार ॥१॥

आपने जो कहा काला इनका मुख इसी अग्रवाल ।
जातिने दिये सबको सुख ॥२॥
ब्रह्मानन्द कहने लगे क्या करी करतूत ॥
अग्रोहा जो आपका बोले ऊल्लू भूत ॥३॥
जन्म भूमि अग्रोहा में नहीं अग्रवाल का काम ॥
इस धर्मात्मा जातिको बार बार प्रणाम ॥४॥
अब आपको चाहिये करो यह काम ।
ऊजड़ खेड़ा बड़न का ऊसमें पावो नाम ॥५॥
ब्रह्मानन्द के सुन बचन लाला चन्दुलाल ॥
अग्रोहा आप कहते हो क्या इसमें है लाल ॥६॥
जहाँ बसे सो गाँव है जो करे सो काम ॥
जो माने वह धाम है नहीं और से काम ॥७॥
चन्दुलाल कहने लगा, ब्रह्मचारी से आप ॥
जहां दया तहां शीलता क्षमा का प्रताप ॥८॥
क्षमा दया और शांति यह होवेगा तीन ॥
जिस जगह तीनों मिलें वही है प्रवीण ॥
शिवनारायण को देखके लालाजी हर्षाय ॥
जब आये पासमें झट खुरसी मंगवाय ॥१०॥
लाले लाले प्रेमसे मिल करते बात चीत ॥
आपस में ऐसे मिलैं सोचो कुलकी रीति ॥ ११ ॥
लाला शिवनारायण जी और लाला चन्दुलाल का
बार्तालाप ॥ १२ ॥

॥ ख्याल ॥

सोचो कुलकी रीति प्यारे भाइयो कुंबुलबावो जी
छोटे बड़े भाई मिल कर सबही को समझावो जी
अग्रोहा में आज दिन नही दीवा बाती है ॥ १७ ॥

सतरह हे गोती अग्रसेन के नाती है खेड़ा ऊजड़ा
अग्रवाल का बेहद शर्म सताती है
इतने अग्रवाल के होते वहां दिवा नहीं बाती है ।।
अब आपस में मिल कर कोई बात बनावो जी ।।
सोचो कुलकी रीति प्यारे भाइयों को समझावो जी
जितने अग्रबाल दुनियां में अग्रोहा से आये हैं ।
हमको कुछ मालूम नहीं है ब्रह्मचारी जी समझाये है
नौ कोषपर अग्रोहा है वहाँ पर से सब आये हैं ।
अग्रोहा तो ऊजड़ होगया कोटी ध्वज कहलाये है
जन्म भूमि उद्धार के लिये कोई बात चलावो जी
सोचो कुल की रीति प्यारे भाईयों को समझावो जो
चन्दुलालयूं कहता बाणी सबको बुलवा करके ।
जितने भाई है हिसार में कहो समझा करके ।।
अपने भाई मिलकर सारे करो बात एका करके ।।
आपको मिले आप समझावे मैं कहुं बुला करके ।।
सोचो कुल अग्रोहा सबके सीरका जैनी आर्यो मिलजावो जी ।।
परसराम हणुतराम नियामत सिंह कहलाता है ।।
हरनामल रामचन्द्र शोनाथमल अर्जीन वोस कहलाता है ।।
मंगालीवाला सेठ बालमुकुन्द साहुकार कहाता है ।।
हीरालाल बांकेरायजी तुलसीराम किया धर्मसे नाता है
कहै क्षमादत्त सबसे मिलके पंचायत करवावो जी ।।
सोचो कुलकी रीत प्यारे भाइयोंको समझावोजी ।।
आने जाने वालेको अपने पास बुलवायके ।।
अपना नाम करलो पंचायत करवायके ।।१।।
चन्दुलालसे कहने लगा लाला गणेशीलाल ।
यह कार्य उपकार का मतना करीयो टाल ।।२।।

दुनियां है दो रंगी कोई कहेगा कुछ ।।
मूर्ख आदमी बहुत है बुद्धि जिनकी तुच्छ ।।३।।
विद्या तो पढ़ते नहीं कहाँ विद्या बिन ज्ञान ।।
जो ज्ञानी बड़ाई के लिये कहे करो सबही काम ।।
जो मनसाह बंदा करे पूर्ण करे घनश्याम ।।
गणेशीलालजी युं कह करो उपकार ।
बिना उपकारी आदमी जीवन है धिकार ।।४।।
ब्रह्मानन्द वहाँ से चला सब हाल समझाय ।।
लाला परसराम की बैठक पहुचे आय ।। ७ ।।
चन्दुलाल मनमें आपही सोच बिचार ।।
किस विधि करूं पंचायती ऐसा मनमें बिचार ।। ८ ।।
अग्रोहा हेंसीर का नहीं एकका काम ।।
जो सारे नहीं मिले तो केसे चाले काम ।। ९ ।।
गणेशी लाल का शिवनारायण और चन्दूलाल को
सम्मति देना ।
तुम नाकरियो टाल जी ये कार्य बड़ा उपकारी ।। टेक ।।
ये तो करनाहीं उपकार इसमें नहीं पुण्य का पार
जननी जन्म भूमि है प्यारी ।। तुमना करियो
टाल जी ये कार्य बड़ा उपकारो इसका इतिहास
हम ने देखा ये बड़े बड़े सेठ दया धर्म हितकारी
मतना करियो टाल जी ।। २ ।। वही जननी है प्यारी
उसकी होरही हाय २ ख्वारी ।। करो पंचायत की
तैयारो मत ना करियो टाल जी ।। ३ ऐसा
काम तो जरूर करना नहीं दुनियां से बिल
कुल डरना ।। करदो हुक्म तुम जारी मत ना
करियो टाल जी ।। ४ ।। लाला गणेशीलाल
समझावें सुनके चन्दुलाल हर्षावें ।। सब मिल कर ।।

॥ दोहा ॥

पंचायत करबावो करो फैसला जारी मतना करियो
टाल जी ॥ ५ ॥ जो गणेशीलाल समझावों हिसार के
सब पंच बुलाबावो और देश में खबर करबावो करो
हुक्म यह जारी मतना करियो टाल जी ॥ ६ ॥
सारे पञ्च मिल कर कहैं ऐसा कार्य होय।
रुपया कुछ जोड़ कर खबर सारे कर दो ॥
अग्रवाल महती सभा पहले यहां पर होय।
फिर आपसमें मिल कर पंचायत कर दो ॥
पंच जब कहने लगे ब्रह्मानन्द का काम।
पांच कोस हिसार से नौलीकला है गांम ॥
जो इनका गांम है नहीं बिद्या का काम।
इनके वालद हो गये पांचो बिद्यमान ॥
नहीं करते हैं नौकरी न किसी का काम।
विद्या का दान करते रटते हैं घनश्याम ॥
सात पिढ़ी से चली बिद्या इनके साथ।
इनका कुल धर्मात्मा जपते हैं रघुनाथ ॥
जगन्नाथ के पुत्र हैं रामजीलाल है नाम।
परोपकारी जीव है नहीं लोभ का काम ॥
छोटी उमर आप भी पहुंचे काशी जाय।
वहाँ जाय बिद्या पढ़ी दिक्षा गुरू की पाय ॥
बेद पढ़ा है आपने किया ब्राह्मण का कर्म।
जो जो लिखा है बेद में पाला वही वही धर्म ॥
पचीस वर्ष के जब हुये जन्म भूमि में आय।
सबही मिलने को चले भाई भाई हिये हर्षाय ॥

जागती ज्योति।

अर्थात् श्रीलक्ष्मीकेन्द्र अगरोहा का समाचार।

अग्रवाल जन्मस्थान की वर्त्तमान दशा।

श्रीप्राण प्रिय दर्शन सत्य निरूपण विराट मूर्त्तये नमोनमः

अथ कल्याणकर्म्मारम्भः।

विदित हो कि सर्वहितकारी सनातन सत्य धर्म्मानुयायी सम्पूर्ण आस्तिक भद्र सौजन्य सुधासागर सर्व्वशिरोमणि पुण्य श्लौकिक परम पवित्र परम धर्मात्मिक परोपकारी गौ ब्रह्मण प्रतिपालक सज्जनों को विदित किया जाता है कि हरियाना कुरुक्षेत्र देशमें सार्वभौम चक्रवर्ती महाराजा अग्रसेन जी की पुरानी राजधानी का मुकाम जिला हिसार तहसील फतेहाबाद रोडपर अगरोहाके नाम से प्रसिद्ध है। नजदीक २ के गांव तथा और शहरों के नाम नीचे लिखते हैं—खांस्या, फ्रांसी, भोडा, जगाण, अग्रावें, कालीरावण, कीली, चिकनवास, नांदड़ी, गोरखपुर, नायला, सिवासी, पावड़ा, बड़ोपलहांसी, हिसार, भिवानी, सिरसा,। अब कुछ फासले पर जो शहर है उनके नाम, नोहर, भादरा, राजगढ़, रामगढ़, चूरू, बिसाउ, फतेहपुर, रोहतक, बेरी इत्यादि शहर और गांव अगरोहें के चारों तरफ हैं अजमेर, अम्बाला' दिल्ली, भटिण्डा, हरियाना, कुरुक्षेत्र मारवाड़ और पञ्जाव के बीच में अगरोहा है प्राचीन समय में यह नगर नामांकित एवं प्रसिद्ध था। आपसके वैर और द्वेष के प्रताप से एक २ से जुदा होकर अन्य २ देशों में तिजारत और व्यापार करने लगे इसके उजड़ने की जो मुख्य बजह है उसे हम अपने मुखसे वर्णन करेंगे। एक समय में महाराजा अग्रसेन खान दान में १७। गोत्र के अग्रवाल महाजनों के सवा लाख घर थे। उन सवालक्ष घरों में प्रायः सबही आसामी मालदार दानी मानी लखपती थे। जिसमें भी कितनी आसामी बावन २ करोड़ तक की थी महाराजा अग्रसेन जी के प्रताप से अग्रवाल कोटिध्वज कहलाते थे उन्ही के प्रताप से आज दिन तक अग्रवाल लोगों को कोटिध्वज कहलाने का गौरव है। प्राचीन समयमें अग्रसेन कुलभूषण मर्य्यादा

यह थी कि दीपमालिका के दिन कुल हिसाब करके बराबर हिस्सा कर लेते थे बाकी रुपया को कोष (भण्डार) में जमा कर देते थे देश देशान्तरों के व्यापारी तिजारत करने के लिये जाते थे उसे एक रुपया और एक ईंट हवेली बनाने के लिये मदद देकर आबाद कर लेते थे वर्त्तमान समयमें वह स्थान शहर अग्रोहा थेह पड़ा है।

आज दिन भी अग्रवंशी अग्रवाल महाजन कौममें लक्ष्मीवान ज्यादा नजर आते हैं हाय! अफसोस है कि तमाम हिन्दुस्थानके तीर्थ और शहरों में धर्म्मशाला, पाठशाला, कुंआ, तालाब, बगीचा, अन्नक्षेत्र, सदावर्तादि लगा रखे हैं। और लगाते ही चले जाते हैं और धर्म्मादे खातेको कौड़ी भी निकालते हैं। परन्तु परम पवित्र, रमणीक सड़कके ऊपर नदीके किनारे अगरोहा स्थान में छोटीसी कुई और बटका पेड़ छोटीसी तिवारी और कुईंके ऊपर डोल, रस्सी अथवा एक मुट्ठी चना भी भूखे लौगोंको नहीं मिलता। अग्रवाल महाजनोंको धर्म्म का निशान जरूर ही बनवाना चाहिये। बतौर यादगार के अगरोहा में पांच सौ छियासठ बीघा पक्की धला बीघे जमीन पड़ी है अग्रवाल कौमकी मालकियत करने लायक है और मिलकियत कुल अग्रवाल महाजनों की समझी जाय और अग्रवालोंके ऊपर ब्रह्मऋषिकुलभूषण ब्रह्मविद्यालय के निमित्त चन्दा एक आना फी आदमी मर्द तथा औरत पिछली रिवाज के मुताबिक जो ईंट जोड़ा और एक रूपये की अगरोहा में थी कायम किया जावे।

चन्दा तो कुछ नहीं भारी सुनियो सुरती धार के
चार पैसे जी के पीछे लाये हैं नर नारि के॥
हिरकत इनमें ना कीजो देदियो बिचार के।
और कुछ ऊपर देना वह काम है दिल दार के॥

बिचार करो और बिचार कर समझलो। समझलेने की बात है बिना समझे कोई नहीं समझा सक्ता। समझाये बिना कोई नहीं

समझ सक्ता। समझ लेनेकी बात हैं जो आदमीके हृदय में होती है उस बात को आदमी जबानसे कुल बयान नहीं कर सकता और जो जबानसे बयान करता है वह हाथसे लिखकर दिखा नहीं सक्ता मतलब यह हुआ कि समझाने और समझनेवाले दोनोंहीं समझदार होना चाहिये हमने बहुत कुछ देखा बहुत कुछ सुना पर अगरोहेमें अग्रसेनके वर्तमान वंशधरों को कीर्ति न देखी न सुनी। इसलिये इस पुस्तक की जरूरत महसूस हुई।

ब्रह्मऋषिकुलभूषण ब्रह्मविद्यालय संस्थापक।
ब्रह्मऋषिकुमार ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी जी के उपदेशानुसार
हिसार में अग्रवालोंकी एक पंचायत हुई और यह विज्ञापन प्रकाशित हुआ।

श्रीप्राण प्रियदर्शन सत्यनिरूपण विराट्मूर्त्तये नमोनमः।
अथ कल्याणकर्मारंभः॥

आज मिती बैसाख कृष्णा चतुर्दशी (१४) सम्वत् १९६५ विक्रमी वार बुधवार तारीख २९ अप्रेल सन् १९०८ ईसवी को हिसार में ब्रह्मऋषि कुमार श्री ब्रह्मानन्दजी महाराजकी प्रेरणासे वैश्य भाइयोंकी पंचायत हुई जिसमें मुख्य निर्णय किया गया कि:—

अगरोहा शहर के स्थान पर जो अब अगरोहा थेह है।
उसकी दुर्दशा दूर कीजावे ॥
उजड़ खेड़ा मुड बसे निर्धनिया धन होय।
गया न जोबन बावड़े, मरया न बावडया कोय ॥

प्राचीनकालमें जैसा अगरोहा धर्मके नामसे प्रसिद्ध और नामांकित था उसको उसी हालतपर लानेकी अत्यन्त आवश्यकता है। यह अगरोहा स्थान जगत् प्रसिद्ध श्रीमान् महाराजाधिराज सार्वभौम छत्रपति गौ ब्राह्मणप्रतिपालक सकल कीर्तिसपंन्न प्रताप नगराधिपति अग्रसेन महाराजकी प्राचीन राजधानी थी और समस्त अग्रवाल वैश्योंका उत्पत्तिस्थान है। उस स्थान पर सकलविश्व महामण्डलके कल्याणार्थ एक ऐसा विद्यालय खोला जावे जिसमें उत्तमोत्तम धार्मिक शिक्षा दी जावे जिससे ब्राह्मणका ब्रह्मत्व क्षत्री का क्षत्रीत्व और वैश्य का वैश्यत्व पुनः प्राप्त हो।

इस बृहद् कार्यके लिये पूर्ण द्रव्यकी आवश्यकता है इसलिये निश्चय किया गया कि एक आना प्रति जन (पुरुष तथा स्त्री) वैश्य अग्रवाल जाति से लिया जावे और जो रुपया इस तरह से एकत्रित हो वह सबका सब फिलहाल मारवाड़ बैंक लिमिटेण्ड हिसार में जमा कराया जावे। देश देशान्तरोंसे इसी प्रकार रुपया बसूल किया जावे। वसूलीके वास्ते नियमानुसार काम किया जायगा और सदर दफ्तर हिसारमें खोला जावे। नगर नगर और ग्राम ग्रामकी वैश्य पंचायत रुपया इकट्ठा करके सदरदफ्तरमें भेजदेवें। यह धन जो एक आनाके हिसबसे जमा होगा यह मूल धन समझा जायगा, इसमेंसे खर्च न होगा सूदसे कार्य चलाया जायगा। फिलहाल इस पञ्चायत की तरफसे दो सेक्रेटरी नियत किये गये हैं। एक श्रीमान् लाला शिवनारायणजी पुत्र लाला सोहनलाल खजांची हिसार। दूसरे बाबू गणेशीलालजी बी० ए० वकील हिसार। इनको अधिकार है कि रुपयेकी रसीद दें और हिसाब रक्खें और उक्त मारवाड़ बैंकमें रुपया जमा करावें और सूदका

हिसाब करके यदि आवश्यकता हो तो सूदको वसुल करें और यह प्रबन्ध उस समय तक रहेगा जब तक कोश पचीस हजार रुपये तक न पहुंच जावे। अथवा जब तक इस कार्यके लिये नियमानुसार सभा न बनाई जावे ॥

श्रीमद्द्विजकुलावतंस ब्रह्मऋषि कुमार ब्रह्मानन्दजी महाराजका ब्रह्मऋषिकुलभूषण ब्रह्मविद्यालय वैसाख सं० १९६४ से अगरोहेमें स्थापित किया हुआ है और उसका काम अच्छे प्रकार चला रहे हैं, उसको चलाते रहें। श्रीमान्से प्रार्थना है कि देश देशान्तरोंमें पर्यटन करके उपदेश करें और परिश्रम करके रुपया इकट्ठा करें ताकि सफलता प्राप्त हो ॥

और हिसारमें इस चंदेके वसूल करने और ब्रह्मऋषिकुलभूषण ब्रह्मविद्यालयमें सब प्रकारकी सहायता देनेके लिये निम्नलिखित सज्जन नियत किये गये हैं।

लाला शिवनारायणजी पुत्र लाला सोहनलालजी खजाञ्ची हिसार, बाबू गणेशीलाल बी० ए० वकील, लाला परशुरामजी अपील नवीस, लाला हणूतरामजी साहूकार, बाबू नियामतसिंहजी, लाला हरनामलजी साहूकार. लाला शोनाथमल अरजीनवीस, लाला रामचन्दर साहूकार, मंगालीवाला सेठ, लाला बालमुकन्न साहूकार लाला मूलचन्दजी साहूकार, लाला गौरिशंकरजी साहूकार, लाला शामलालजी साहूकार, लाला चंदूलालजी साहूकार, लाला रामचन्दर पुत्र, लाला हीरालाल साहूकार, लाला लोचनमल चौधरी, बाबू बाँकेरायजी बी० ए० वकील, लाला जुगलकिशोरजी साहूकार लाला नाथूमलजी साहूकार, लाला विंदरावनजी अपील नवीस, लाला सीतारामजी साहूकार, लाला चिरंजीलालजी साहूकार, लाला हजारीलालजी साहूकार, लाला तुलसीरामजी मालगुजार।

और यह भी निश्चय किया गया कि श्रीब्रह्मानन्दजी महाराजको पञ्चायतकी तर्फसे देशदेशान्तरोंमें उपदेश करनेके लिये प्रतिष्ठापत्र दिया जावे

ह० लाला शिवनारायण सेक्रेटरी, ह० बाबू गणेशीलाल सेक्रेटरी,
आज वैसाख कृष्णा १४ संवत् १९६५ वार बुधवारको हिसार वैश्य पञ्चायतके निर्णयानुसार जो प्रतिष्टा पत्र दिया गया वह यह है।

प्रतिष्ठा-पत्र ।

योग मार्ग प्रवर्त्तक श्री ब्रह्मानन्दजी महाराजको दिया गया ।

आनन्दपूर्वक समस्त भाइयोंकी सविनय प्रार्थना है कि जैसे आपने हिसार में एक अद्वतीय उत्तेजना अग्रवाल जाति को दिलाई है इसी प्रकार देश देशान्तरोंमें हमारे अग्रवाल वैश्य भाइयों को उत्तेजित करते रहें। हम व्यौपार सम्बन्धी सांसारिक कार्योंमें फंसे रहते हैं और सांसारिक चिन्तासे पृथक नहीं हो सकते। यह आप जैसे महात्माओंकाही काम हैं कि हमारी वैश्य जातिका उद्धार करें। जैसे आपने अग्रवाल कल्पवृक्ष मीमांसा करके हमको सुनाई इसीप्रकार जहां जहाँ और अग्रवाल वैश्य भाई निवास करते हों वहां पधारें और उनका हमारा मेल करावें, ताकि हम सब मिल कर अगरोहेकी दुर्दशाका सुधार करें। आपने हम लोगोंसे जो प्रतिज्ञा करवाई है कि, अगरोहें में एक वृहद् विद्यालय समस्त भाइयोंकी तरफ से खोला जावे और एक आना प्रति जन से इकट्ठा किया जावे इसी प्रकार समस्त भाइयों से प्रतिज्ञा करावें और रुपया वैश्य पञ्चायत हिसार के नाम भिजवाकर कृतार्थ करें।

लाला शिवनरायण सेक्रेटरी: गणेशीलाल सेक्रेटरी,
Ganeshi Lal Sacratri (Hisar).

सारे अग्रवाल भाइयों का चरणसेवक हरनामदास बेटा रामजीदासका वासिंदा खास अगरोहा ॥

THE undersigned hereby certify that Pandit Barhamanand Barhamchari Agrcha Humar is passed by the committee of Haryana Dharmada Cowshala Hissar work as director and to inspect all cowshala at every place and note all circumstances to help each other.

Requesting all worker of this party to take trouble and give possible aid to avoid difficulties.

Members, *Secretary,* *President.*
L. Panulal, L. Rampartap. L. Kashiram.
L. Jailal. Retired Stn. Master, Hinur.

इति श्रीविष्णु अग्रसेन वंश पुराणान्तर्गत विचार खण्ड समाप्त ।

Sumer Public Library
JODHPUR.
Sub. No .....
Gen. No.....

* श्रीगणेशाय नमः *

श्रीविष्णु अग्रसेनवंश पुराण

(भूत खण्ड)

अग्रवैश्य वंशोत्पत्ति ।

॥ अथ ध्यानम् ॥

शान्ताकारं भुजग शयनं पद्म नाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघ वर्णं शुभांगं ॥
लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं ।
वन्दे विष्णुं भव भय हरणम् सर्व लोकैक नाथम् ॥ १ ॥

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्वेदैः
साङ्गपद क्रमोषनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न बिदुसुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ २ ॥

ॐ पार्थाय प्रति बोधितां भगवता नारायणे न स्वयं ।
व्यासेन ग्रथितां पुराण मुनिनां मध्ये महाभारतम् ॥
अद्वैतामृत वर्षिणीं भगवती मष्टादशा ध्यायिनीमंब ॥
त्वा मनु सदधामी भगवद्गीते भवद्वेषिणीम् ॥ ३ ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देवः ॥ ४ ॥

॥ मङ्गलाचरण ॥

सत्यानन्द स्वरूपाय बोधैक सुख कारिणे ।
नमो वेदान्त वेदाय गुरुवे बुद्धि साक्षिणे ॥१॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ २ ॥
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ॥ ३ ॥
नगुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः ।
न गुरोरधिकं ज्ञानं तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ४ ॥
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्र मूलं गुरुर्वाक्य मुक्ति मूलं गुरोः कृपाः ॥
यत्रैव गङ्गा यमुना त्रिवेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वतो च ।
सर्वाणि तीर्थानि वसंति यत्र यत्राचुतो द्वार कथा प्रसङ्गः ॥
श्रीअग्रसेन प्रतिपदा अग्रवाल सौभाग्य पद्धति वृत कथा ।

दोहा—

श्रीगणेशको सुमिर कर गुरु पद शीश नवाय ।
जगदम्बा तोकुं भजुं चरण कमल चित लाय ॥

चौ०

चरण कमल चित लाय मात सरस्वती बैठ मुख अन्दर ।
मैं हूं तेरा दास मान ले मम मुख को ही मन्दर ॥
भरो मात भण्डार ज्ञानका ज्यों भर रह्यो समुन्दर ।
हो जगमें परकाश मात मम ज्युं आकाश बिच चन्दर ॥

दौड़—सरे सब कारज मेरा, मात मैं सेवक तेरा
करो हृदय बिच डेरा और जो कुछ मुखसे
वचन कहूं सो सभी सत्य हो मेरा ॥

अथाऽग्रवंशी वैश्योत्पत्ति ।

अग्रवंशं प्रवक्ष्यामि यथाचार्य्यः प्रभाषितम् ॥
वैश्य वंशोद्भवः कश्चिद्धनपाल इति श्रूत्र ॥ १ ॥

अर्थ—अग्रवालोंकी उत्पत्ति कहते है पूर्व आचार्योंने जैसी कही है वैश्य कुलमें उत्पन्न भया हुआ कोई धनपाल नामक वैश्य था ।

बसन्प्रतापनगरे कन्या तस्य बराङ्गना ।
याज्ञबल्क्याय सा दता अष्टौ पुत्रा स्ततोऽभवन् ॥ २ ॥

अर्थ—वह प्रताप नगरमें रहता था उसकूं एक कन्या भई सो याज्ञबल्क्य मुनिको दी और उसके अष्ठपुत्र भये ॥ २ ॥

शिवो नलोऽनिलोनंदःकुन्दः कुमुद एव च ।
बल्लभः शेषरश्चैते ह्यश्च विद्या विशारदाः ॥ ३ ॥

अर्थ – शिव, अनल, अनिल, नंद, कुंद, कुमुद, वल्लभ, शेखर–ये आठ पुत्र अश्व परोक्षा विद्यामें कुशल भये और पृथ्वीका राज्य करते भये ॥३॥

तेभ्यो विशालो नृपतोः स्वकन्या प्रददौमुदा ।
पद्मावतिं मालतिं च क्रांतिं शुभ्रां च भव्यकाम् ॥ ४ ॥

अर्थ—पीछे उन्हीं को विशाल राजाने अपनी आठ कन्याएं दी । मालती कान्ती शुभ्रा व्यभा भवा रजा सुन्दरी ये आठ कन्याओंका क्रम करके विवाह करते भये । और ये आठ स्त्रियां सब अग्रवालोंकी मात्र गण भई ॥४॥

भयां रजां सुन्दरीं च क्रमाद् दवहंश्चते ।
एता श्चाष्टौ मातः काश्च वैश्यानां परिकीर्तिताः ॥ ५ ॥

बल्लभश्च सुतश्चासीद्गु नामा प्रतापवान् ॥
विवाह मकरोत्सोपि माधव्या नाग कन्यया ॥ ६ ॥

अर्थ—बल्लभ नामका जो सातवां पुत्र कहा गया है उसके अग्रनामक

पुत्र भया । सो बड़ा प्रतापी भया उसने माधवी नाग कन्या के साथ विवाह किया ॥ ६ ॥

तत्सं बंधंन चैतेषां सर्वो वै मातूलः स्मृतः ॥
ततोग्रो यमुना तीरे लक्ष्मी माराधयद्यदा ॥ ७ ॥

अर्थ—उसी सम्बन्ध आज तक अग्रवालों में सर्व को मामा कहते हैं पीछे अग्रराजा ने यमुना नदी के तट उपर लक्ष्मी का अराधान किया ॥ ७ ॥

लक्ष्मीः प्रसन्ना प्रैवाच चाग्रसेन नृपंप्रति ॥
तव बंशश्च त्वन्नाम्ना लोके ख्याती गमीष्यति ॥८॥

अर्थ—उस समय लक्ष्मी ने प्रसन्न होके कही कि ऐ अग्र तेरा वंश तेरे नाम से प्रसिद्ध होगा ॥ ८ ॥

युन्मदीयं बंश लध्ये कूल देवी भवाम्यहम् ॥
न दरिद्रो न दीनश्च युन्यमद्वंशे भवि स्यति ॥ ९ ॥

अर्थ—और में तेरे वंश की कुल देवी होती हुं दरिद्री दीन तेरे बंश में कोई नहीं होगा ॥ ९ ॥

इत्युक्तां तर्हिता देवी सोपी राज्य मथाकरोत् ।
स्व नाम्ना नगरं चक्रे पुरोग्र पुरा वसामहं ॥ १० ॥

अर्थ—ऐसो कह कर देवी अंतर ध्यान हुई और राजा अग्रभी राज्य करने लगा और यमुना नदी के तट पर अपने नाम से नगर बसाया जिसको हाल में आगरा कहते हैं ॥ १० ॥

ततो शप्तदश यज्ञाश्च नृप सतमः ॥
अष्ठादशे ऽर्धयज्ञच हिंसा दृष्टा समामितः ॥ ११ ॥

अर्थ पिछै अग्रराजा ने सत्रह यज्ञ किये अठारहवां यज्ञ आधा भया तो इतने में राजा के मनमें आया कि यह हिंसात्मक यज्ञ अब नहीं करना और हमारे बंश में भी आज से मद्य मांस देवी को अर्पण करना नहीं और

आप खाना पिना भी नहीं सात्विकी पुजा उत्सव करना ऐसा कह के वहां से यज्ञ समाप्त किया सो ॥ ११ ॥

तावं त्येवच गौत्राणी जातानि तस्य वंशके ।
एषां पुरोहिता गौड़ब्राह्मण एव केवलम् ॥१२॥

अर्थ—साढ़े सत्रह यज्ञ भये इस लिये उनके साढ़ेसत्रह गौत्र भये सो गोत्रों के नाम कहते है १ गर्ग २ गोइल ३ ग्वाल ४ वात्सम ५ कासील ६ सिंहल ७ मंगल ८ भट्टल ९ तिंगल १० ऐरण ११ टैरन १२ टींगण १३ तितल १४ मितल १५ तुंदिल १६ तायल १७ गोमिल १७॥ गवन आध गोत्र हैं और इनके पुरोंहित गौड़ ब्राह्मण जनना ॥ १२ ॥

वैश्य कर्मरता ह्येते वेदाध्ययन तत्पराः ॥
ततः कलो जैन धर्म बलेन वैश्य सत्तमा ॥ १३ ॥

अर्थ—इनका धर्म वैश्य वर्ग का है वेदाध्ययन दान पुजन करना परन्तु कलियुग में जैन धर्म की प्रवलता से कितने ॥ १३ ॥

वैंश्यधर्म परित्यज्य जैन मार्गरतास्तथा ।
म्लेछ राज्य वशे नैप धर्म भ्रष्टा स्तथापरे ॥१४॥

अर्थ—अपना वैश्य बर्णाश्रम धर्म छोड़ के जैन धर्म में मिल गये है उनके बाद मलेच्छों का राज्य भया उससे तो यज्ञोपवितादिक तोड़ कर धर्म भ्रष्ट बहुत हो गये ॥ १४ ॥

देशं देशं गतास्सर्वे नाना चार परायणाः ।
जातास्ते चाग्र वंशी या स्तोतेषाँ मुक्तं चरित्र श्रम् ॥ १५ ॥

अर्थ—देश देशान्तरोंमें चले गये नाना प्रकार के अपने इच्छित आचार पालन करने लगे । यह ज्ञाति पूर्व में पुरबिया नाम से मारवाड़में मारवाड़ी गुजरात में और अनेक देशों में प्रसिद्ध है ऐसे जो अग्रवाले भये उनका चरित्र मेनें कहा ॥ १५ ॥

॥ ब्राह्मणोत्पती मार्तण्ड ॥ प्रकरणः ५६ ॥ पृष्ठ ५८१ ॥

दोहा—

गणपति गुरुको सुमिर के चरनन चित्त लगाई।
अम्ब माता सरस्वती वन्दो शीश नवाई॥ १॥
कृष्ण राधिका इष्ट मम प्रणवों शीश नवाई।
भव बाधा का सुमन कर करते सदा सहाई॥ २॥
अग्रवालके वंशका लिखता हूं कुछ हाल।
जगत जननि श्री शारदा मोपर होहु दयाल॥ ३॥
त्रेतायुगके अन्तमें मानधाता भये भूप।
सूर्य्यवंशको वंश यह पावन परम अनूप॥ ४॥
प्रगट हुए श्रीराम जहां पूर्ण परमानन्द।
इसी वंशका हाल कुछ लिखता हूं सानन्द॥
बासुदेव ब्रह्माण्ड पति ब्रजजनके रखवार।
विश्वम्भर पावन विमल बालकृष्ण करतार॥ ६॥
सूर्य्यवंशकी पुश्त ग्यारवीं मानधाताने जन्म लिया।
शीशविन्द राजाके पुत्रीसे उनने जाकर सम्बन्ध किया॥ ७॥
इन्दुमती था नाम उसीका तीन पुत्र उपजाये थे।
परी केश उर अम्बरीषको उरमचकुन्द कहाये थे॥ ८॥
परीकेश राजाके कुलमें श्रीरामचन्द्रका जन्म हुआ।
काल अम्बरिषसे श्रापित थे मचकुन्दका नहीं वंश हुआ॥ ९॥
अम्बरीष राजाके कुलमें वैश्य वंश उत्पन्न हुआ।
इस राजाके वंशजका यह चरित्र पवित्र प्रकाश हुआ॥ १०॥
दक्षिण दिशिके राजेश्वर ये अम्बरीष कहलाते थे।
इन्हीं राज राजेश्वरने रजधानी यहां बनाये थे॥११॥
वो नगरी मशहूर यहां चन्द्रावती नामसे विदित हुई।
दूजीका अमरावती नाम जो अब तक जगमें विदित हुई॥
इस राजाकी ग्यारवीं पीढ़ीमें राजा ब्रह्मसेन ने जनम लिया।

जिन राज किया निज प्रजा पाल और पुत्र प्रकाशको राज दिया १३
अपने सुतको राज सौंप तप हित वनको गमन किया।
राजा प्रकाशकी एक बीस २१ पीढ़ी राजामैन हुआ॥ १४॥
यह शूर वीर और महा प्रतापी क्षत्रीकुलमें विदित हुआ।
और सूर्यवंश सावित करनेका यहां मैंने कुछ नोट दिया॥
(नोट सूर्य्यवंशका होना)

दोहा—

नोट सूर्य्यवंश होने का देता हूं इस वक्त।
साक्षी सूर्य्यबंश की सूर्य्य भरत है सक्त॥

राजेश्वरके इतिहासिक पण्डित गौरीशङ्कर थे।
और शास्त्री हिराचन्द रचित से ज्ञात हुआ कुल शर्म्मा थे॥१॥
अम्बरीष राजाकी नगरी दोनों कुछ कुछ अन्तर थी।
रजधानी अमरावती थी और चन्द्रावती नजदीक ही थी॥ २॥
राजपुताना मालवा रेलवे आबूरोड इस्टेशन है।
चार मील दक्षिण दिशि देखो इसीका नाम जङ्कशन है॥३॥
दुर दुरसे इस नगरीके टूटे खँडहर नजर करो।
इसकी समृधि की साक्षीमें मन्दिरोंके नकशे नजर करो॥४॥
इधर उधर कुछ ढेर पड़े हैं सङ्गमूसा संगमरमरके।
द्वार बने हुए पत्थरके मूर्तियां बनी संगमरमरके॥५॥
उठा उठाकर कई लोगोंने दुजे स्थानोंमें रख दी।
इस नगरीकी सुन्दरताका इसी नमूनाको रख दी॥६॥
आबूरोड स्टेशनसे उत्तर दो मील निहारो तो।
विष्णु मन्दिर है रिषीकेशमें राजाका इसे विचारो तो॥७॥
रिषीकेशसे आध मील पर दक्षिणमें राज सिरोही है।
इसी राजकी देहातोंमें कई मूर्तियां सूर्य्य की है॥ ८॥

इस प्रमाणसे मान लेवो तुम यहां राज सूर्यकुलका ।
अब और साक्षी क्या मैं दूँ बस यही यादगार सूर्य्यकुलका ॥
दोहा—अब लिखता हूं मैनका सच्चा हाल हवाल ।
सो पढ़कर सज्जन सभी समझ लेवो ततकाल ॥

छन्द ।

राजा मैंनने सप्तदीपको विजय कर लिया कुछ दिनमें ।
राज सुता सतवन्तीसे इन व्याह किया था कुछ दिनमें ॥१॥
इस राजा से ग्यारवीं पुश्तमें राजा श्याम हुए जानो ।
यह कृष्णभक्त और दयावान थे श्रुति नीतिज्ञ इन्हे मानो ॥२॥

दोहा ।

एक समय महाराजने मृगयाका सज साज ।
अस्त्र शस्त्र बहु विधि लिये संगमें बदिरी बाज ॥

छन्द—

बनके अन्दर राजा सनमुख एक भैंसा मस्त दिवाना था ।
मानो सहोदर भैंसासुर का मदोमत्त गुर्राना था ॥ १ ॥
राजाने देखा इस पशु को वनमें उतपात करता होगा ।
छोटे छोटे सब जीवोंको यह नित कलेश देता होगा ॥ २ ॥
इसका वध गर मैं कर डारूँ तो इसमें दोष नहीं मुझको ।
इसके मरनेसे अन्य जीव रक्षाका पुन्न मिले मुझको ॥ ३ ॥
ऐसा विचार कर राजाने एक ऐसा तीर चलाया था ।
जिसके लगनेसे यह विशाल पशुने निज प्राण गमाया था ॥ ४ ॥
उस भैंसाके शवके नीचे खरगोश एक दब गया सुनो ।
जिससे राजा शोकाकुल हो मनमें सङ्कल्प किया सो सुनो ॥ ५ ॥
यह निरपराधी जीव न जो इस जगहसे जीवत निकलेगा ।
तो लौट न जाऊं रजधानी को मेरा भी प्राण इत निकलेगा ॥६॥

दोहा—

इस अवसर में विप्र दो आये थे तत्काल ।
राजा और खरगोशका देखा उनने हाल ॥ १ ॥

छन्द ।

राजासे विप्र कहें दोनों महाराज न मनमें सोच करो ।
यह जीव सजीव निकलता है तुम ईश्वर का ही ध्यान धरो ॥ १ ॥
जब लोथ हटाई राजाने तब जीता ही खरगोश कढ़ा ।
तब धन्यवाद ईश्वर को दे और दिल में अति आनन्द बढ़ा ॥ २ ॥
यदि वंश फुटना होयेगी तो किला अचल समझो राजा ।
बस इसी जगहसे राज काज परबन्ध चलाना तुम राजा ॥३॥
और नगर बसा कर यहा रहो तो विष्णु शम्भुके दर्श मिले ।
और फतेह तुम्हारी होवेगी और तुमको कुछ बरदान मिले ॥४॥
राजाने डेरा डाल दिया और तब शुद्ध मुहूर्त्त शुधवाई थी ।
फागुण बदी पांचो शनिवारको नग्र नींव डलवाई थी ॥ ५॥
तब मन प्रसन्न कर राजाने इस जां पर नगर बसाया था ।
इस नगरीका अरण नाम राजा ने तुरन्त रखाया था ॥ ६ ॥
राजा श्यामकी अठाई पुश्तमें राज महोधर जन्म लिया ।
तब बहुत खुशी विप्रन को दक्षिणा देकर अति सन्तुष्ट किया ॥७॥
दोहा—गद्दी महीधर को दई अंगदिवि गये तप हेत ।
अब आगेका हाल जो सुना सो लिखकर देत ॥१॥

छन्द—

राज महीधर की तैयारी मृगया करने इक बार हुई ।
नगरीसे निकले वन जानेको मनमें घटना अजब हुई ॥१॥
राजाकी सहसा नजर गई जहां द्विज कन्या स्नान करे ।
थी अपने अट्टाके ऊपर और बेपरदा सब काम करे ॥२॥
देखा कन्याने राजा को तब मनमें गुस्सा खाया है ।

तब श्राप दिया राजाको नहीं विचार कुछ आया है ।। ३ ।।
राजा तेरी मुक्ति नहीं होगी पिण्ड गयाके देनेमें ।
मत करना ऐसा अब विचार तू द्विज कन्याके बारेमें ।।४।।
राजाने जोड़े हाथ और थर्राता उसका श्राप सुना ।
मैं बेगुनाह हूं द्विज पुत्री कुछ श्राप अनुग्रह जरा सुना ।।५।।
तब हो दयाल पुत्री बोली राजा न गया में मुक्ति मिले ।
पर लोहागढ़में पिण्डदान तै राजा तुझको मुक्ती मिले ।। ६ ।।
तब हाथ जोड़ कन्याकी और चरननको शीश नवाया था ।
फिर लौट चला रजधानीको नहीं मृगया मन को भाया था ।। ७ ।।
तब बरज दिया था राजाने कोई मेरे पुत्रसे न हाल कहै ।
इस मन्शा पापका दण्ड सोच कर अपने दिलमें चुपचाप रहै ।। ८।।
राजा महीधरके एक पुत्र और एक पुत्रीका जन्म हुआ ।
पुत्रीका नाम कमोदी था पुत्रके नाम करणका समय हुआ ।।९।।
राजाने पुत्रका नाम रखा यह अग्रसेन है इस कुल का ।
तब अग्रसेन ही राजाने निज वंश चलाया था कुल का ।। १० ।।
कुछ दिनमें राय महीधर ने सुरपुर को गमन किया जानो ।
तब अग्रसेन ने अपने पितु की गया विचारी सो जानो ।। ११ ।।
जब पिण्ड गयामें देने को राजाने सज प्रस्थान किया ।
निज पितुको दूँ मुक्ती प्रदान यह दिलमें ही अरमान किया ।।१२।।
लोक वेद अनुसार पिताके अर्थ ही यज्ञ रचाया था ।
पिण्डदानके लिये गया से हाथ न बाहर आया था ।।१३।।
राजा दिलमें शोकाकुल हो अपना अपराध बिचारा था
और तीन दिवस तक निराहार रह पितु से सबब पुकारा था ।। १४
सुत दशा देख कर महीधर ने राजा को स्वप्न दिया तत्क्षण ।
हे पुत्र श्राप है द्विज कन्या का यह सब हाल कहा ततक्षण ।। १५
अब द्विज कन्या श्रापके बस होकर में पिन्ड ग्रहण नहीं कर सक्ता ।

और निज मुक्ती का भेद पुत्र में तुझको बतला हूं सक्ता ।।१६ ।।
तुम यज्ञ रचो लोहागढ में यहां पिन्ड दान मुझको देना ।
तब मुक्ती मेरी हो जायेगी यह अपने चित्त समझ लेना ।। १७ ।।
अग्रसेन राजा ने तबही लोहागढ़ में यज्ञ किया ।
तब राजाने निज कर निकालकर पुत्र पिन्डको ग्रहण किया ।।१८।।
राजा लौटा लोहागढ़ से रस्ते में जंगल घना मिला ।
इस जंगल के बीच राज को एक करीलका वृक्ष मिला ।।१९।।
उस करीलकी ओटमें एक सिंघनी बच्चा जनती थी ।
तब उसी बृक्ष के निचे सै राजा की सवारी निकली थी ।। २० ।।
सिंघनी का बच्चा निकल तब हाथी मस्तक पर आया था ।
और थाप मारकर गजमस्तक पर अपना प्राण गँवाया था ।।२१।।
तब क्रोधित होकर यही सिंघनी राजा सम्मुख यों बोली ।
मेरे कारजमें विघ्न डाल राजा तेरी मत क्यों डोली ।। २२ ।।
मैं बारह वर्ष में एक बार राजा जी बच्चा जनती हूं ।
अब मुझे निपुत्री कर डाला उसका बदला मैं देती हूं ।। २३ ।।
अब मैं देती हूं श्राप तुझे तूं भी बेपुत्र कहावेगा ।
अब मैं वनको जाती राजा तूं भी दिलमें शरमावेगा ।।

दोहा—जब राजाने यह लखा बच्चेका सब हाल ।
तब पण्डित बुलवायकर प्रश्न किया ततकाल ।। १ ।।

छन्द—

आश्चर्य युक्त राजा बोला इस बच्चेका साहस देखो ।
मेरे हाथीके मस्तक पर इसने थप्पड़ मारा देखो ।। १ ।।
इसका सब भेद कहो पण्डित उसमें कुछ भेद लखाता है ।
जो इस बच्चेने काम किया सो कौतुक मुझे लखाता है ।।२।।
तब पण्डित बोले उस जां पर इस भूमिका गुण है राजा ।
यदि यहां किला बनवाओगे तो हो अटूट सुन लो राजा ।।३।।

दोहा—

अग्रोहा इस नगर का राजाने रख नाम ।
अपनी राजधानी बना यहां किया बिश्राम ॥
इसी समय श्रीरामने जनम लिया था आन ।
और जनकपुर को गये कौशिक संग भगवान ।

छन्द—धनुषयज्ञके अवसरमें जब रामचन्द्रने धनु तोड़ा ।
देश देशके राजाओंका सभामें जाकर मुंह मोड़ा ॥१॥
तब शब्द सुनत भृगुनन्दनजीने चलनेकी तैयारी की ।
मार्गमें अग्रोहा नगर मिला और राजासे कुछ बातें की ॥२॥
बात बात में बतबढ़ हो तब राजासे अति क्रोध किया ।
राजा होगा तूं पुत्रहीन भृगुनन्दनने यह श्राप दिया ॥३॥

दोहा—

इसी नगरके व्याजमें देता हूं एक नोट ।
अग्रोहाकी गीरदमें कुवा बावड़ी कोट ॥

छन्द ।

यह नगर भीटण्डा निकट बसा दिल्लीसे एकसौ तेरा मील पश्चिममें ।
असल अग्रोहा तो अब उजड़ है पर नीचे गांव है पूर्व में ॥१॥
नगरीमें निशां बने अब भी उस झाड करील जमाने का ।
वृक्षके समीप एक चौकोर चौतरा* बना हुआ है जमाने का ।
मन्दिर महलोंके चिन्ह आजतक नजर सभीके आते है ।
अग्रवालके बहुत लोग यात्रा करनेको जाते हैं ।
वहाँ दिनमें ही घुमा करते और रात्री अन्य बिताते हैं ।
रात्रीको रहना श्राप सती का कविवर यही बताते हैं ॥४॥

* यह चबूतरा वृक्षादी की जगह डोलर टीबा (रिसालू खेड़ा) के नामसे प्रख्यात है । यह बात राजा रिसालू सती सींला महत्ता शाह हरभज शाहके जमानेकी है ।

और बहुत ग्रंथन से ऐसा विदित हुया राजाका हाल ।
तीर्थयात्रा ये करके श्री काशीजी पहुंचे तत्काल ॥५॥
तीर्थ कपिल धारा ऊपर ही इनने यज्ञ रचाया था
विप्रन को बहु दान दक्षिणा दे सन्तुष्ट कराया था ॥ ६ ॥
तब शिवने इन पर हो प्रसन्न यह वरदान सुनाया था ।
तूं कर उपासना लक्ष्मीकी सब सिद्ध मनोर्थ बताया था ॥ ७ ॥
राजाने यमुना तट ऊपर श्री लक्ष्मीजी का तप कीना ।
तब हो प्रसन्न श्री लक्ष्मीजीने राजाको यह वर वहाँ दीना ॥ ८ ॥
वंश वृद्ध होगा तेरा राजा तेरा कुल अचल रहै ।
नाम तेरा विख्यात रहै राजा तेरा यश अचल रहै ॥९॥
मैं तेरी कुल देवी होकर तेरी हरवक्त सहाय करूँ ।
अन्न धन और कुल वृद्धीकी तेरी हर वक्त सहाय करूँ ॥१०॥
मेरा भी तुं उत्सव करना जब कार्तिक बदी अमावस हो ।
पूजन करना रोशनी करना और कागज बस्ता नूतन हो ॥११॥

दोहा—

तब राजाने नगरमें मन्दिर एक बनाये ।
लक्ष्मीकी मुरत वहां दी अग्रोहा पधराये ॥१॥

छन्द—

इस राजकी सीमा भाई कुछ नजर न कम दरसाती है ।
सीमा उत्तर की तरफ हिमालय तक भाई दरसाती है ॥१॥
लम्बा चौड़ा यह देश बसा पूर्व दक्षिण श्रीगङ्गाजी ।
पश्चिम सीमा में मारवाड़ का देश समझ दरभङ्गा जी ॥२॥
पञ्जाब देशसे आगरे तक के इसने मुलक फतेह कीन्हें ।
और इसी मुलकके अन्दर ही सब अपना कुटुम्ब बसा दीन्हें ॥
अग्रवालके रहनेका मैं अब सब देश गिनाता हूं ।
सब विधिवार लिखकर भाई इस कोष्टक अन्दर लाता हूं ॥४॥

कोष्टक ।

दिल्ली आगरा मेरठ भी गुड़गांवा आप सरनाम सुनो ।
रोहतास हांसी हिसार भी पानीपत सरनाम सुनो ॥१॥
लाहौर ग्राम और कोट कांगड़ा गढ़वाल और नाभा जानो ।
नारनोल अग्रोहा भी इन सबसे ऊंचा तुम मानो ॥२॥
वैश्य वंशके पावन करता क्या मनुष्य कुछ और न थे ।
श्वेत नामक एक वैश्य धन्द भी कोइ कारण वश श्रापित थे ॥३॥
किसी देवता के श्रापसे वंश नहीं चला आगे ।
तब लोप हो गया वैश्य धर्म फिर अग्रसेन ही चला आगे ॥४॥

अधर्मस्य विनाशाये धर्म्माचारार्थ मेव च ।
अनादि निधनो देव करोति स्थिति पालनं ॥
यदा यदाहि धर्म्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्म्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम् ।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ २ ॥
अग्रणी ग्रामणी श्रीमान् न्यायो नेता समीरण ।
सहस्र मूर्द्धा विस्वात्मा सहस्राक्ष सहस्रपात् ॥

दोहा—

अग्रवालका वंश इक और क्षत्री की जात ।
छत्र चँवर के ही हुए अधिकारी विख्यात ॥१॥
कौशिक मुनीके वंशके कौशिक गौड़ प्रमाण ।
अग्रवालही के गुरु जानत सकल जहान ॥१॥

छन्द—

विदित कमौदीका रहस्य जो हमने ऊपर छोड़ दिया ।
सब सज्जन गण क्षमा करेंगे मैंने अब यहां जोड़ दिया ॥१॥

राजा अग्रसेनकी बहन कमौदीकी व्याख्या ।

छन्द —

अग्रसेनकी एक बहिन थी जिसका नाम कमौदी था ।
यह सूर्य्य पुरीके सूर्य्य भानको राय महीधरने व्याही थी ॥१॥
बहन कमौदी का लड़का यह जसराज कहलाता था ।
पर बालकाल्यही से इसने श्री हरिका ध्यान लगाया था ॥ २ ॥
यह लड़का तो लड़का ही था तबसे इसने गृह त्याग दिया ।
कंका पर्वतके ऊपर ही जप तप कर आनन्द किया ॥ ३ ॥

राजा अग्रसेनकी व्याख्या ।

अग्रसेनका अब कछुक लिखता हूं सम्बाद ।
जो आगे छुटा हुआ सज्जन करना याद ॥१॥
परसरामने दिया था राजाको जो श्राप ।
अग्रसेनको तभी से हुआ अधिक सन्ताप ॥ २ ॥

छन्द ।

सम्मति ले पण्डित लोगनकी और राज्य प्रबन्ध करा करके ।
तप करन हेत कानन जाकर श्रीकृष्ण चरन हिरदे धरके ॥१॥
बारह वर्ष तपस्या कर फिर कौशिक मुनिसे भेंट हुई ।
राजर्षि तपस्या ऐसी लख तब राजापर कृपा हुई ॥ २ ॥

दोहा—

कौशिक मुनिने तब कहा राजाको समझाय ।
होवेगी सन्तान तूं करना एक उपाय ॥

छन्द ।

यह क्षत्रिय धर्म्म तुं त्याग करे और वैश्य धर्म्म अखत्यार करे ।
सन्तत सन्तान अवश्य हुए श्रीराधाकृष्ण सहाय करैं ॥१ ॥
राजाने हर्षित हो करके तब वैश्य धर्म्म मञ्जूर किया ।
पर वचन कहे थे कौशिक से इस कदर धर्म्म मञ्जूर किया ॥२॥

मैं छत्र चँवर नहीं त्यागूंगा तब ऋषिने यह मञ्जूर किहा।
अग्रसेनके गुप्त बननेकी यह सब बात मञ्जूर किया ॥ ३॥
बिश्वामित्र कु गुरु बनाकर तब राजा महलन आये।
कुछ काल बितने के ऊपर राजा ने नव पुत्र पाये ॥४॥
राजाने अति उत्सव से संस्कार कराया लड़कों का।
गुरुओंको दणिणा देकर के चित्तसार बिठाया लड़कों का ॥५॥
संस्कारसे होता कर्म शुद्ध धनकी शुद्धता धर्म्म करो।
यह सोच समझ कर राजा जी दीवानस बोले धर्म्म करो ॥६॥
राजाने जन्म समयके सब मंगलाचरन करवाये।
और विप्र पण्डितोंको बुला सनमान दान करवाये ॥७॥

दोहा।

नौ पुत्रका यज्ञ किया वेद विदित सब कर्म।
आगे इसका लिख दिया कोष्ठक और सब धर्म ॥१॥

अग्रवाल बंशके गोत्र वेद शाखा प्रवर सूत्र लिखता हूं।

परन्तु सूत्र छन्दसे अलग है (यह गोत्र है)

गोत्र	वेद	शाखा	प्रवर	सूत्र
गर्ग	यजुर्वेदी	माधुनी	पाँच	कात्यायनी
गोइल	यजर्वेदी	माधुनी	तीन	कात्यायनी
कच्छल	श्यामवेदी	कोसमी	तीन	कौमाल
मंगल	ऋगवेदी	साकल्य	तीन	असुसाई
बिंदल	यजुर्वेदी	माधुनी	तीन	कात्यायनी
ढालन	यजुर्वेदी	माधुनी	तीन	कात्यायनी

नागिल	श्यामवेदी	कौथूमी	तीन	गोभिल
जिंदल	यजुर्वेदी	माध्यंदिनी	तीन	कात्यायनी
मीतल	यजुर्वेदी	माध्यंदिनी	तीन	कात्यायनी

इस कदर गोत्र और वेद हुए शाखा सूत्रके नौ घर हैं।

कोष्ठक का कोष्ठक हुआ और छन्द लोजो बांच।
कृष्णदास कवि लिखत है नहीं सांच को आँच ॥
यहाँ नौ पुत्रका गोत्र शाखा सूत्र समाप्त।

नोट यह नौ गोत्र राज्य वंशी कहलाये हैं। इस लेखक ने राजवंशी और नागवंशी गोत्र ही १७॥ में से अलग अलग लिखे हैं परन्तु इस समय देखा यह नहीं जाता। देखनेमें इस प्रकार आता है कि उसी गोत्र के अग्रवाल कहीं राजवंशी कहलाते हैं और उसी गोत्रके नागवंशी देखा गया है। परन्तु इस लेखकका लेख भी बहुत पुराना है इसलिये मैं लिखता हूं।

नागवंशी राजाओंकी व्याख्या।

दोहा।

नाग वंशियोंका यहां लिखता हूं कुछ हाल।
जिसको पढ़कर समझकर सज्जन होत निहाल ॥१॥

छन्द।

इस नगरी के नाग बंश में दो भाई कहलाते थे।
बड़ेका नाम विशानन था और अनन्त देव कहलाते थे ॥१॥
छोटेका नाम दशानन था वे परम प्रीतसे रहते थे।
और राज काज सब दत्तचित्त से दोनों भाई करते थे ॥२॥
थी अनन्त देवके सत्तरा कन्या और जब ये वर योग्थ हुई।
तब राजाने पण्डित बुलवा कर उनसे यही सलाह हुई ॥ ३ ॥

जिस राजा के हों सत्तरा पुत्र इन कन्यनको वरो उधर।
तुम तिलक चढ़ाकर खबर देव फिर सब कन्यन को बरो उधर ॥४॥
राजाकी ऐसी आज्ञा पा तब विप्रन ने कूंच किया।
फिर दूर दूर स्थानों में जा विप्रन ने अति खोज किया ॥५॥
अनेक राज स्थानोंमें जा जतन किया था विप्रों ने।
पर वर ना मिले थे श्रम करने पर बहु दिवस बिताये विप्रोंने ॥६॥
ब्राह्मणोंने बहुत भयातुर हो यह सङ्कल्प हृदयमें रख छोड़ा।
जब तक न मिलेंगे वर कन्यनको हमने भी अनजल छोड़ा ॥७॥
यह सोच विचार किया उनने वे तब अग्रोहा पहुंचे थे।
राजा से भेंट हुई जबहीं तब हीं मतलबको पहुंचे थे ॥ ८ ॥

दोहा—

विधीवार सब कह दिया विप्रनने निज भेद।
तब राजाके हृदय में पहुंचा था अति खेद ॥
यहां आज कैसा हुआ मेरे द्वार अनर्थ।
अतिथि बिना भोजन किये जाते हैं वे अर्थ ॥२॥

लन्द—

किसी कदर इनकी चिन्ता को यदि मैं दूर नहीं करता।
तो विप्र बिना भोजन किन्हें जाते हैं यहि सोच करता ॥१॥
विप्रनको तब धीरज देकर राजाने उनको वचन दिया।
मेरे घरमें सत्तरा लड़के शुभ तिलक चढ़ा दो वचन दिया।
तब बहुत खुशी हो विप्रन ने राजाके घरमें भोजन किन्हा।
राजाने भी सोच समझ कर सब विप्रनको भोजन दिन्हा ॥३॥
तब राजाने मनमें विचारा।
अब झूठ बोलने पर ही ये विप्र श्राप मुझको देंगे।
इससे पहले अपघात करूं फिर विप्रन मुझको देखेंगे ॥१॥
इस कदर सोच राजा अपने महलोंके अन्दर पहुंचा था ॥

और आत्मघात करनेका ही उद्योग हृदयमें रच रहा था ॥२॥
तब उसी वक्त इक विप्र रूपसे विष्णु भगवान प्रकट हुए।
और मधुर वचन से यों बोले राजा तुम क्यों तैयार हुए ॥३॥
राजाने ब्राह्मण ही जाना तब यह वचन उचारी है।
मैंने तुमरा प्रण भंग किया अब प्रायश्चित ही की तैय्यारी है ॥४॥
क्योंकि यथार्थमें विप्रो नही सत्रह लड़के रखता हूं।
अब झूठ बोलकर निज मनमें मैं भी आपसे डरता हूं ॥५॥
तब विष्णु भगवान ने दरशन दे राजासे ऐसे वचन कहें।
तुम बुला लेव निज रानी को सब सफल कामना वचन कहे ॥४॥

दोहा—

तब राजाको विष्णु ने दीन्हें लड़के आठ।
राजा रानो की सभी चिन्ता दीन्हीं काट ॥१॥
अब इनके गोत्रका करता यहां बयान।
कृष्णदास पर अब कृपा कर दे श्री भगवान ॥ २ ॥
कोष्टकके अन्दर लिखो गोत्र नाम और वेद।
शाखा सूत्र विचारना प्रवर ही का भेद ॥३॥

गोत्र	वेद	शाखा	प्रवर	सूत्र
तुङ्गल	यजुर्वेदी	माध्यांदिनी	तीन	कात्यायनी
कांसल	यजुर्वेदी	माध्यांदिनी	तीन	कात्यायनी
ताइल	यजुर्वेदी	माध्यांदिनी	तीन	कात्यायनी
बांशल	श्यामवेदी	कौथूमी	पाँच	गोभिल
नागिल	श्यामवेदी	कौथूमी	तीन	असलाइन
मुद्गल	ऋग्वेदी	साकल्य	तीन	असलाइन
ढेलन	यजुर्वेदी	माध्यांदिनी	तीन	कात्यायनी
गोइन	यजुर्वेदी	माध्यांदिनी	तीन	कात्यायनी

इस प्रकार १७ गोत्र हुए।

यहाँ इस लेखकने नागवंशी और राजवंशी गोत्र अलग २ दिये हैं परन्तु अग्रसेन वंश पूराणमें नागवंशी और राज वंसी कन्यायों तथा सन्तानोका विवरण इस प्रकार दिया है उसका समस्त नकशा यहां उद्धृत किया जाता है। सो पाठक विचारलें।

नागवंशीय कन्याओंके साथ नाम उन पुत्र कन्याओंके जिसके साथ जिसका व्याह हुआ।

नाम राजकुमारोंके		नाम नागवंशीय राजा बिशाननकी कन्याओं के	
१	पुष्पदेव	१	बनिहावन्ती
२	गेंदूमल	२	तम्बूलवन्ती
३	करणचन्द	३	गोसवन्ती
४	मणीपाल	४	विष्णु देवी
५	बृन्द देव	५	बाला देवी
६	ढावण देव	६	कुमार देवी
७	सिन्धुपति	७	अबला देवी
८	जैत्र संघ	८	हीरा देवी
९	मन्त्रपति	९	गोविन्दो देवी
१०	तम्बोल कर्ण	१०	रावन्ती देवी
११	ताराचन्द	११	लडवन्ती देवी
१२	वीरभान	१२	सुमन देवी
१३	वासुदेव	१३	गोमती देवी
१४	नारसेन	१४	आशावन्ती
१५	अमृतसेन	१५	अमरावन्ती

१६	इन्द्रमल	१६	केशवी देवी
१७	माध्वसेन	१७	नौरङ्गी देवी
१८	गौधर	१८	माधौ देवी

नाम उन राजोंके जिनकी कन्या जिस देशसे व्याही गई।

नाम पुत्रों के	नाम राजवंशीय रानियों के	नाम नगर	नाम राजोंका
पुष्पदेव	पोषनन्दा	सङ्कलद्वीप	सावधान
गेंदूमल	चम्पावती	गरुड़ रोत	चन्द्रसेन
कर्ण चन्द	सिधवती	मांडोगढ़	सिंधुराज
मणीपाल	मनसावती	दर्य्या उमा	बाहुक
वृन्ददेव	आशावती	मनौखन्ड	मनोध्वज
द्रावणदेव	हरसेनी	बरदानपुरी	रकसेन
सिन्धुपती	बसन्ती	लालनगर	ज्वालासेन
जैत्रजंघ	शमावती	रङ्गपुर	समाध्वज
मन्त्रपती	अमरादेवी	उज्जैन	अमरसेन
तम्बोल कर्ण	गोविन्दी	तारागढ़	गोविन्दसेन
ताराचन्द	नौरङ्गी देवी	सरवरगढ़	माधोसेन
वीरभान	चन्द्रादेवी	पूर्णवास	विजयचन्द
वासुदेव	फूलन देवी	बहरामपुर	जनतसेन
नारसेन	शीलवती	सिंधपुर	मनोसेन
अमृतसेन	माधोवती	दानापुर	इन्द्रसेन
इन्द्रमल	लोकनन्दा	भीमपुर	लोकनिधि
माध्वसन	वृजमोहनी	तिरुवन्तपुर	ब्रजभान
गौधर	तारावती	हेरम्बगढ़	सिन्धरमल

उन पुत्र और कन्याओं के नाम जों नागवंशोय तथा राजवंशीय रानियों से उत्पन्न हुये।

नाम पुत्रों के	नाम रानियों के	नाम पुत्रों के	नाम कन्यों के
पुष्पदेव	रानी पोपदन्दा	अस्तामल, सुमामल	प्रेमी, पारोदेवी
उर्फ	राजवंशी	प्रभामल, नोमीमल	पूमावन्ती, गंगोदेवी
गुलाबदेव	रानी बनिहावती	अन्तामन, तनूर	प्रेमदेवी, पारावती
	नागवंशी	हरिभामल, शोभामल	ज्ञानवती, गंगकुमारी
गेन्दूमल	रानी चम्पावती	पारास्वि, खदास्वि	नमवन्ती, मधवन्ती
	राजवंशी	नुमासा, उमास्वि	नारायनी, अर्धौवती
	रानी तम्बूलवती	वासश्व, खाराश्व	नमोवन्ती, वेदवन्ती
	नागवंशी	रामाश्व, तपेश्व	नरैनीदेवी
कर्णचन्द	रानी सिधवती	सिंधपति	विद्यावन्ती
	राजवंशी		
	रानी गोसवन्ती	दग्धाश्व, बेधाश्व	जमनीदेवी, खेमादेवी
	नागवंशी		

मणीपाल	रानी मनसावती	चेळादास. मौरामळ	मंगलावती
	राजवंशी		
	रानी विश्नदेवी	जलधाश्व, मरधाश्व	भागयवन्ती, भादवन्ती
	नागवंशी		
बृन्ददेव	रानी आसावती	घेवामल, सूरभान,	तारावती
	राजवंशी	दारामल	
	रानी वालादेवी	पाराश्व, मन्दराश्व	जोगवंती, गुरवन्ती
	नागवंशी	ताराश्व	धनवन्ती
द्रावनदेव	रानी हरसेनी	झालामल	इद्रावती
	राजवंशी		
	रानी कुमार देवी	किशोरसेन, निरजनंसेन	हेमवन्ती, होमवन्ती
	नागवंशी	अमरसैन	केलावन्ती
सिन्धुपतो	रानी बसन्ती	निसामल	नरसी देवो
	राजवंशीय		
	रानी अमलादेवी	हिमालस्व, गोर्धस्व	नमोवन्ती, सरसुती
	नागवंशीवे	विधवास्व	लाजवन्ती

जैत्रजंघ	रानी सामावती	सूमामल, सुढामल	श्यामदेवी, सुन्दरी देवी
	राजवंशी		श्यानीदेवी
	रानी हीरादेवी	चन्द्रसेन, चरनसेन	चम्पादेवी, चौंखादेवी
	नागवंशी	योगनाश्रव	चढ़वन्तीदेवी
मंत्रपती	रानी अमरावती	स्विदास	बानीवंती
	राजवंशी		
	रानी गोविन्दी देवी	छोनाश्रव चौखाश्रव	जोगवन्ती जमनावंती
	नागवंशी	छजाश्रव	चूरावन्ती
तम्बोलकर्ण	रानी गोविंदी	प्रथूमल द्योसीमल	ज्ञानदेवी गुमानदेवी
	राजवंशी		
	रानी रावबन्तीदेवी	जमलास्वि तोमरस्वि	नकवन्ती कोमवन्ती
	नागवंशी	टोड़ास्वि	टेढ़ावन्ती
ताराचन्द	रानी नोरंगदेवी	अरदलमल धूमल	डलवन्ती
	राजवंशी		
	रानी लडवन्तीदेवी	बिरधामल डूंगरमल	मानवन्ती मूंगादेवी
	नागवंशी	हरकूशन	तानवंती

बीरभान	रानी चन्दादेवी	जीतसिंह	प्रमावन्ती
	राजवंशी		
	रानी सूमनदेवी	पोकरस्वि मारगधस्वि	फलवन्ती कूलवन्ती
	नागवशी	जटाजास्वि	मूलवन्ती
बासदेव	रानी फूलनदेवी	सीतामल	शिवदेवी
	राजवंशी		
	रानी गोमती देवी	बारासेन	आभावती
	नागवंशी		
नारसेन	रानी शीलवती	गोयनादामल	खुनलदेवी
	राजवंशी		
	रानी आसावती	भरत प्रसाद, भोजराज	सरूपादेवी, श्यामादेवी
	नागवंशी	भीमास्व	सुलनदेवी
अमृतसेन	रानी माधवती	नूलामल, सहबामल	बालादेवी
	राजवंशी		
	रानी अहरावती	अमूखास्व, अमरास्व	तमखादेवी, तिरखादेवी
	नागवंशी		

नाम पुत्रों के	गोत्र असल	गोत्र गलत	वेद	शाखा	सूत्र	प्रवर
पुष्पदेव	गर्ग	गरग	यजुर	मांध्यादिनी	कात्यायन	५
गेंदूमल	गौभिल	गोइन	"	"	"	३
कर्णचन्द	कश्यप	कंछल	श्याम	कौथुमी	गौभिल	३
मणीपाल	कौशिक	कासिल	यजुर	मांध्यादिनी	कात्यायन	३
बृन्ददेव	वशिष्ठ	बिन्दल	"	"	"	३
द्रावक देव	धौम्य	टेलण	"	"	"	३
सिन्धुपती	शाण्डिल्य	सिंघल	श्याम	कौथुमी	गौतम	३
जैत्र जंघ	जैमिनि	जीतल	यजुर	मांध्यादिनी	कात्यायन	३
मंत्र पती	मैत्रेय	मीतल	"	"	"	३
तम्बोल कर्ण	तांडव	तिंगल	"	"	"	३
ताराचन्द	तैत्तिरेय	ताइल	कृष्णा यजुर	आपस्तव	कात्यायन	३
बीरभान	वत्स	बांसल	शाम यजुर	कौथुमी	गोभिल	३

इन्द्रमल	रानी लोकनन्दा राजवंशी	सेवामल	सामवन्ती
	रानी केश्वादेवी नागवंशी	राधेश्व, रामास्व अस्वास्व	पेमवन्ती, रूपवन्ती अहरावन्ती
माधवसेन	रानी वृजमोहनी राजवंशी	जैंसामल, छजूमल	जसोदादेवी
	रानी नौरङ्गदेवी नागवँशी	उमादेव, भूमदेव	भूमावन्ती, प्रेमवन्ती
गोधर	रानी तारावती राजवशी	सुमामल, दीथामल	चम्पावती, चम्पादेवी
	रानी माधौदेवी नागवंशी	ईश्वराज, हसदेव सुखराज	अम्बादेवी, इलावती

बासुदेव	धान्यास	टेरन	यजुर	मांध्यादिनी	कात्यायन	३
नारसेन	नागेन्द्र	नागिल	शाम	कौथुमी	गोभिल	३
अमृतसेन	मांडव्य	मंगल	यजुर	साकल्य	आश्वलायन	३
इन्द्रमल	और्व	येरन	यजुर	मांध्यादिनो	कात्यायन	३
माधवसेन	मुद्गल	मधुकल	यजुर	साकल्य	आश्वलायन	३
गौधर	गौतम	गोइन	यजुर	मांध्यादिनी	कात्यायन	३

योगमाग प्रवर्तक
ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी

ब्रह्मचर्य्यकों साधिके ज्ञानी हुये प्रवोण। उमर वर्ष पचीसकी मानो करके यकीन ॥

प्रवर पूत्रों कै नम्बरवार ।

५—गर्ग, अंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज, शौनक ।
३—गोभिल, असित, देवल ।
३—कश्यप, असित देवल ।
३—कौशिक, देवराज, अवयर्षण ।
३— वशिष्ठ चव्यन आप्रवान ।
३—धौम्य, दात्तायण, अंगिरस ।
३—शांडिल, असित देवल ।
३—जैमिनि, वेतहव्य, सावेदास ।
३—मैत्रेय रैभ्य, आवत्सार ।
३—तांडव, दर्दुर, जमदग्नि ।
३—तैत्तिरेय, दिग्पाल, गोपाण ।
५—वत्स, च्यवन, और्व, अत्यवान, जमदग्नि ।
३—अगस्ति, दातृव्य, धारणस् ।
३—नागेन्द्र, शंख, पाल ।
३—मांडव्य, च्यवन' आप्रवान, ।
३—भार्गव, च्यवन, आप्रवान, ।
३—मुद्गल, अंगिरस, भार्म्यश्व ।
३—गौतम, अंगिरस, वार्हस्पत्य ।

नोट-प्रिय भ्रातृगण संकल्प करते समय गौत्र के उपरांत में उक्त प्रवर अवश्य अपने २ उच्चारण कीजिये ।

दोहा—

इस कदर जब हो गई राजाके सन्तान।
तब फिर राजाने करा शादी का सामान ॥१॥
जब सब द्विज वर हो गये भोजन से सन्तुष्ठ।
तब कुंवरन को देख कर हुए अधिक सन्तुष्ठ ॥ २ ॥
सब कुंवरनको तिलकका चढ़वाया सामान।
तब राजा ने द्विजन को दिया बहुत सा दान ॥३॥
फिर राजासे हो विदा पहुंचे निज स्थान।
अनन्त देवसे सब किया विवरे वार ब्यान ॥४॥

छन्द।

इक वक्त पार्वतीजी शिवके सङ्ग किसी जगहको जाती है।
रस्ते में बोली नाथ सुनो आगे अग्रोहा नगरी आती है ॥१॥
इस नगर का राजा अग्रसेन जो बड़ा भक्त आपका है।
इसके हैं सत्रा पुत्र कि जिनमें आठ विष्णुके दीन्हें हैं ॥२॥
अब हमको भी उचित जान पड़ता कि एक आपसे अर्ज करूं।
कि एक पुत्र दे अपने भक्तको क्यों न उसका दिल शाद करूं ॥३॥
जो सत्रा पुत्रोंके मुकाबिल वीर और ऐश्वर्यवान भी हो।
तब शिवने सुन मञ्जूर किया और कहा कि अब ऐसा ही हो ॥४॥
फिर शिवा और शिवजी दोनों नगरी अग्रोहा आये थे।
अग्रसेन राजाने देखकर शिवको शीश नवाये थे ॥५॥
तब शिवजी ने निज शक्तिसे इक पुत्र दिया था राजा को।
यह सत्रह पुत्रों की समसर का यह समझाया राजा को ॥६॥
इस लड़के का तुम नाम रखना राजाजी कोहशङ्कर।
इतना कह अन्तध्यान हुए कैलाश पहुंच गये श्री शङ्कर ॥७॥
शिवजी ने जाते वक्त दिया था राजाको एक महा बरदान।
जब किसी वक्त सङ्कट आये तब रखना उस ओर मेरा ध्यान ॥८॥

तब हम सहायता तेरी में राजा हरवक्त रहे आये।
अब तुम सुखपूर्व्वक राज करो नहीं विघ्न कभी नेरे आये ॥९॥

दोहा—

राजा दिलमें सोचता शिवका दीना पूत।
ये सबसे ज्यादा बली और होगा मजबूत ॥१॥
यदि यह चाहै तो कर सके सत्रों का संहार।
महादेवजी का दिया है यह सुत तर्रार ॥२॥

छन्द—

तब राजा अपनी रानीको सब पुत्रों सहित बुलाता है।
उस कोहशङ्कर के सन्मुख जाकर उनको शीश नवाता है ॥१॥
बोला कि आप प्रतापो है तुम हमरे आजसे पूज्य हुए।
पूज्य पुरोहित तो तुमही हम तुमरे सब यजमान हुए २
और हमरी रक्षा का करना यह तुम्हारा करतव्य रहै ॥
और इन पुत्रनपर कृपा दृष्टि रखना तुमरा करतव्य रहै ॥ ३ ॥
उसी रोजसे आज तलक यह चली प्रणाली आती है।
कोह शंकरके ही बंशजको सब अधिकार पुरोहित है ॥ ४ ॥
इसी बंशजके बिप्र कसैनियां गौड़ ब्राह्मण कहलाते हैं।
अब अग्रवंश यजमानोके ये पुरोहित कहलाते हैं ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

राजाके सब कुंवर अब हुये होसियार।
अहि नगरीके ब्याहको राजा हुये तैयार ॥

॥ छद ॥

कीना प्रस्थान बरातनने धूमधाम के साथ चले।
अही नगरी जब जा पहुचे तब अनन्त देव मिलनेको चले ।१।

राजा अनन्त देवकी रानीने पिछे एक कन्या प्रगटाई ।
यह खबर अठारह कन्यनकी तब अग्रसेनको जतलाई ॥ २ ॥
अनन्त देवने अग्रसेन को तोरनके समय कहला भेजा ।
गर पुत्र अठारह होयेगें तो शादी होगी कहला भैजा ॥ ३ ॥
यह बात सुनी जब राजाने तब मन ही मन अतिदुखी हुये ।
प्रस्थान किया जब काननको दस्सराजसे मिलकर सुखी हुये ॥ ४ ॥
यह बहन कमोदोका सुत था जो पूर्व प्रसंग ब्यान किया ।
अग्रसेनका भनैज जो तप कर जोग प्रसिद्ध किया ॥ ५ ॥
मामाका सुनकर समाचार फिर धीरज उन्हें बंधाया था ।
राजाके बडे पुत्रकीं तब श्री दस्सराज बुलवाया था ॥ ६ ॥
गुलाब देवको बुलवाकर राजाने सन्मुख खडा किया ।
तब निज शक्तीसे एक पुत्र कखरीमें से उतपन्त किया ॥ ७ ॥
गुलाब देवकी कखरीसे जब पुत्र प्रगट कीना मुनिने ।
इसका ही नाम गवन होगा और आधा गोत्रकहा मुनिने ॥ ८ ॥
राजासे बोले मुनिवरजी यह आधा गोत्र कहेगातुं ।
तो सन्तान चले इसको और अन्ततक सुखी होगातुं ॥ ९ ॥
इस आधे गोत्रके मीलकर ही सब साढे सत्राह गोत्र हुये ।
फिर राजाने बहु यज्ञ किये यज्ञोके मालिक गोत्र हुये ॥ १० ॥
गवन गोत्रकी यह उत्पती अब गर्गगोत्रसे हुई सुनो ।
इसका सम्बन्ध सब गोत्रोंसे मुनिने यह बात कही सो सुनो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

अब राजा खुस हो हृदय-अहि नगरीको जाय ।
रायविशाननसे कहा अपना प्रण सभजाय ॥ १ ॥

राजा मेरा प्रण सुनो, पुत्र अठारह लेव ।
एक पुत्रको दो सुता, यह तुम वर कर देव ॥ २ ॥
तो विवाह मन्जुर है, वरना जाता देश ।
गर तुम ऐसा नहीं करो, तो तुम्हरा चरित्र भदेश ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥

यह शोच विशानन विसमित हो तब भ्रात दशानन बोल दिया ।
इस भ्राताके भी सुता अठारहो तब उनने यह मत्ता किया ॥ १ ॥
इन पुत्रनको हम दो दो पुत्री क्यों नहीं विवाह करा देवे ।
तब दो दो कन्या पुत्रनको एक एक का विवाह रचा देवे ॥ २ ॥
एक कन्या राजा अनन्तदेव की और एक सुता दशानन की ।
एक एक पुत्रनको वर दी-पुत्री विशानन और दशानन की ॥ ३ ॥
राजा अनन्तदेव की रानीने सब कन्यनको सीख दई ।
हिल मिल रहना तुम सब बहिनों हो पुत्रवती आशीश देई ॥ ४ ॥
राजा हर्षित हो अग्रोहा आया पुत्रन की शादीकर ।
फिर राज लगा अपना करने और नगरी कुछ आबादीकर ॥ ५ ॥
कुछ समय बाद सन्तान हुई दशानन की कन्यायोंसे ।
छब्बीस पुत्र छब्बीस ही पुत्री प्रगटाई कन्यायों से ॥ ६ ॥
पर राय विशानन की पुत्रिनसे नहीं लड़कोने जन्म लिया ।
इन पुत्रीयोंने तो नाग चोलोंसे अपना दिल आनन्द किया ॥ ७ ॥
अग्रसेनने जब देखाकी यह सन्तान न जन्मेगी ।
तब दुखी हुआ राजा दिलमें यह किस कदर सुत जन्मेंगी ॥ ८ ॥
तब रायने सोचा था दिलमें जसराज से अब मिलना चहिये ।
यह सन्तान न होनेकी कुछ उपाय करना चहिये ॥ ९ ॥
यह विचारकर राजाने तब ही काननको गमन किया ।
कंका पहाड़के उपर ही जसराजसे बार्तालाप किया ॥ १० ॥
सब दुख राजाका सुनकरके तब मुनिको अधिक दया आई है

राजा ब्योरेवार हकीकत मुनिको सभी सुनाई है ॥ ११ ॥
मुनिने तब कीन्हो प्रतिज्ञा हे राजा में काम करूं तेरा ।
तुम अग्रोहा कुं लोट जावमें सब कुछ काम करूं तेरा ॥ १२ ॥
यह सुन राजा रजधानीको वापिस आकरके राज किया ।
उस वक्त मुनिने सोच समझ अहि नगरीको प्रस्थान किया ॥ १३ ॥
यहां पहुचकर मुनिजी ने नगरी बाहर आसनमारी ।
अपने तपो बलके प्रभावसे पत्थर बर्षाकर दी जारी ॥ १४ ॥
धूल और पत्थरकी बर्षा अधिक हुई अहि नगरोमें ।
मुनिका आश्रम सिर्फ छोडकर बर्षा हुई सब नगरीमें ॥ १५ ॥
अब हुई प्रजामें अधिक खलबलो राय विशानन घबराया ।
तब महल छोडकर राय विशानन मुनिजीके आश्रम आया ॥ १६ ॥
और हाथ जोडकर यों बोला मुनिजो मुझपर क्यों क्रोध किया ।
इस दीन प्रजाके उपर तुमने क्यों इतना अन्याय किया ॥ १७ ॥
तब मुनि बोले हे राजाजो अन्यायोसे अन्याय उचित ।
अग्रसेनके साथ आपने कैसा अन्याय किया अनुचित ॥ १८ ॥
उसके पुत्रनके साथ आपने नाग कन्यनका ब्याह किया ।
जो मग्न उसी चोलोमें है यह काम न तुमने नेक किया ॥ १९ ॥
अब जरा सोचिये तो राजा उनसे क्या आस करी जाये ।
सन्तान होने हित सुनो भूप सब शादी ब्याह रचे जाये ॥ २० ॥
गर कुछ नहीं उपाय तूं बतलाता तो तेरो नगरी भस्म करूं ।
तेरी क्या गिनती है राजा जमो आसमां एक करूं ॥ २१ ॥
यह सुनकर राजा अति चिन्तीत मुनिके चरणों तर आया ।
अब नाथ कृपा करना मुझपर और दीन प्रजा पर हो दाया ॥२२॥
उन कन्यनके तो यही चोले है सदैवसे इसी कदर ।
मेरी सामर्थ क्या चोलोको जो प्रथक कर सकुं किसी कदर ॥२३॥
पर एक उपाय बताताहुं गर ईश्वरको मंजुर हुवा ।

गर कृपा विष्णु की होवेगी तो मुनिजी कारज सिद्ध हुवा ॥ २ ॥
श्रावण सुदी पंचमी को कन्या तालाब पर जाती हैं ।
उधर अपने चोलन कुं रख फिर स्नान कराती हैं ॥ २७ ॥
फिर बम्बी पूजनके हित बनको सबी सुता उत जावेंगी ।
तब मुनि उन चोलोंको मंगवाकर जरा बिलम्ब न पावेंगी ॥ २८ ॥
गर कोई पुरुष भी चोलोके संग आप दग्ध हो जावेगा ।
बस यह उपाय बतलाता हुं सब काम सिद्ध हो जावेगा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

जसराजने जब कहा राजा से सब हाल ।
तब राजा कहने लगा समझ सोच तत्काल ॥ १ ॥
श्रावण सुदी पांचे हुई उसी समय में आय ।
तब राजा बीडा रखा सभा मध्य में जाय ॥ २ ॥

॥ छन्द ॥

है कोई ऐसा बीर बली जो चोलोके संग जल जावे ।
मेरी मनसा पूर्ण करके और जगमें नाम कमा जावे ॥ १ ॥
इतना सुनकर सब सन्न हुये और सभामें कोई नहीं बोला ।
किस को थे अपने प्राणन प्रिये जो दग्ध होय लेकर चोला ॥ २ ॥
तब जसराज जी ने अपने दिलमें मनसूबा बांध लिया ।
यह कार्य न राजाका होगा मुझको समझगें कपट किया ॥ ३ ॥
तब जसराज चोले लेकरके दग्ध होगये ये तत्क्षन ।
पता लगा जब कन्यन को राजा ढिग पहुचो थो उसीक्षण ॥ ४ ॥
हे राजा आप देवेंगी हम अब इसको स्वीकार करो ।
तब राजा उनसे हाथ जोड़ बोला तुम पुत्री माफ करो ॥ ५ ॥
केवल सन्तान तुम्हारे ही होने हित हमने काम किया ।
मैं निरपराधी हुं पुत्रियों तुमरे हित यह काम किया ॥ ६ ॥
यह बिनय रायकी सुन करके तब कन्या दिलमें सान्तहुई ।

फिर अग्रसेन से यों बोली राजा हम अब सब सान्त हुई ॥ ७ ॥
जो कुछ होना था हुया आज अब क्रोध से न कुछ काम चले।
अब कुछ उपाय ऐसा बतलावो जो इन चोलोका नाम चले ॥ ८ ॥
बंश आपके में राजा तुम यह परिपाटी बाँध चलो।
फिर राजाने स्विकार किया औरे फरमाया यह काम भलो ॥ ९ ॥
में अपने बंशमें आज ही से यह परिपाटी रखता बाई।
व्याह समय पर बर कन्या दोनों यह रीत सदा रखना भाई ॥१०॥
सिरपर मुहरी चुन्दरी पहले यह बर कन्या दोनों रखना।
मुहरी नाग शरीरोंका चुन्दड़ी कांचली चीन्ह रखना ॥ ११ ॥
कन्या अपने नन्हारे का चीरा फेरन में पहरेगी।
चोले का बिगडा शब्द यही चीराको मनमें समझेगी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

राय बिशानन की सुता अपने महलन माँह।
अपनी बहनोको तुरन्त क्रोधित हो पकड़ो बांह ॥ १ ॥
हमरे संग तूमने उचित नहीं कीना है मैन।
हमरा तुमरे संग अब नहीं बने सुख चैन ॥ २ ॥

यह सुनकर राय दशानन की पुत्रियोंने यों उत्तर दीन्हा।
हमने अपने सब पतियोंका अपमान न हमने कभी कीन्हा ॥ १ ॥
गर करें निरादर हम पतियों का तो हमरा पति धर्म नसै।
और प्रितीं परस्पर रखने की माता की आज्ञा सभी नसै ॥ २ ॥
तुम तो सर्पाकार रही इसका क्यां फल तुमने पाया।
थी भूल तुम्हारी ही बहनों तुमने न नफा इसमें क्या पाया ॥ ३ ॥
अब हाथ जोडती हम तुमसे अब हमरा दोष क्षमा करना।
हम छोटी बहनें है तुमरी हमरा अपराध न चित्त धरना ॥ ४ ॥
इस कदर प्रीतसे नरम बचन सब राज पुत्रियोंने बोले थे।
पर राय बिशानन की पुत्री कुछ सान्त बचन नहीं बोले थे ॥ ५ ॥

इसका परिणाम हुवा ऐसा के द्वेष भाव दोनोंमें हुवा।
तब प्रथक २ ही हुये कार्य सब ऐसा उनका सब काम हुवा ॥६॥
प्रथक प्रथक ही व्याह काज जबसे अबतक ही होते है।
कूछ भेदन इसमें लेश मात्र सब इक दादे के पोते है ॥ ७॥
राय बिशानन के वंशज थे सो बीसा कहलाते है।
और दशानन के वंशज ही दसा नाम से कहलाते है ॥ ८ ॥

दोहा—

राजा अग्रसेन को हुवा जरा अब होस।
बहिन कमौदोकी तरफ जरा किया अफसोस ॥ १ ॥
बहिन अगर ऐसा सुनै के भाई ने सुत मेरा।
सन्तानोंके मोह बस दग्ध किया सुत मेरा ॥ २ ॥

छन्द—

श्रापितकर मेरे कुल को और मुझे कलंकी समझेगी।
यह एक उपाय हो सक्ता है तो मुझे निश कलंक समझेगी ॥ १ ॥
यह सोच समझ कर याद हुई कि शिवजीने बर मुझको दीना।
संकटके अवसर पर मेरा तुम पुजा ध्यान अवश्य करना ॥ २ ॥
जब शिवजी का ध्यान किया तब प्रगट हुये भोलेबाबा ;
सब व्यथा पूछकर राजाकी तब श्रीमुखसे बोले बाबा ॥ ३ ॥
उस भस्मीके ढैर उन्नीस करो राजा को ऐसा हुक्म दिया।
ढेर आखीरी के उपर बाबाने अमृत छिड़क दिया ॥ ४ ॥
तब जसराज हो पुर्नजीव राजा से शिवजी यो बोले।
तेरे हित इसने अपना तप सब नष्ट किया भोला बोले ॥ ५ ॥
अब तुम इसका प्रतिपाल करो और यह भी कहीं न जायेगा।
इसको भभूतिया भाट बनाकर तुमेसे पूजा पायेगा ॥ ६ ॥
दोहा—उसी रोजसे आज तक बने भभूतिया भाट।
अग्रवालके वंशमें इनका उंचा ठाट ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

अब राय विशाननकी कन्यन की भी सन्ताने प्रगट हुई।
बावन पूत्र और बावन पुत्री ये सब इकसो चार हुई ॥ १ ॥
इनको सन्ताने अग्रवालके नामसे जगमें विख्यात हुई।
और राय दशाननकी सन्ताने आदि अग्रवालसे विदित हुई ॥ २ ॥
कुछ समय बादमें राजाकी सन्ताने सब बडी हुई।
तब व्याह करनकी अति चिन्ता राजा के दिलमें अवश्य हुई ॥३॥
राजा सोचे इनकी शादी गर क्षत्रीकुलमें कर डारूं।
तो वैश्य धर्म्म न सजायेगा मं मुनि कौशिक से सदा डरूं ॥ ४ ॥
जै सन्ताने मुनि ही की जब वैश्य धर्म्म अख्तयार किया।
गर क्षत्री कुलमें ब्याह हुवा तो अपना धर्म्म बिनाश किया ॥ ५ ॥
ऐसा न करूंगा हरगिज में अब विश्वामित्र सरन जाता।
जो कुछ भी गुरु आ ज्ञा देगें फिर वही मान वापिस आता ॥ ६ ॥
फिर राजा गुरुके आश्रममें कुछ दिन में पहुचे थे उतही।
राजाने विनय सुना करके तब फिर शादीकी बात कही।
राजाके ऐसे बचनोको सुन करके तब हुक्म गुरु देते।
गोत्र बचाकर तूम आपसमें क्यों नहीं व्याह रचा देते ॥ ८ ॥
आदी सृष्टीके पहले ब्रह्माने इक जोड़ा उपजाये थे।
बहिन भाई थे पर आपस में स्त्री पुरुष कहाये थे ॥ ९ ॥
इससे ही सृष्टिकी उत्पत्ति थी राजा तुमको क्या दोष लगे।
गोत्र बचाकरके शादी करने का नहीं कुछ दोष लगे ॥ १० ॥
फिर राजा नगरी आकर निज पुत्रन को हूक्म दिया।
अपने अपने तुम गोत्र बचाकर सब आपस में व्याह किया ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इसी कदर होने लगा सब इनका व्यवहार।
दिन प्रति दित कुल वृध्यकी चर्चा हुई अपार ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

कई पिढीके बाद इसी कुलमें ही राजा नंद हुये।
उस प्रथा पुरानी आबादीके करता धरता नन्द हुये ॥ १ ॥
बिस्तार नगर और आबादी का इसी कदर समझा जाता।
ब्राह्मण क्षत्री आदिक जातें सब इसीं कदर समझा जाता ॥ २ ॥
इसके अतिरिक्त अग्रवालोंके घरोकी अब गिनती सुनलो।
एक लाख पचीस हजार हुये थे तब कुछ द्वेश जमा सुनलो ॥ ३ ॥
आदि अग्रवालोका मुखिया अमृत सैन गिना जाता।
और अग्रवालोका मुखिया राय नन्द माना जाता ॥ ४ ॥
इन दो मुखीयनके अन्दर ही यह चाचा नन्द कहाता था।
इसी कदर जैठा होने से राजा यही कहा जाता था ॥ ५ ॥
इसी वक्त युनानी बादशाह जिसे सिकन्दर कहते थे ॥
यह भारत खंड के उपर ही चढ़ने का इरादा करते थे ॥५॥
बादशाह ने कुछ दिनमें कई मुल्क सर किया जरा सुनो।
अग्रोहा के निकट एक बस्ती बस वाई जरा सुनो ॥ ६ ॥
नाम इसी नगरी का रखा सिरसा नाम शाह ने था।
अग्रोहा के अग्रवंश को बसने को फरमाया था ॥ ७ ॥
ऐसा करने से सिरसा की यह आबादी हो जावेगी।
तो अग्रवाल के मुखियों को कूछ कूछ अलकाव हो जायेगी ॥ ८ ॥
तब अग्रवाल के मुखियो ने उत बसने से इनकार किया।
तब विरोध होने की जड़को उसी वक्त मजबूत किया ॥ ९ ॥
फिर बादशाह ने कई दफा अग्रोहा पर धावा बोला।
हर वक्त हार ही होती थी तब शाह सभामें यों बोला ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

बीड़ा रख कर तब कहा शाहंशाह पुकार।
अग्रोहा की फूटका करता कोई करार ॥ १ ॥

अगर सफल हो काममें बीड़ा लेवे आन।
खिलत और जागीर से हो उसका सनमान ॥ २ ॥

॥ छन्द ॥

फिर एक पत्र लिख बादशाह ने दूत बुलाकर सौंपा था।
और फूट डालनेका कारज बश इसी दूतको सौंपा था ॥ १ ॥
यह पहूंच कर अग्रोहा को राजासे मुजरा जाय किया।
और बादशाह का पत्र सौंपकर सब अपना इजहार किया ॥ २ ॥
राजा हम शरमिन्दा हो और मेल आपसे चाहते हैं।
अगर आपका हुक्म मिले तो आपसे मिलना चाहते हैं ॥ ३ ॥
इस आशयका पत्र जब कुंवर इन्द्रसैन के हाथ पड़ा।
फिर पत्र खोलकर राय नन्दने शाहंशाह का लिखा पड़ा ॥ ४ ॥
तब कुंवर और राजा दोनो सब सेनापती भाइयों को।
बुलवाकर सभामध्य बैठे फिर पत्र सुनाया भाईयो को ॥ ५ ॥
बाद पत्र पढ जानेके फिर काशिद के आने का सबब कहा।
क्या रायें आपकी है भाईयों और मेल जोलका सबब कहा ॥ ६ ॥
तब क्रोधित होकर वीरोंने काशिद पर तीव्र नजर डाली।
हम कायर है नहीं क्षत्री है हम मेल मिलापसे है खाली ॥ ७ ॥
गर राजा और कुंवर साहिब को करना मेल मुनासिब हैं।
तब वही शाहसे मेल करे हमको तो युध्य मुनासिब है ॥ ८ ॥
फिर दूत उधरसे खिसका था और शाह के तंबुवन पहूच गया।
तब कौर निशान बजा करके बोला के पत्र पहुच गया ॥ ९ ॥
पर अग्रवाल की सेनामें कोई ऐसा नजर नहीं आता।
जिसको कि भूजावोंका घमंड नहीं ऐसा नजर नहीं आता ॥ १० ॥
अब शाह इरादा छोड दिजीये मेल मिलाप करानेका।
अब अग्रवालके वीरोंका तुम मान बढावो घरानेका ॥ ११ ॥

दोहा—मजलिश शाहंशाहकी तैपाई यह बात।
रतन सैनसे जायकर सबे कही कुशलात ॥ १ ॥
अमृतसैन और नन्दको जाहिर होयन बात।
रतन सैनसे यों कहों शाह बुलाया प्रात ॥ २ ॥

छन्द—रतनसैन और गोकुल चन्द आदि अग्रवाले मुखिया।
उस सभामें थे नहीं हाजिर ये जब दूत पठाया था खूफिया ॥ १ ॥
ये द्वेश भाव ही रखते थे राय नन्द और अमृत से।
यह मौका शाहको खुब मिला यह जाहिर हो गया अमृतसे ॥ २ ॥
रतनसैन और गोकुलचन्द गांव बहत्तरके मुखिया।
गांव बहत्तर के सुवां सब इनका हुकम सुनैं खुपिया ॥ ३ ॥

दोहा—होनहार होनी प्रबल जानत सकल जहांन।
होनी होकर ही रहत कर्म रेख परमान ॥ १ ॥
अनहोनी होनी नहीं होनी हो सो होय।
लाख यतन कोटि उपाय कर देखो सब कोय ॥
होनहार हृदय बसै बिसरि जाय सब बुद्धि।
जैसी जिसकी होतव्यता तसी उपजै बुद्धि ॥
सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ ॥
ककई रानीको लखी होनी ने भराय।
श्रीरामचन्द्र को ही दिया बनमें तूरंत पठाय ॥ २ ॥
राजा नल हरिश्चन्द्र को देखिये आप।
कष्ट उठाये किस कदर सहे बहुत सन्ताप ॥ ३ ॥

छन्द यह होनी एक रोज कभी भी अग्रवंश के उपरही।
यह रिपु कुल्हाड़ेको रखकर पड़ी अग्रकुल उपर ही ॥ १ ॥
आह समय में तेरी सुध क्यों कर ही भूल न सक्ताहुं।
या उच्च चन्द्रमा अग्रवंशका या अब फूट बताता हुं ॥ २ ॥
हां द्वारपाल नहीं तेरा दोश सब दोष हमारे मस्तक का।
जो भाग अग्रकुल काही था सो मिट नहीं सक्ता मस्तकका ॥ ३ ॥

उपर चढ़ते चढ़ते यारो जब कलसा तक पहुचाता है
तब फिर नीचे को ही देखो उस पुरुष को आना पड़ता है ॥ ४ ॥
देखो सूरज किस तरह तेज हो मध्य दिवस तक जाता है।
मध्य दिवस के बाद फिर यह निचेको फिर आता है ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मौका दूत विचार कर रतनसैनसे जाय।
साह पत्रका हाल सब व्योरे वार सुनाय ॥ १ ॥
फिर बोला कि शाहने किया आपको याद।
मिलिये शाहं शाहसे तुमसे कुछ फरियाद ॥ २ ॥

॥ छन्द ॥

रतनसैन क्रोधित हो कर कासीदको बचन सुनाते हैं।
तु चल चला जा महलों से नहीं तेरा शीश कटाते हैं ॥ १ ॥
अरे मूर्ख तु निज कुटुम्बमें फूट डालनी चाहता है।
हमको पराजित करा करके और शाही कुशल मनाता है ॥ २ ॥
हमरे भाई जो इन्द्रसैन और अमृतसैन से मिलना तुं।
ये जो कुछ ही आज्ञादेवे उसको कबूल ही करना तुं ॥ ३ ॥
अरे दुष्ट हमारे भ्राता वो जिनके बिगाड़ की बात करे।
बस नजर सामने से हट जा हमसे फिर न कुछ बात करे ॥ ४ ॥
दूत निराश होकर लौटा रसतेमें गोकुलचन्द्र मिला।
फिर कारन पूछा आनेका और पूछ पाछ कर लिया मिला ॥ ५ ॥
दूत चाहता था जैसा तैसा उसको एक दोस्त मिला।
यह बोला भाई धीरज धर में रतनसैन को दुंगा मिला ॥ ६ ॥
दूत अपने फरज को कुछ सफली भूत समझता था।
पर साफ साफ ही कहने को गोकुलचन्द्र से सरमाता था ॥ ७ ॥
पर उसने इतना कह दीना यदि राजन काम संभल जावे।
तो शाहं शाह हमारा है वोह हंसकर गले तुम्हे लावे ॥ ८ ॥

और मान आपका करे यहाँ तक अग्रोहा का भूप करे।
दीगर मुल्क अनेक आपके नजराने में शाह करे ॥ ९ ॥
जब सब भाई इन्द्रसैन आपके अनुचर हो जांयेगे।
तब खुश दिलमें होकर गोकल हम शाह समीप पधारेंगे ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

गोकुलचन्द्रने इक सभा कीनी थी इक बार।
बहत्तर अपने भ्रातृ गण सब कीन्है तैयार ॥ १ ॥
रतनसैन के पास जब गोकुल पहुचें जांय।
शाहं शाही सब कथा ब्योरेवार सुनाय ॥ २ ॥
रतनसैन ने सुनत ही प्रथम किया इनकार।
फिर गोकुलकी राहसे करना पड़ा करार ॥ ३ ॥
गोकुलचन्द्रने शाह हित रतन किये तैयार।
किंतु बहत्तर भ्रात की है सम्मत दरकार ॥ ४ ॥

॥ छन्द ॥

फिर उनमे सें उनतीस भाई सब रतनसैन के साथ हुये।
पर तेतालीस भाई चलने से इनकार हुये ॥ १ ॥
जब अर्ध रात्रीका समय हुवा तब गोकुल ओर भ्रात सिगरे।
शाहं शाहके तम्बुको करके सलाह सब डिगरे ॥ २ ॥
और दूत साथ में था भाई नगरीके द्वार पर पहुचे थे।
फिर द्वारपाल को धोखा देकर बात बनाकर कहते थे ॥ ३ ॥
तूं द्वार खोल दे हे भाई सैनापर छापा मारेंगे।
इस वक्त सभी सोते होंगे हम अपना काम बनायेंगे ॥ ४ ॥
बहुत कुछ कहने सुनने पर फाटक उसने खोल दिया।
बादशाह के पास तभी गोकुल ने जा तशलीम किया ॥ ५ ॥
शाहं शाह से बात चीतकर अग्रोहा बिजत कराने का।
जिम्मा लेकर गोकुल आया अग्रोहा बिजय करानेका ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

बादशाहने इस कदर गोकुल को सुन अर्ज।
अपनी राहत करनका शाहने समझा फर्ज ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

यदि अग्रवाल धोखादेकर गर मेरी फौज कटाता हो।
मोका यही परीक्षा का है शायद धोखा देता हो ॥ १ ॥
है अग्रवाल बंशज हमरे चेला गर हो जावोगे।
प्याला यह कलमा पढा हुवा इसको जब तुम पीजावोगें ॥ २ ॥
जिससे तुमपर हमरा यकीन हो यही काम यदि तुम करलो।
तो तुमरे साथ चलें भाई तुम यही सबक दिलमें रखलो ॥ ३ ॥
गोकुलचन्द्रको लालचने आगे आन दबाया था।
तब शाहं शाहके कहनेका असर उसी दम आया था ॥ ४ ॥
प्याला लेकरके निज करमें और तुरन्त पीलिया गोकुलने।
सच है लालचके अन्धाकर से धर्म्म खोदिया गोकुलने ॥ ५ ॥
कुछ धर्म्म करम का था बिचार तो गोकुल प्याला क्यों पीता।
बस इसी ख्याल से बांदशाह ने फिर अग्रोहा को जीता ॥ ६ ॥
फिर शाहं शाह ने सेना अपनी गोकुलके संगकरी रवां।
और गोकुल फिर धोखा दे द्वार पाल ढ़ीग पहुचा वां ॥ ७ ॥
बोला गोकुल द्वारपाल से शाही सेना सब पिछे है।
हमको तो मारती आती है और देख हमारे पिछे है ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

द्वारपालने उसीदम खोल दिया था द्वार।
सैना भीतर घुस पड़ी शाही कई हजार ॥ १ ॥
भीतर चारो ओर से मच गई हाहा कार।
अग्रोहा के बीर सब सजकर हुये तैयार ॥ २ ॥

॥ छन्द ॥

फिर शाही सैना इस कदर भगी जिसका कुछ नहीं ठिकाना था।
रजपूतोने मारमार कर सबको किया विराना था ॥ १ ॥
छनभर के अन्दर ही सब को दरवाजे बाहर कर दीना।
द्वारपालको हुक्म दिया फिर फाटक बन्द करा दीना ॥ २ ॥
तब शाह उधर व्याकुल होकर थालीमें बीड़ा रखता है।
है कोई मेरी सैनामें बीर जो अग्रोहा फतेह कराता है ॥ ३ ॥
था एक सैन सरदार उसीको बिलियम नाम कहा जाता।
क्रोधित हो बोला शाहं शाह आज्ञा हो मुझे अभी जाता ॥ ४ ॥
क्षणभरमें बिजय करा सक्ता अग्रोहाके जितने सरदार।
कुछ शाह मनमें रञ्ज करो न में इसी वक्त होता तैयार ॥ ५ ॥
इस बिलियमका था बड़ाही दिल जो कुम्भकरण सरमाता था
और मदके नशेमें मस्त हुवा फिर अग्रोहा चढ़ जाता था ॥ ६ ॥
नगरीके दरवाजेपर एक ऐसी ठोकर मारी उसके हस्थीने।
जिसके लगते ही खड़ खड़ हो जोडी जभी ये गीराई हस्थीने ॥ ७ ॥
फिर निर्भय होकर बिलियम ने चौतरफा मारमचाई है।
तब अग्रोहाकि नगरी ही उस बखत अधिक घबराई है ॥ ८ ॥
पर क्षत्री सैना इस बिलियम पर चौतरफ से टूट पड़ी।
उस बीर बली जोधाके मुकाबिल कोई नहीं खड़ी रही ॥ ९ ॥
क्षत्री सैना को बिचलित लख तब अग्रावल सैना टुटी।
बिलियम की सैना घेर लेई और चौतरफा से ही टूटी ॥ १० ॥
तब बिलियमने एक सन्देशा बादशाह को भेजा था।
इस समय बहुत अच्छा है शाह तब किला आनकर घेरा था।
किला घिरा हुवा देख सभी अग्रोहाके राजा टूटे।
सब टिड्डी बिड़ी सैना करदी ज्युं बाज कबुतर पर टुटे ॥ १२ ॥
रतन सैन ने उसी वक्त सब मेवजीन को जला दिया।

मेघजीन में आग लगाते वक्त खुदने अपना बलिदान किया ॥ १३ ॥
फिर नन्द और अमृत दोनोंने हथीयारो से काम लिया।
बन्दुकतोप की आश छोड़ तेग कटारसे काम लिया ॥ १४ ॥
और दोनो हाथ सिरो हो ले सैनामें पील आये।
चौतरफ सैन बीचलाई थी और शाह मुकाबिल चल आये ॥ १५ ॥
फिर उसी वक्त राजा इन्दर ने अपना अश्व बढाया था।
बादशाह के गजमस्तक पर इसने हाथ अड़ाया था ॥ १६ ॥
इन्द्रसैन ने हाथीको तब ऐसा एक खड़ग मारा।
तब शाह का हाथी घायल होकर रणभूमिमें चींघारा ॥१७॥
इस कदर सूरता करनेपर भी शाहसे विजय नहीं पाई।
तब नन्द और दोनों कुंवरनने अपनी अपनी जान गंवाई ॥ १८॥
इसी कदर ही और वीर रणभूमी सयन कर जाते थे।
तब छोटे छोटे राजपूत सब यह मन्सा कर आते थे ॥ १९ ॥
हमरे स्याने सब जुझमरे पर हम भी कुछ पुरुषार्थ करें।
यहां शाहं शाह के सन्मुख हम भी अपना कुछ युद्ध करें ॥ २० ॥
हम जीवित रहकर क्या अपनेको धब्बा ही लगवावेगें।
बदला लेवें हम पुरुषन का हम वंश नहीं लजावेगें ॥ २१ ॥
ऐसा विचार कर राजपूत सब रणमें मार मचाते थे।
क्षणभर में शाह की सैनाके इन खट्टे दाँत कराये थे ॥ २२ ॥
उत्तमचन्द्र इन्द्रका लड़का गोकुल चन्द्रके सन्मुख आया।
क्रोधित हो जब गुर्ज चलाई लगतेही वह भूपर आया ॥२३॥
गोकुलचन्द्र को भेदनकर तब गुर्ज जमींपर ही आई।
फिर पूर्वजोंका बदला ले उत्तमने वीरता दिखलाई ॥ २४ ॥
इस पुण्य भूमि या रणांगन में सब अग्रवंश को तुम जानो।
पचास हजार के अन करींब सब योद्धा काम आये जानो ॥ २५ ॥
क्षत्री योद्धा अन्यजातके सब योद्धा ईत खपे सुनो।

एक लाख के अनकरीब सब सूर वीर इत खपे सुनो ॥ २६ ॥
यह समय न अच्छा था भाई अग्रोहा सब विधि सुना हुवा।
जब सब रानीयोंने देखा यो सब अग्रोहा तबाह हुवा ॥ २७ ॥
बादशाह से तब रानीयों ने ऐसा कहला भेजा था।
अग्रोहा अब टट चूका तू सैन सहित हट जावे गा ॥ २८ ॥
गर ऐसा नहीं तूं कर सक्ता तो आप मेरी मञ्जूर करो।
हम अपने अपने पतियों की ढूंढे लाश मञ्जुर करो ॥ २९ ॥
हम सती होवे पतियों के संग यह भी बात मंजूर करो।
और रणसे अपनी सैना को हटवा लेना मंजूर करो ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

बादशाह कर जोड़कर बोला ऐसा बैन।
हमरा कुछ अपराध नहीं तुम सुत काटे सैन ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

तब रानी ने कँवरनको बुलवा ऐसे बचन सुनाये थे।
पुत्रो अग्रोहा टुट चुका क्यों अपने प्राण गमावो थे ॥ १ ॥
माताओंके समझाने पर पुत्रोंने युद्ध समाप्त किया।
फिर उत्तमचन्द्र वगैरह को शाहने छातीसे लगा लिया ॥ २ ॥
गोकुलचन्द्र और रतनसैन के पुत्रोंसे यो फरमाया।
तुम निज कुटुम्बके हुये नहीं धृग ही धृग उनको फरमाया ॥ ३ ॥
तुमको हम राज्य नहीं देगें तुम निज भ्रातन के हुये नहीं।
हमरे क्या आगे हो बोगे तुम कुल उद्धारक बने नहीं ॥ ४ ॥
तब शाह बिदा होने के वक्त उत्तम को राज्य दिया जानो।
अग्रोहा की गद्दीपर उत्तमचन्द्र को बैठाया जानो ॥ ५ ॥
और शाह ने हुक्म दिया को अग्रवंश को यही मिले।
मेरा दीना यह चंवर छत्र यह हुक्म न मेरा जरा टले ॥ ६ ॥
फिर शाह गया अपने मुलक और इत रानोयों की तैयारो।

चहुं दीसों रानीयांओंने सतीयों के करी तयारी ॥ ७ ॥
एक तालाव के उपर ही सतीयों ने सत सम्हाला था।
निम्नलिखित दे आप और सुर पुरको गमन विचारा था ॥ ८ ॥
यही सती सब अग्रवंश में अवतक पुजी जाती है।
इन्ही सतीयोंकी ग्रामोंमें स्थापना मानी जाती हे ॥ ८ ॥
सब सतीयोंने ऐसे बचन कहे और यह इनसाफ किया उनने।
गोकुलचन्द्र और रतनसैन का दूजा वंश कहा उनने ॥ १० ॥
कुल घातक यह वंश समझना गोकुल और रतन काही।
करतूत इन्हीके स्यानोकी सब गोकुल और रतन काहो। ११ ॥
यह प्राचोन नगरी का कुछ खेद जनक वरनन कीना।
उसी समय से इस वंशजका दूजा गोती बरनन कीना ॥ १२ ॥
नोट इधर कुछ लिखता हुं जो दूजे गोती कहलाये।
गोकुल रतन और उनतीस साथी गोत्र गोहिल कहलाये ॥ १३ ॥
आज कल गोहिले वंश के दक्षिण प्रान्त वसे जाकर।
थोड़े थोड़े सभी देशमें फिर से बस गये ओ आकर ॥ १४ ॥
यह चरित्र कबी कृष्ण रचित है वंशावली का मत लेकर।
यह हो असुद्ध तो क्षमा करेगे सभी भ्रात मेरे उपर ॥ १५ ॥
हुं सभी भ्रात नका दास और सब कृपा करे मेरे ऊपर।
भूल चूक सज्जन सोधेगें दया राख मेरे उपर ॥ १६ ॥
गर शक हो किसी लेखका अग्र पुराण को देखियेगा।
ब्रह्मानन्द अग्रोहा की लिखी वंशावली देखियेगा ॥ १७ ॥

नोट—इस गाथासे पता चलता है कि सिकन्दर जो कि हिन्दुस्थानमें धनके ही लिये आया था उसने अग्रोहा में अमित धन राशि लूटी थी वहांका राज उत्तमचन्द्र हा को देकर और चवंर छत्र देकर छत्रधारी राजा बनाकर लौट गया था। तिसके बाद क्रमशः फिर अग्रोहा की श्री बढ़ने लगी और गोकुलचन्द्र व रतनचन्द्रका वंश खूब बढ़ने लगा। इसी वंशकेबहत्तरिये भाबड़े-सिरालिये कज्जवाले कहलाते है। रोटी बेटी बन्द, इस घटना से अग्रवालोंके ३ विभाग होगये—नागवंशी, राजवंशी और बहतरिये।

महाराजा नन्द

नोटः—मसीह से ३२७ वष पूर्व अग्रोहाके राजसिहासनपर महाराजा नन्द शासन करता था। उस समय प्रत्येक वंश का मुख्य व्यक्ति अपने बंश का राजा कहलाता था। इस प्रकार से अग्रोहा में अग्रवाल वंश के एक सौ राजा महाराज नन्द के आधिन थे। इनमें नन्द का भतीजा भी एक घराने का मुख्य राजा था।

अग्रोहा पर सिकन्दर का आक्रमण

कहते है कि सिकन्दर ने अग्रोहा को जीतने के लिये ग्यारह वार आक्रमण किया, परन्तु अग्रवंश की ऐक्यता और पराक्रम के प्रभाव से वह परास्त होकर लौटता रहा। अन्त में सिकन्दर ने अग्रवंश की सुदृढ़ ऐक्यता को भंग करने का षड़यंत्र रचकर अपना दूत पुनः महाराज नन्द के दरबार में भेजा दूत ने महाराज नन्द से कहा कि हे अग्रकुल भूषण सिकन्दर आज़म आपकी बीरता, धोरता और गम्भीरता का पूर्ण समर्थक है, और आप से मिलना चाहता है।

दूत की यह बात सुनकर नन्द के भतीजे अमरसन ने कहा कि हे दूत! तू जा, अपने राजा से कह दे, हम इस प्रकार नहीं मिलते। यदि उसे मिलने की अभिलाषा है तो हम रणक्षेत्र में तीक्ष्ण तलवारों की धार से मिलने का गौरव प्राप्त करेंगे, और सहस्रों यूनानियों के शिर काटकर सन्मुख धरेंगे।

अमरसेन का उत्तर सुनकर सिकन्दर का दूत चुपचाप दरबार से उठकर चला गया, और अपने बादशाह से सब वृत्तान्त कह सुनाया। सिकन्दर ने पुनः उसे राजा रतनसेन के पास राजा नन्द से प्रश्रक रहने का प्रार्थना पत्र देकर भेजा, जिसको पढ़कर क्रोधित हो दूत से कहा, हे दुष्ट दूत! तू हमारे वंश में फूट डालकर हमारा विनाश करना चाहता

है। तुझे मालूम नहीं कि हम उस अग्रवंश के हैं जिसकी ऐक्यता संसार प्रसिद्ध है। जा, चला जा, महाराजा नन्द की आज्ञा होगी वही हम करेंगे।

किसी ने सत्य कहा है कि मनुष्यके करने से कुछ नहीं होता होता वही है जो ईश्वर को अभीष्ट हो। अतएव महाराज अग्रसेन के कुल में एक कुलघातक गोकुलचन्द नामक व्यक्तिका उत्पन्न हो चुका था, जिसके हाथ से अग्रोहे का विनाश होना अभीष्ट था।

अग्रोह का विनाश और पतन।

राजा गोकुलचन्द का धर्मभ्रष्ट होना

——:*:——

लोभ मनुष्य को अन्धा कर देता है। लोभ पाश में फंस कर मनुष्य क्या २ पाप नहीं कर बैठता। राज लोभ में फंस कर गोकुलचन्द ने सिकन्दर के दूत का कहना स्वीकार कर लिया, और अपने भ्राताओं के साथ युद्ध के लिये सन्नद्ध होकर दूतके साथ सिकन्दर के शिविर में चला गया। सिकन्दर आज़म ने साधारण बातचीत करके गोकुलचन्द से कहा कि हमें कैसे विश्वास हो कि तुम हमारे सहायक व साथी हो गये हो। यह कहकर सिकन्दर ने एक ग्लास जल का आगे करके कहा कि प्रथम यह पीकर सिद्ध करो कि वस्तुतः तुम हमारे सहायक व साथी हो। कहते हैं कि गोकुलचन्द ने तत्क्षण ग्लास को ग्रहण कर लिया, जिससे सिकन्दर को विश्वास हो गया।

तत्पश्चात् एक दिन अर्द्धरात्रि के समय जब कि अग्रोहा वासी घोर निद्रा का आनन्द लूट रहे थे, इस कुल घातक गोकुलचन्द ने सिकन्दर आज़म के सेनाध्यक्ष को साथ लेकर अग्रोहापर आक्रमणकर दिया और स्वयं द्वारपाल को धोखा देकर दुर्गके अन्दर चला गया, और एकाएकी अपने वंशजों को तलवारके घाट उतारना प्रारम्भ कर दिया, परन्तु इस

उक्ति के अनुसार कि सिंहोंके बालक सोते भी जागते हैं, अग्रोहाके वार योद्धा तत्क्षण सचेत हो सिंह समान दुष्ट गोकुलचन्द और सिकन्दर आज़म की सेना पर टूट पड़े। कुछ घंटों के रक्त वाहक युद्ध के पश्चात् सिकन्दर की सेना भागकर दुर्ग के बाहर आ निकली। जब सिकन्दर को अपनी सेना के पराजय का वृत्तान्त मिला, उसने तत्क्षण एक दल सेनाका अपने अधिकारी सरदार बिलियमके साथ भेजा, बिलियमने आते ही नगर का द्वार तोड़कर चकना चूर कर दिया, और अन्दर प्रविष्ट हो सर्वनाशकारी वध प्रारम्भ करदिया। दूसरी ओर सिकन्दर स्वयं अपनी सेना का संचालक बन दुर्ग पर आक्रमणकारी हुआ। वीरवर इन्द्रसेन ने सिकन्दर आज़म को बुरी तरह व्रणासन्न (घायल) किया, जिससे सिकन्दर आज़म बहुत घबराया। सारांश यह कि इस युद्ध में महाराजा नन्द, कुमार इन्द्रसेन, अमरसेन और बहुतसे वीर योद्धाओं ने सहस्रों यूनानियों को मृत्यु के घाट उतारा और स्वयं भी रणक्षेत्रमें वीरगति को प्राप्त हुए। जब राजकुमारों को इन की मृत्यु का वृत्तान्त मिला तब उन अल्पवयस्क छोटे २ बालकों के रक्त में प्रगति हुई जिन्होंने कभी युद्ध का नाम भी न सुना था और रणक्षेत्र में जा डटे। कुमार, उत्तमचन्द ने जो महाराजा इन्द्र सेन का पवित्र सुपुत्र था, अपनी वीरता के गुण दिखलाये, और कुलघातक राजा गोकुलचन्द को अपनी तलवार से मृत्यु के घाट उतार कर अपने चित्त को शान्ति प्रदान की।

राजकुमारों ने अपनी वीरता से शत्रु की सेना को कई बार नगर से बाहर निकाल दिया, परन्तु वास्तव में राजकुमार बालक ही तो थे. वे अबोध युद्ध के हथखण्डों को क्या जानें, परन्तु सिकन्दर भी इनकी वीरता को मान चुका था। इनकी प्रत्येक गति पर धन्य २ करता था। अन्त में ये अबोध बालक शत्रु की सेना का सामना करने में असमर्थ रहे, जिससे शत्रु को सफलता प्राप्त हुई। इस युद्ध में कम से कम एक लक्ष्य व्यक्ति अग्रवाल वंश के मारे गये।

इस प्रकार जब सिकन्दर विजयी हुआ, तब राजकुमारों को बुलाकर बोला, हे राजकुमारो ! मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूं, क्योंकि जिस उत्साह और वीरता से तुमने अपने परम्परागत राज्य श्री के लिये युद्ध किया, वह तुम्हें ही शोभा देता है। वह तुम्हारा ही काम था। मैं तुम्हारी बुद्धि मता की प्रशंसा करता हूं, इसलिये तुम्हारा राज्य तुम को ही लौटा देता हूं, अब तुम निर्भय निर्विघ्न अपने पूर्वजों के सिंहासन पर शासन करते रहो, और सदा अग्रवाल वंश में छत्र, चवाँर, मुकुट को स्थित रखो। दूसरी ओर राजा गोकुल चन्द और रतनसेन के राजकुमारों का बुरा भला कहा कि जब तुम अपने कुलके न बने तो हमारे कब बन सकते हो। इस प्रकार सिकन्दर आज़म युद्धसे मुक्ति पाकर अग्रोहेसे चल दिया। परमात्मा की लीला को देखो जो अग्रोहा अल्पकाल पूर्व अपनी यौवनावस्था में था आज प्रशान्त जंगल के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। युद्ध की समाप्ति पर सहस्रों स्त्रियां जिन के पति रणक्षेत्र में मारे गये थे, सती की पद्धति के अनुकुल उस तालाब पर जो लखी तालाब के नाम से प्रसिद्ध था, सती हो गईं और परमात्मा की प्यारी गोदमें सदा के लिये चली गईं।

अहो, यह कैसा भयावह दृश्य है ? इसको सुनकर कौन अग्रवाल वंश का ऐसा बालक है जिसके नेत्रों से अश्रुधारा न प्रवाहित होजावे मित्रो ? अग्रवाल वंश का नाश, अग्रोहाके नष्ट होने का वृत्तान्त पढ़कर कौन क्षत्रिय योद्धा है जिसके चित्त में उद्वेग न उत्पन्न होता हो। मगर जिसकी विशालता व सौन्दर्यता में भारत वर्ष में दूसरा नगर न था, आज अपनी अशुद्ध वायु को खण्डरों के ढेरों से परिपूर्ण कर अग्रवाल वंश के हृदय को दुःख दे रहा है। आज उन रमणीय स्थलोंमें जहां महाराजा अग्रसेन और उनकी सन्तान ने आनन्दोपभोग किया था, एक बालक भी दृष्टिगोचर नहीं होता। अहो, इस पवित्र पुण्यमयी भूमिमें जहां सैकड़ों वेदों की पाठशालायें वेदों की शिक्षा देती थीं वहां आज

वेदों का नाम लेवा भी नहीं हैं। जहां ओ३म् के झण्डे के रक्षक सहस्रों शूरवीर घोर, घोर उत्पन्न हुए और रक्षा की थी, वे पुण्यमय शुभस्थान आज विकराल रूप धारण कर पूर्वजों की स्मृति करा रहे है। हे भावी! तूने क्या किया, हमारे पूर्वजों के गौरव का नाश कर अग्रवाल जातिके दुःख के गर्त में फैंक दिया।

इस प्रकार अग्रोहा को नष्ट किया गया इस समय अग्रोहा को अत्यन्त हानि उठानी पड़ी किन्तु सर्वथा नष्ट न हुवा और आहिस्ता आहिस्ता फिर ऊंचाउठने लगा और कुछ ही समय पाकर अग्रोहा में फिर अग्रवालों का सितारा चमका और प्रेमकी नदियां भर आई।

इस समय यहांपर जैनधर्मावलम्बीय अष्टाङ्ग पाठी परम विद्वान् दिगम्बराचार्य भद्रबाहु द्वितीयके शिष्य लोहाचार्य्यजी दक्षिण देशसे विहार करते हुये अग्रोहामें आ पहुचे। आपने अग्रोहामें एक ही स्थानपर बहुत से विद्वान मिलनेपर यहां चातुर्मास व्रतधारन किया और जैनधर्म का प्रचार करना आरम्भकर दिया। कुछ ही समयमें यहांके तमाम बाशिन्दे जैनधर्मावलम्बीय हो गये। और अहिन्सा परमो धर्मः के पालक हो गये। अब भी अग्रोहा में शान्ति का राज्य था सब अग्रवाल अपने आपे में मग्न थे।

कुछ समय बाद यहांपर बाबा धूङ्गनाथने अपने शिष्य कीर्तिनाथ सहित इस नगर में आकर आसन जमाया और अपने शिष्य से बाबाने कहा कि तुम इस नगरी से भिक्षा लाकर अपना पालन करना और मेरी धूनी चिताना में समाधि लगाता हूं इस प्रकार शिष्यको शिक्षा दे और आपने सुपारीपर मस्तक टेक कर उल्टा आसन लगाकर समाधी लगा ली। और ८४ धूनी तपने लगे।

बाबा का शिष्य कीर्तिनाथ जब शहरमें भिक्षार्थ गया तो यहांपर समस्त शहरमें किसी ने भी भिक्षा नहीं दी जब सन्ध्या होनेपर कीर्तिनाथजी वापिस आये और जंगल से लकड़ी लाकर गुरुजी की धूनी चिताई और भूखे ही

सो गये आखिर दूसरे दिन फिर शहर में गये और भिक्षामांगी परन्तु यहां तो सब नास्तिक है भिक्षा कौनदे। आज एक कुम्हारी ने भिक्षा दी।

दुसरे दिन कितिंनाथ ने उस कूम्हारी से एक रस्सा और एक कुल्हाड़ा लेकर जंगलको प्रस्थान किया। और वहां से लकड़ी लाकर शहर में बेची और अपना निर्वाह किया।

अब कीर्तिनाथ नित्यप्रति जंगल से लकड़ियां लाया करते थे और आधी लकड़ी शहर में बेचकर अपना उदर पूर्ण करते थे और आधी से गुरु की धूनी चेतन किया करते थे। और जब कभी किसी खास चीज की आवश्यकता हुवा करती थी तो वही कुम्हारी दिया करती थी ईस प्रकार छः महिने बीत गये तत्पश्चात् बाबा ध्रूङ्गनाथ ने समाधि खोली और शिष्य से कुशल समाचार पूछे। तब शिष्य ने बताया कि इस नगरी से मुझे भिक्षा नहीं मिली और अपमानित शब्दों का प्रयोग भी मेरे लिये किया जाया करता है। यहां सिर्फ एक कुम्हारी है जो मुझे रस्सी और कुल्हारी व (मिटी के बरतन आदि देती है उसके सिवाय सब यहां अधर्मी बसते हैं मेरे सिर के बाल तमाम उड़गये हैं लकड़ी ढोते २ अब यहां से चलना चाहिये तब बाबा ध्रूङ्गनाथको क्रोध आया और कीर्तिनाथसे कहने लगा कि जावो उस कुम्हारी को सकुटूम्ब शहर से बाहर निकाल दो और शहर में आवाज लगादो कि कल सवा पहर के तड़के यहां आग बरसेगी जिस किसी को निकलना हो निकल जाये नहीं तो भीतर ही दबकर मर जायेगा और साथमें तुम आवाज लगावो।

सुनलो फकीर क्या कहता है बार बार-दम का नहीं भरोसा बहरे बनोना यार। उल्टा हुवा जमाना दिन की हो गई रात-पापी सब फूलै फलै अहो गजब की बात ॥ १ ॥

इसी प्रकार फकीरने आवाज लगाई और कुम्हारी को अग्रोहा से बाहर निकलने की आज्ञा दी। कुम्हारी को इनकी बातोंपर बिश्वास था उसने अग्रोहा से उठकर तीन मीलपर जाकर अपना डेरा लगाया। अग्रोहाके रहने

वाले अग्रवालों में बहुतों को तो बिश्वास था ही नहीं। उन्होंने समझा फकीर बकता है परन्तु कुछ के तो सन्देह हुवा कि फकीर है पता नहीं कल क्या हो जाये इस लिये बाहर चलना चाहिये।

कुछ अग्रवाल तो बाहर निकल गये थे परन्तु विशेष हिस्सा अग्रवालों का भीतर ही था। बस अब क्या था जब सवापहर का तड़का हुवा और आग के अङ्गार बरसने शुरु हो गये लोग अब भागने लगे मगर अब क्या होता है जो सोरहे थे सोते ही रह गये जो भागते थे भागते ही रह गये।

बस यही समय था कि अग्रोहा सवा पहर के अन्दर राख का ढ़ेर बन गया अब अग्रोहा बिलकुल नेस्तनाबूद हो चुका था सिर्फ एक राख के ढेर के सिवाय कुछ नजर नहीं आता था जो अग्रवाल उस समय फकीर की आवाज सुनकर बाहर निकल आये थे उन्होंने दूसरे दूसरे स्थानों में जाकर अपना व्यापार करना शुरू किया।

जहांपर कुम्हारीने जाकर अपने तम्बू डाले थे वहांपर वोह गाँव उस कुम्हारी ही के नामपर कुम्हारिया अभी तक मौजूद है इस में अन्दाजन तीन सौ सवातीन सौ घर आबाद है जोप्रायः कुम्हारोंके तथा ब्राह्मणोंके है कुछ अन्य जातिके भा है अग्रवालोंके तीन घर है जो उसी समय के बसे हुये है।

यह अग्रोहा बहुत दिन तक इसी प्रकार गैर आबाद पड़ा रहा इसी अग्रोहे से उसी रात को भागकर गये हुये घरोंमें से एक अग्रवाल हरभज शाह नामक महम में बावन क्रोड़ी कहलाने लगे। और बड़े बड़े व्यापारी राजा लोग समय २ पर रुपैया इनसे कर्जके तौरपर लाने लगे। इस प्रकार इसका सितारा भी इस समय खूब चमका एक समय श्रीचन्द्र नामक साहुकार ने ११०० ऊंट केशरके हिंदुस्तान में भेजे और एलान किया कि इन ऊंटों की केशर एक ही व्योपारी के हाथ बेचना तब उसके गुमाश्ते तमाम भारत भ्रमण करते हुये महम में भी पहुचे यहांपर हरभज शाह से मिले तब हरभज के एक हवेली का चेजा लगा हुवा था उन्होने हुक्म दिया कि यह सब ऊंटों की केशर तगार में डाल दो जो हवेली में चित्र कारी के काममें

आवेगी। और अपने गुमाश्ते को आज्ञा दी कि एक एक सालका सिक्का अलग २ भरदो इसी प्रकार हुवा जब श्रीचन्द्र के गुमाश्ते वापिस अपने मालिक के यहां पहुचे और सब बिवरण सुनाया तब उन्होने सेठ हरभज शाह के प्रति एक पत्र लिखा और उसमे जाहिर किया था कि आपने जो इतनी लागत का मकान निर्माण किया है इसमें कौन बिराजमान होगा। आप इस लायक नहीं है। क्योंकि आप अग्रोहा से भागकर आये है। आप का प्रथम स्थान उजाड़ पड़ा है जबतक उसको आबादन करदे तबतकमें आप को इस लायक नहीं समझता अगर कुछ प्राचीन गौरव चाहते हो तथा बान चाहते हो तो अग्रोहा को आबाद करके फिर इस मकानमें आप सोना बैठना करना सब निरर्थक है।

इस प्रकार का पत्र जब सेठ हरभज शाह के पास आया तो उन्हो ने उसे बार बार पढा और समझा। आखिर उन्होने निश्चय किया कि मेरी पगड़ी तथा मूंछ उसी समय सफल है तब अग्रोहा को आबाद करहूं शेठ हरभज शाहने प्रतिज्ञा करके अपनी मूंछें उतरवा दी और पगड़ी उतरवादी और अपने मित्र राजा रिसालू के पास गये और अपने दिल की बेदना प्रगट करी राजा रिसालू ने सेठ हरभज शाह को फौजी सहायता का भली प्रकार बचन दिया और चन्द ही दिनोंमें अग्रोहाके थेह से दो मीलके फासले पर फौज के तम्बू लगवा दिये और इन्तजाम बाकायदा कर दिया उस समय सेठ हरभज शाहने एक दुकान वहाँ पर खोली इस दुकानसे जो २ अग्रवाल तथा कोई भी यहां जाकर आबाद होता था उसको इस लोक और परलोक की उधार माल रुपया वगैरह हरवस्तु दी जाया करती थी। इस तरह बाहर से आआकर बहुत से अग्रवाल बसने लगे कुछ ही समय में यहां पर एक लाख तेईस हजार घर आबाद हो गये थे उस समय सेठ हरभज शाहने सब भाइयों से कहा कि भाइयों अब तुम्हारे यहां पर और जो भा ई बाहरसे आवें उनको तुम एक एक रुपया एक एक जोड़ा ईंट का देना और अपने बराबर का बना लेना मैं अपने को दुकानसे प्रथक करता हूं और कार्य भार अपने

पुत्रदाताराम और लक्ष्मीनारायनको सोंपता हूं और अपने भाइयोंको हिदायत करता हूं कि व्याज ।) सैकड़ा और ।।=) सैकड़ा के दरमियान ही लेना जब व्याज की रकम ही रकमके बराबर आचुके तब रकम भी माफकर देना हमारी हस्त लिखित अग्रसैन पुराणमें लिखा है कि।

सवालक्ष घर बसे शहरमें मानुष नाये गिनै जारे।
ऐसा शहर बसा था भारी चार कूंट विख्यातारे॥ १॥

एक जोड़ा इन्ट का और एक रुपयाके लिये भी वहां तहरीर है।

हरभज शाहने एक समयमें ऐसी रीति चलाई।
एक टका और जोड़ा ईंट दे बन्धु लिये बसाई॥ १॥

उसी समय का यह बृतान्त है कि सेठ हरभज शाह की दुकान पर लखीसींह बनजारा आया और एकलाख रुपया सेठ हरभज शाहसे परलोक की उधार लिये और चलागया जब वोह रास्तेमें जारहा था तब उसके मनमें इसका बिचार आया कि यह सेठ जो इतना रुपया दे रहा है अवश्य हमको परलोक में इसके बैल बनकर देना ही होगा इस लिये इस का रुपया वापिस फेर दूं।

इस विचार से लखीसिंह बनजारा वापिस लोटा और हरभजशाह की दुकान पर आकर कहने लगा कि मैं आप का रुपया वापिस देना चाहता हूं। परन्तु हरभजशाह ने इनकार कर दिया और कहा कि मैंने परलोक की उधार रुपया दिया है इसलोक की उधार नहीं इस लिये इसलोक में नहीं ले सकता। इस जबाब को सुनकर लखीसिंह बड़ा उदास हुआ। क्योंकि उसे इस द्रव्य से घृणा हो चुकी थी अब वह इसी फिकर में जङ्गल पहाड़ आदि निर्जन स्थानों में घूमने लगा इसी समय उसको एक योगीराज मिले और उसकी उदासी का कारण पूछा तब लखीसिंह ने अपने दिल की व्यथा कही। उसके बाद योगीराज ने उसको एक उपाय बताया कि तुम इस रुपये से अग्रोहा में एक तालाब खुदवादो और उसमें सुन्दर जल भरदो बस लखीसिंहने इसी उपाय को काम में लीया और अग्रोहा के पास एक तालाब

खुदवा दिया और उसमें सुन्दर जल भरवा दिया और चारो तरफ पहरेदार बिठा दिये ताकि कोई पानी पी न सके।

इसका इन्तजाम लखीसिंह ने इस प्रकार किया था कि क्या इन्सान हैवान परीन्दा कोई भी इस तालाब में पानी नहीं पी सक्ता था। इस बातकी चर्चा अहिस्ता २ फैलने लगी जब कोई लखीसिंह से इसका कारण पूछता था तब लखीसिंह कहता था कि यह तालाब सेठ हरभज शाह का निजी है इस में पानी पीने की आज्ञा सेठजी की तरफ से नहीं है यह अफवाह जब हरभजशाहके पास पहुंची तो उसने अपने मनमें बिचारा की बड़ा अन्याय हो रहा है। जो लोग पानी के किनारे से प्यासे जा रहे हैं। यह बिचार कर सेठ हरभजशाह ने लखीसिंह को बुलाया और कहा कि तुम अपना पहरा इस तालाब पर से उठालो में तुम्हारा कर्ज का रुपया जमा करता हूं। इस प्रकार इसका रुपया जमा हुवा और इस तालाब का नाम लखी तालाब पड़ा इस तालाब के चारों तरफ पाल बनी हुई है जो अभी तक कायम है और यह तालव लखी तालाब कहाता है।

पहलेके जो घाट थे वे अभी टूटे हुये हैं उनके निशानात अभी देखने में आते हैं इस तालाब की तली (पैंदो) अन्दाजन ३१० बीघे पक्की जमीन में है जहां अब एक फसल बोई जाती है क्योंकि इसकी तली बुर गई है। चतुर्मासे में तो इसमें कुछ पानी जमा रहता है परन्तु बाद में सूख जाता हैं फिर उसमें गेहूं वगैरा बोया जाता है। यह तालाब अब विश्वेदारों के कबजे में होगया है। जो नया गांव अग्रोहा आबाद है। उस समय के ही जो मकान राजा रिसालू ने अपनी फोजों के लिये बनवाये थे वह अब रिसालू खेड़ा के नाम से विख्यात हैं जिस के खंडहर अभी बराबर नजर आते हैं

इसके बाद अग्रोहे वाले भली प्रकार हिल मिलकर रहने सहने लगे और आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगे (परन्तु सब दिन होत न एक समान) फिर भाग्य ने पलटा खाया और शहाबुद्दीन गोरी ने सम्वत १२५४ में एक

लाख बीस हजार सैना सहित अग्रोहे पर चढ़ाई करदी अब अग्रोहा बिलकुल खाली हो गया कुछ अग्रवाल बीर मारे गये कुछ अपनी जान बचाकर भाग गये। जब अग्रोहा टूट गया तो फिर रहे हुये अग्रवालों को बिवश होकर दूसरे २ प्रान्तों में जाकर बसना पड़ा। इस प्रकार अग्रोहा फिर उजड़ गया

नोट—प्रथम आक्रमण इसअग्रोहेपर सं० ७५९ में धारापति समर जीत की सहायता से सिकन्दर ने किया था इसके बाद १४५ वर्ष बीत जाने पर बाबा धूङ्गनाथ ने उजाड़ा था इसका सम्वत ९०३ बिः था इसके बाद शहाबूद्दीन गौरी ने १२५४ बिः में उजाड़ कर दिया यहां पर पहले अग्रोहा के खन्डरात् बराबर नजर आते हैं। अग्रवाल महिला जो सतियां हुई थी उनके स्मार्क अभी तक बने हुये है पहले जो बाबा धूङ्गनाथ ने अंगार बर्षा कर उजाड़ा था वह थेह अब भी राख का ढेर ही है इस में दबे हुये मकान साफ दिखाई दे रहे हैं। हड्डियां भी मिलती है। यहां का द्रश्य देखने से मालूम होता है कि उक्त घटना सत्य है।

मुसाफिर नामा

इसी समय सं० १२५४ के ही लगभग एक पारसी हिन्दुस्थान की सैर को आया था और उसने अपना अनुभव और यात्रा का विवरण लिखा था उसमें उसने लिखा है कि मं जब हस्तिनापुर देहली से ११०-११५ मील गया तब एक शहर सड़क के ऊपर ही मिला जो देखने में बहुत बड़ा मालूम होता था और जान पड़ता था कि शायद यह हिन्दुस्थान की राज्यधानी हो परन्तु वहां कोई मनुष्यमात्र भी नहीं था। सामान प्रायः उन मकानोंमें कुछ कुछ रखा हुवा था और दीवारों पर गोली आदि के निशानात मालूम होते थे शायद किसी बादशाह ने चढ़ाई करके इसे तोड़ा हो तथा नष्ट भ्रष्ट कर दिया हो।

इससे मालूम होता है कि प्रायः उक्त घटना से इसका भी सम्बन्ध मिलता है फिर यह बहुत दिनतक गैरआबाद पड़ा रहा यहां एक भी अग्रवाल का घर नहीं रहा हां इतनी बात जरूर थी कि बाहरवाले अग्रवाल अपने बच्चों के मुन्डन संस्कार करवाने आते थे और चले जाते थे यहां ठहरते नहीं थे क्योंकि कोई ऐसा स्थान अभी महफूज नहीं था जिसमें यह लोग ठहर सकते

अब यह अग्रोहा बिल कूल गैर आबाद रहा इसके बाद सं० १७०१ ईस्वी में रियासत जोधपुर से कुछ चन्पावत राजपूत आकर अग्रोहा में आबसे और भली प्रकार रहने लगे। इस अग्रोहा से दस मील की दूरी पर बीगड़ नामका एक ग्राम बसता था जिसमें प्रायः भट्टीराजपूत (पचादा) जातिके मजबूत लुटेरे रहते थे और उन्होंने अग्रोहावाले राजपूतोंको भी तङ्ग करना आरम्भ कर दिया और कई दफा चढ़ाई करके उनको क्षति पहुचाई उस समय उन राजपूतों ने महाराजा साहिब पटियाला से प्रार्थना करी कि आप हमारी रक्षा करें क्यों कि पटियाला रियासत यहांसे नजदीक लगती थी उस समय महाराजा पटियाला के दिवान नानुमल यह जातिके अग्रवाल थे इन्होने अग्रोहे के थेह पर एक किला बनाया और उसको अपने अधिपत्य में लेकर इनकी रक्षा करने लगे और आनन्द से शान्तिपूर्वक काम चलाता रहा कुछ समय बाद सन १८५७ में गदरने यहां भयंकर रुप धारण कर लिया और इस समय यह चम्पावत राजपूत अपने देश को चले गये और नानुमल दीवान का किला भी गैर आबाद हो गया कुछ चम्पावत राजपूत यहां रह भी गये थे। जो अबतक यहीं अग्रोहेके पास सन्ढोल-भाना-भोडीया ढीरसरके अब मालगुजार हैं। यह नानुमल दिवानका बनाया हुवा किला अभी अच्छी हालत में मौजूद है। जो तेरह मील हिसार से साफ नजर आता है। और उस किले के ऊपर से दूर २ के गांव बहुत नजदीक दीखते है।

इसके बाद जब बर्तमान गवरनमेण्ट आफ इन्डियाका शासन फिर जमने लगा तो वहां डिप्टी अमीचन्द बन्दोवस्तके वास्ते गये, उन्होने अपने दौरानमें अग्रवाल जाति के मुतल्लिक यह लिखा है उस को हम नीचे तहरीर करते है।

कौम महाजन अग्रवाल की तवारीख।

अग्रवाल वनियों का निकास जिला हिसार ग्राम अग्रोहा से हुवा है इस जिले में और कौमों कि निस्बत यह ही ज्यादा है अगरचे उनकी तवारीखका हाल काबिले इत्मीनान कही से नहीं मिल सका परन्तु एक तवारीख में पं० किसन सहाय दादरी वाले ने लिखा है उसको यहां दर्ज करते है "खुलासा तवारीख" नामक तवारीखमें सब कौमों का हाल मुख्तसर २ तौर पर लिखा है उसमें निस्बत कौम अग्रवाल के यह कैफियत दर्ज है कि चित्र और विचित्र, जो ब्रह्माके अंग से पैदा हुये थे इसी चित्रको चित्रगुप्त भी कहते हैं इसी की औलादमें 'रबरतन' हुवा जिसने बालदैनकी इजाजतसे गोवर्धन पर्वत पर जाकर सूर्य्य देवकी तपस्या की और सूर्य्यदेवने प्रसन्न होकर इसे एक कुशना मन दी कि यह मन जोतुम्हारी मुराद होगी वही पूरी करेगी और यह भी फरमाया कि नाम तेरा रबरतन होगा आप व्यासजी के पास जावो वह आप को हिदायत धर्मकर्म की करेंगें फिर इन्होने एक शहर रबरतन पुर नामका यमुनाके किनारे बसाया और यहीं रहना इख्तियार किया उसका बेटा सदामान हुवा और सदामान का औधु हुवा और मशहुर है कि राजा अग्र भी उसी सिलसिले में पैदा हुये और उनके सत्रह बेटे थे और उसने अहद किया था कि जिस राजाके १७ लड़की होंगी वहीं मेरे पुत्रों का विवाह करूंगा परन्तु इसी अरसामें राजा तो मर गया उसकी रानीने अपने शोहर के अहद मुताबिक अपने लड़कों की शादी एक ही घरमें सत्रह लड़कियों से करी जिनकी औलाद अग्रवाल मशहूर हुई अब इनकी औलाद ज्यादे बढ़गई तब इन्होने यह तजबीज करी कि अपना अपना गोत्र छोड़कर

वाहम शादी करलें। सो अब इनके यहां यही रिवाज है कि अपना २ गोत्र छोड़ दुसरे गोत्रमें शादी कर लेनी।

एक दफा इत्तफाकन गलती से गोइल गोत्र का लड़का और गोइल गोत्र की लड़की की आपस में शादी हो गई। और इसगलती का पता खास शादी के बक्त लगा यानी जब लड़के वाले के पुरोहित ने जब शाखोचार पढ़ा तो गोइल गोत्र पढ़ दिया तब लड़की वाले के पुरोहित ने बजाय गोइल गोत्र के गोइन पढ़ दिया बस इसी दिन से यह आधा गोत्र कहाया इस प्रकार अग्रवालों के साढ़ेसत्रह गोत्र मशहूर हुये

इस जिलामें इनके आने का बाइस यह लिखा है के जिस जमाने में कौरव और पांडवो का महाभारत हुआ और बाद महाभारत के राजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया इस समय सब देशों के लोग इन्राइस यज्ञ में जमा हुये थे इसी बक्त बनिये भी आये थे। यज्ञके समाप्त होने पर राजा की इजाजत लेकर इसी देश में बस गये क्यों कि इस देशमें बीरान जंगल था इस बक्त इन्होने अपने मूरिस अग्रसेनजी के नाम पर अग्रोहा को आबाद किया और बाकी खानदान वाले भी यही आकर बस गये।

किसी जमाने में यह शहर बहुत बड़ा बसता था। फिर मुसलमानों के हमलेसे बीरान होगया और यहां के बनिये उजड़कर जाबजा चले गये और जो कुशनामन सूर्य्य देव ने रबरतन को दी थी यही मन इत्तफाक से इनके हाथ पड़ गई और इसी सबब से यह सब धनवान बन गये। पण्डित किशन-सहाय ने यह भी लिखा है कि शहर काशीपुरी में तुलाधार नामक वैश्य बहुत धर्मात्मा था। महाभारत के शान्त होने पर एक इतिहास वेत्ता ने लिखा है कि इसका बेटा महान कुन्डल हुवा और इसका पुत्र कुन्डल हुवा और उसका बेटा अग्रसेन हुवा इस सख्स ने (तारक दुनियां) वैराग्य धारण कर नील गिरी पहाड़पर जाकर तप करना शुरु किया। अब इसके खानदान में दूसरा और कोई सख्स नहीं था इससे ब्रह्मा ने देखा कि अब इस की नसल खत्म होती है तब अपनी माया से इस के मनमें सन्तान की

अभिलाषा उत्पन्न करदी जब उसने आँख खोली तब इसके आगे १७ सत्रह कुशा पूजा के वास्ते रखी हुई-थीं वह सत्रह बेटे बन गये। फिर इनकी शादी राजा वासुकि के घर सत्रह लड़कियोंसे हो गई उस वासुकि राजाको इसने सांपो का राजा बयान किया है।

यह हाल जो ऊपर लिखा गया है एक मामूली कहानी सी मालूम होती है मगर यह बात काबिले कयास है क्यों कि राजा अग्रसेन के १७ सत्रह पुत्र जरूर थे और यह भी हो सक्ता है कि उनकी शादी एक ऐसे घरमें हुई हों जिनके सत्रह पुत्रीयां थी। और उन सत्रह लड़कों के १७ गोत्र उन के नाम पर इस तरह बन गये। गर्ग-गोइल-मितल सिंहल-बांसल-येरन-कांसील कंछल-तिंगल-मंगल-बिन्दल-टेलण-मुधकल-टेरन-तायल-नागील।

बाद में वहां से उठ कर जहां जहां जाकर बसे थे उन्ही गांवों के नाम से सैकड़ों आल उनकी हो गई और वह आलों से पुकारे जाने लगे। यह लोग हिन्दुओं के चार में से तीसरे वैश्य वर्णोंमें कहलाते हैं यह लोग शिकार नहीं खेलते नहीं खाते इनमें नोकरी पेशा लोग बहुत कम हैं अकसर तिजारत दुकानदारी का पेशा रखते है इनको रुपया जमा करने का खूब ढङ्ग याद है चुनाचे बनिया नाम उनको इसी वास्ते कहा गया है के हर एक काम में अपने बनाव का फीकर रखते है कोई फिजुल खर्ची इन में नहीं होती और उनके लड़के बचपन से सूदपर रुपया चलाना सिख लेते हैं और अब अमलदारी सरकार में जो जमीन की कदर होगई इस वास्ते इन्हों ने इसको भी एक कीस्मकी तिजारत समझ रखा है यह लोग हमेशा यह सोचते रहते हैं

कि किस तरकीबसे जमीन खरीदें चुनाचे बन्दोबस्तमें केवल सिर्फ एक आध गांव उनके कबजे में था परन्तु अब कुल जिले का सोलहवां हिस्सा इनके कबजे में है इन लोगों से खुद कास्त नहीं होती जमींदारों के हाथ से करबाते हैं और उनको हमेंशा अपने कर्ज के जंजाल में फसाये रखते है इसी बाईस उधर के ज़मींदारों का एक मशला है। कि (बनियां हाकीम गज़ब

खुदा) इस प्रकार यह कैफियत डिप्टी अमीचन्द जी हिसार ने बन्दोबस्त करते हुये अपनी रिपोर्ट में दर्ज किया है ।

नोट—इस रिपोर्ट में जो अग्रवालों के लिये लिखा गया है कि इन्होंने कुछ ही दिनोंमें जिलेका सोलहवां हिसा जमीन अपना ली । इसी की बुनियाद पर इन्तकाल अराजी एक्ट के अनुसार अग्रवालों को जमीन खरीदने का हक्क पंजाब प्रान्त में नहीं है ।

एक दुसरी कैफियत में डिप्टी अमीचन्द साहिब सैटल मैन्ट बन्दोबस्त में ऐसा लिखते हैं कैफियत ।

पैदाइश कौम अग्रवाल व हाल कसबा अग्रोहा ।

भविष्यत पुराण में मजकूर है कि बाद जंगमहाभारत के राजा युधिष्टिर ने ३६ बर्षतक राज किया और हिमालय को चले गये उस पर जब १५६५ बर्ष का अरसा गुजरा तब राजा अग्रने अग्रोहा बसाया यह राजा कौम क्षत्री सूर्य्य बन्शी था बुजुर्ग इसके जम्बू के राजा थे चुनाचे तफसील बुजर्गान उनकी नीचे लिखी जाती है राजा बासुदैव की १७ वीं पीढ़ो में राजा अग्र-पैदा हुये राजा बासुदेव के सुईसनर पैदा हुये और इनके सुपुत्र सुधम देव हुये कृश्न वर्म्मा वीर वर्म्मा । रनधीर वर्मा जगत वर्मा नरेन्द्र वर्मा रुद्रवर्मा कृतवर्म्मा आशाजीत सुमेरु देव हुये इस देश हरयाने में किसी समय हय हय बन्शी राजा राज्य करते थे और किला उनका मुकाम राखी परगाना हांसी जो थेह पड़ा हुवा है यहां था परन्तु जमाना पाकर नेस्तना बूद हो गया शायद इस देश का नाम हरीयाना उसी बुनियाद पर चला आता हो कै हय हय बन्शी यहां फरमां रमां थे आशा जीतने शहर हांसी बसाया और अपने नाम पर आसी नाम रखा अब उसका नाम बीगड़कर हाँसी हो गया मगर यहां के जमींदार अबतक भी उसे आसी कहते हैं राजा सुमेरु देव के औलाद नहीं थी उसने वास्ते औलाद के पुत्रेष्टी यज्ञ करी तासीरयज्ञ से जो अव्वल लड़का पैदा हुआ उसका नाम (अग्र) रखा क्यों कि संस्कृतमें पहले

को अग्र कहते हैं जब अग्र बड़ा हुवा तब अपने नाम पर शहर अग्रोहा बसाया इस बक्त युधिष्ठिरके राजको १५५६ बर्ष पन्द्रासो छपन बर्ष गुजरे थे जमाना खातमा राजा युधिष्ठिर व शुरु कलियुग था।

और उस वक्त उमर कलियुग की ४८६५ वर्ष गुजरे थे उसमें से १५६५ वर्ष जमाना दर्मियांनी मिन्हों करके ३४०० बर्ष आवादी अग्रोहा पर गुजरे थे कि अग्रोहा गैर आबाद (उजाड़) हो गया ।

राजा अग्र के पांच रानियां थीं उनसे १७ सत्रह बेटे पैदा हुए पुराण में उनकी पैदायस इस प्रकार है कि स्वर्गलोक से १७ सत्रह गन्धर्वो को दुआय बाद हुई कि तुम जमीन पर जाकर बावजूद इन्सानी नस्ल करो चुनांचे वे सत्रह गन्धर्व इस राजा अग्र के पैदा हुये थे सब की यकसाँ सूरत यकसाँ चाल चलन वगैरह सब यकसाँ नाम उनके यह है १ नेमभद्र २ शुचि मान ३ भूसमान ४ क्रमलदेव ५ वासुदेव ६ वासुकि ७ देवनाग ८ शुचिश्रवा ८ धर्मनाभ १० गुप्तनाभ ११ केशवदेव १२ वालकृष्ण १३ रमानाम १४ रतन वीर १५ रनकीर्ति १६ कुश १७ वशु यह नामावली है एक राजा के सत्रह लड़की थी उनके साथ इनकी शादी हुई दुख्तरान मजूकर नाग कन्यायें थी आप से वह इन्सानी नस्लमें पैदा हुई थी सब का सांपका सा फन था बाद शादी के वह दूर हो गईं या चुनाचे अब तक खास कौम अग्रवाल के यह रस्म चली आती है कि जब कन्या की शादी करते है तो कन्या के सिर पर सूरत म्होरी बनाकर बान्ध देते हैं और जब लड़की शोहरके घर जाती है तो दूर करदेती है बस यह जानकारी उनकी औलाद की हुई । राजा अग्रसैन के १५ लड़कों के फीकस (प्रत्येकके) छः छः पुत्र और छः छः कन्यायें हुई और दो के तीन तीन पुत्र और तीन कन्यायें हुई इनको ब्राह्मणों ने यकीन दिलाया कि क्षत्री धर्म की हिंसा को छोड़ो ।

इस बर्णमें हिंसा बहुत है इसे छोड़ो वैष्णव-धर्म इख्तियार करो तुम्हारा पेशावाणिज्य व्यवहारका है सो कबूल करो उन्होंने हस्व हिदायत पण्डितों की कबूल किया और शिकार बगैरह जो काम क्षत्रियोंके थे वोह सब छोड़ दिये

उन्होंने दूसरा वर्ण यानी वैश्य वर्ण धारण कर लिया और शादी के लिये यह तजवीजकी कि आपस में शादी कर लिया करो और गोत्र अपने २ अलहदा २ अपने अपने आचार्य्यों के मुकर्रर करलो चुनाचे इस तफसील से उनके सत्रह गोत्र करार पाये।

१ गर्ग	२ गोयल	३ बांसल	४ कांसल	५ जिन्दल	६ मीतल
का	का	का	का	का	का
गर्गाचार्य	गौतम	वाशिष्ठ	कौसीश	जीवः बृहस्पति	विश्वामित्र
७ मंगल	८ बिन्दल	९ ऐरन	१० तायल	११ सिंगल	१२ कान्छल
का	का	का	का	का	का
मुद्गल	वत्स्य	अत्रि	शाकल	शृंगी	कुश
१३ तिंगल	१४ कौशल	१५ नागल	१६ टेहलन	१७ धैरन	१७। गोइन
का	का	का	का	का	का
शाण्डिल्य	कौशिक	कौंडल	भारवर	भारद्वाज	पुरोहित

कुछ समय बाद गर्ग गोत्रका लड़का और गर्ग गोत्रकी लड़की से शादी हो गई इनकी सन्तानोंका आधा गोत्र गोईन करार पाया इस प्रकार अग्रवालों के साढे सत्रह गोत्र करार पाये।

बाद राजा अग्रके उसका औलाद में राजा हुआ मगर फर्मां वायान (शासन वक्त) से औलाद अग्र को बावन ५२ मुहाल बतौर माफी मिलते रहे जब कि आबादी अग्रोहा को ३४०० वर्ष गुजरे तब यह शहर गैर आबाद हो गया एक दूसरी अरबी की किताब में ऐसा भी लिखा है कि समरजीत नामक एक राजा धारानगरी में हुआ उसने इनसे कहा कि तुम अग्रोहा छोड़कर चार जगहों में बस जावो और अग्रोहा को खाली करो इन लोगोंने इन्कार किया बाद युद्धके शिकस्ताखकर अग्रोहे को खाली कर दिया और कोलपत १ पानीपत २ नारनौल ३ झुंझुनू ४ इन चार शहरों में आबाद हो गये वीरान अग्रोहा को वा हिसाब मन्दरजा कैफियत के २२८७ वर्ष का अरसा हो गया।

डिप्टी अमीचन्दजी ने अग्रवालों की कैफियत गजटीयर आफ हिसार में यह इस प्रकार दर्ज करी है सो मैंने हू बहू यहां दिखा दी है। यह बात जरूर है कि जहां जहां जितनी ज्यादा खोज की जाती है वहां कुछ न कुछ अलग हो मसाला मिलता है। अब इन प्रमाणों में कौनसा यथार्थ है सो पाठक गण बिचारलें।

अब मैं उस मिसल की नक़ल दर्ज करता हूं जो शिजरे-किस्त बन्दी मौजा अग्रोहा दर्ज है बादूलर्ज।

नकल दफा १० बावत हकूक सरकार निस्वत मिलकियत नजदूल या जङ्गलात या ला दावा गैर मकबूजा या मुतफरिक गैर आबाद जमींन या पत्थर की खाने या खण्डरात या इमारत कदींमी या जमींन की वजद और पैदावार और २ मुन्तफात जायदाद वाके हदूद महाल अज बादूलर्ज मौजा अग्रोहा नम्बर हद बस्त ५४ तहसील फतेहाबाद जिला हिसार जिलद दोयम नम्बर हद बस्त ५४ चक नहरी मुर्तिबा बन्दो बस्त सन् १९०९ व १९१०।

॥ रया यात ॥

मौजा हाजामें एक थेह वाक है जो पुराना शहर अग्रोहा का मुकाम है आराजी थेह की हद बन्दी शिजरा किस्तवार में हुई हैं मिल-कियत इस आराजी की शामलात विश्वेदारान देह है इस वक्त कबजा सरकार मारफत साहिब डिप्टी कमिश्नर बहादुर हो रहा है आइन्दा जबतक सरकार को मन्जूर हो इसी तरह रहेगा जबतक कबजा सरकार है किसी बाशिन्दा देह को इख्तयार नहीं है कि इस थेह पर किसी किस्म की दस्तन्दाजी करे सरकार की मन्शा अपना कबजा रखने में है अगर कोई दफीना या इन्ट मनकस या दीगर अशियाय कदीम इस थेह में मौजूद हो यह जाती न रहे बल्कि जब निकले तो सरकार अपनी हिफाजत में रखे सरकार को इस थेह के बेचने का या थेह की इन्टों से इमारत बनाने का या इस किस्म का फायदा उठाने कोमन्शा नहीं है जब सरकार अपना कबजा छोड़ देवे तो आराजी थेह की पूरी मिलकियत पर कबजा विश्वेदारान देह का कराया

जावेगा और कोई कान कङ्कर या पत्थर जाहिर नहीं है अगर आइन्दा बरामद होगी तो सरकार की मिलकियत होगी।

नं० दरख्वास्त	तारीख गुजरने दरख्वास्त	फीस	लफज	तैयार करदा
१५२९	२३-६-१९३३	।।–)	२१०	

रामजीवन लाला
नकल नवीस हिसार।

॥ सती ॥

माता सती हमारी इस बंशकी उजारी।
संसार है असारी ममता दई बिसारी ॥
कुल जातिको उधारी पतिलोकको सिधारी।
शुभ कामना विचारी पूजो ! सती सु-नारी ॥

सती उसे कहते है। जो अपने आचरणों को शुद्ध पवित्र तथा आदर्श-नीय रखती है। और पतिव्रत धर्म का पालन पूर्ण रूपसे करती है।

उसे सती कहते हैं। पुराने जमाने में हमारी मातायें अपने पातिव्रत धर्म को भली प्रकार समझती थी और उसी के अनुकूल अपने आचरण बनाये रखती थी और अकस्मात अपने पति की मृत्यु हो जाने पर वह अपना शरीर भी उन्ही के शरीर के साथ भस्म कर देती थी वे मातायें बाद में कुटुम्ब द्वारा पूजी जाती थी और उनकी याद के लिये। भावी सन्तानों को पातिव्रत धर्म की शिक्षा के लिये भादव वदी १५ का दिन निश्चय किया हुवा था और हमारी सती मातायें भी हमारे गुप्त रूपसे कार्य्य सिद्ध किया करती थी। यह परिपाटी अब तक बराबर चली आरही है अग्रवालों की सतियें अग्रोहा में हुई हैं। क्योंकि अग्रोहा का जब विनाश काल आया था तब कई आक्रमण हुये थे और बाद महिलायें सती हुई थी उन्हें ही सब अग्रवाल पूजते चले आते हैं। भारतमें जब मुसलमानी राज्य का सितारा चमका था तब अग्रवालोंको मुण्डन कर्ण वेध संस्कार के लिये अग्रोहे आने जाने में रुकावट पैदा होने लगी मार्ग में रक्षा का प्रबन्ध यथोचित न था इस कारणसे

बहुत से पुरोहितों ने अग्रोहा से सतियों की ईंटें ले जाकर अपने स्थानोंमें मन्दिर बनवा लिये और वही पूजवाने लगे। जैसा दादीराणी सती झुंझनु।

अग्रोहा जीर्णोद्धारक।

जगन्नाथ के पुत्र हैं रामजी लाल है नाम।
परोपकारी जीव है नहीं लोभका काम ॥
छोटी उमरु आप भी पहुंचे काशी जाय।
वहां जाय विद्या पढ़ी दिक्षा गुरुकी पाय ॥

इस प्रकार बहुत से अग्रवाल भी यहां बाल उत्तरवाने लग गये और बहुतसे अबतक बराबर अग्रोहा ही जाते है। और वही मुण्डन कर्ण वेध संस्कार करवाते है। अब वहांपर सतियोंके मन्दिर१७॥ गोत्रके अलग२ बने है। कुछ टूटे है, कुछका जीर्णोद्धार होचुका है। यहांकी सती प्रत्यक्ष परिचय देती है और इनकी भावना इस प्रान्तमें जाट माली राजपूत ब्राह्मण आदि भी मानने लग गये है। और भादवें की अमावश्या का मेला लगता है। जिसमें दूर २ से और नजदीक की देहातों से हिन्दू जनता काफी जमा होती है।

महाराज अग्रसेन और उनके राजकुमार।

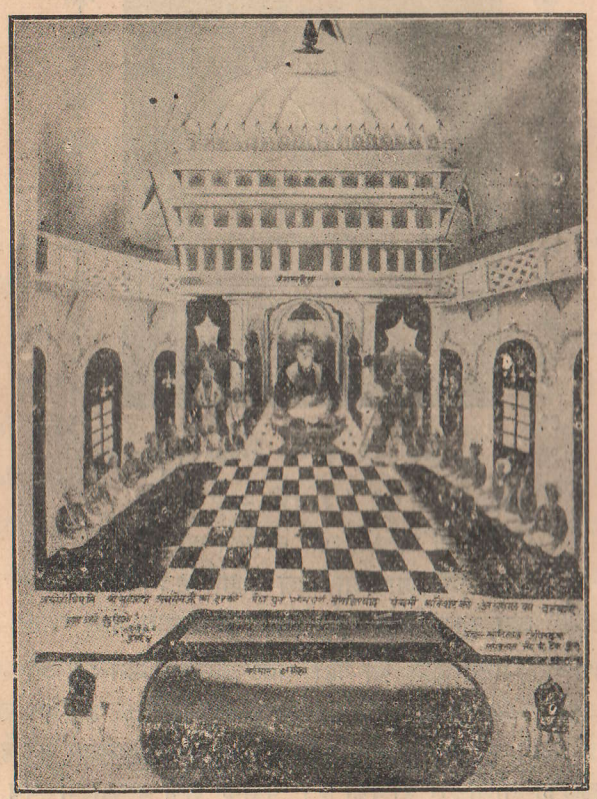

अग्रवाल दरबार रङ्गमहल।

वैश्यकुलभूषण अग्रसेनजी बडे ही प्रतापी पुरुष थे। उनके वंश धर होने कै कारण ही वैश्य एक बड़ा भाग अग्रवाल नाम से परिचित है अग्रसेनजी जैसे विद्वान् विचारवान् और प्रतिभाशाली थे भगवत्कृपा से वैसे ही धनजन सम्पन्न थे। किसी भी सांसारिक सुखकी उनके लिये कमी नहीं थी। ऐसा भी कहा जाता है कि, अग्रोहे के राजा होनेका गौरव भी उन्हें प्राप्तथा। इसी से अग्रोहा अग्रवाल वैश्यों की जन्म भूमि मानी जाती है। यह अग्रोहा दिल्ली से ११३ मील पश्चिम हरियाने प्रान्तमें है। अग्रसेनजी के १८ पुत्र हुए। वे स्वयं सुशिक्षित पुरुष थे इससे अपने पुत्रोंको विद्याध्ययन कराने के लिये उन्होंने सुयोग्य ब्राह्मण विद्वानोंके सुपुर्द किये, पिताकी आज्ञाको शिरो धार्य्य कर वे सब अपने अपने गुरुगृहमें रहकर पढे। यहां यह कह देना भी आवश्यक है कि अग्रसेनजी का जो पुत्र जिस विद्वान् के यहां पढ़ा उसीको उसने अपना पुरोहित स्वीकार किया। अब भी अग्रवालोंका ब्राह्मणोंसे पुरोहित्यक सम्बन्ध चला आता है। वर्तमानमें अग्रवाल वैश्योंके जो गोत्र प्रचलित है, वे अग्रसेनजी के पुत्रोंके नाम में नहीं बल्कि पुरोहितों के नामपर हैं। उस समय ऋषियोंके कितने ही गुरुकुल खुले हुए थे। जिस ऋषिने जिस गुरुकुल की स्थापना की थी उसीके नामसे वह प्रसिद्ध हुआ। जैसे जगद्गुरु श्रीमच्छाङ्कराचार्य्य (आदि) भगवान्के प्रसिद्ध मठोंके वर्तमान अधिकारी अब भी शङ्कराचार्य्य के नाम से ही परिचित है। जो हो अग्रसेन जी ने अपने १८ पुत्रोंकी भिन्न भिन्न १८ ऋषियोंके यहां पढ़नेके लिये भेजे थे उनका बड़ा पुत्र जिस ऋषिकुलमें पढ़ता था वह गर्ग ऋषिके नाम से विख्यात था। अग्रसेनजी ने अपने सबसे छोटे पुत्रको भी उसी ऋषिकुलमें भेजा पढ़ाई पूरी हो उसके बाद गृहस्थ होनेपर उनके बड़े बेटेका ऋषिकुलके नामपर गर्ग गोत्र और छोटेका गौण प्रसिद्ध हुआ। गर्ग और गौण है वास्तव में एक ही। ऐसे ही १८ पुत्रोंके १७॥ ऋषियोंके नामसे १७॥ गोत्र हुए और पहचानके लिये गौण गोत्र आधा रखा गया। यह हम पहले कह चुके हैं कि अग्रवालोंके प्रचलित १७॥ गोत्र पुरोहितोंके नाम से हैं क्योंकि उस समय ही

प्रथा प्रचलित थी। उस समय जिन पुरोहित यजमानोंका गोत्र एक है उन्हीं का प्राचीन सम्बन्ध ठीक कहा जा सकता है। अस्तु,

अग्रसेनजी के वे १८ पुत्र सब प्रकारसे सुयोग्य बनकर आनन्द पूर्व्वक यहां तक विस्तार हुआ कि लाखो घर अग्रोहामें बस गये। सब मिल जुलकर प्रेमसे रहते थे। यह लोगों की कहावत प्रसिद्ध है कि वे उस समय अपने किसी भाईको दरिद्रके दुःखसे दुःखी नहीं रहने देते थे। परोपकारी इतने थे कि एक एक रुपया और एक एक ईंट जोड़ा गरीबको देकर उसे भी अपने बराबर में लक्षाधीश बनालेते थे परन्तु सब दिन नहीं बराबर जातकी कहावत के अनुसार अग्रवंशके भाग्यने भी पलटा खाया फूट देविने प्रवेश किया। फल यह हुवा कि, पारस्परिक द्वेषकी आगने भडक कर एकता की ऊँची इमारतको नष्ट भ्रष्टकर दिया। शत्रुओंने अवसर पाकर अग्रोहेको खूब लूटा। इस लूटका समय विक्रमीय सम्वत् ७५८ के लगभग है तब से अग्रवाल पानीपत. महिम, हिसार, कोल, नारनोल, झुंझुनू आदि शहरोमें आवाद हुए। इस समय ऐसा कोई विरला ही ग्राम होगा जहां अग्रसेनजी के वंशधर अग्रवालो का निवास न हो केवल अग्रसेनजी महाराजका प्राचीन अग्रोहा अग्रवाल विनाश शून्य स्थान ऊजड़ पड़ा है अग्रोहा शहर की दुर्दशा हो रही है।

कई लोगोंका यह विचार है कि उपरोक्त राजचिह्न अग्रवाल जाति को दिल्ली के बादशाहों की तरफ से प्रदान हुए थे परन्तु उनका यह अनुमान ठीक नहीं है। बात यह है कि राजचिह्न अग्रवाल जाति में उस समय से चले आते हैं कि जब यह जाति इन्द्रप्रस्थ के राजसिंहासन पर आरूढ़ थी, जब इस जाति का राज्य चला गया तो तंवर और चौहान वंशके राजाओं ने और उनके पश्चात् मुसलमान बादशाहों ने इतनी कृपा जरूर की कि यह राज चिन्ह छीने नहीं जिसके लिये इस जाति की तरफ से उन महानुभावों को जितना धन्यवाद दिया जाय उतना थोड़ा हैं

मुन्शी देवीप्रसादजी के कथन से यह भी पाया जाता है कि अग्रवालोंमें

दिवाकर नाम का राजा जैनी हो गया था सम्वत् १२५० विक्रमी में शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरीने अग्रोहेका राज्य दिवाकर की सन्तान से छीन लिया यह नहीं कहा जासकता कि सम्वत् १२५० में अग्रोहेका जो अन्तिम राजा था वह जैन था या वैष्णव।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी की रची हुई पुस्तक की घटनाओं को संक्षेप में वर्णन कर देना अनुचित नहीं है क्योंकि समय का वर्णन न होते हुये भी उस पुस्तक में बहुत सी बातें ऐसी हैं कि जिनसे इतिहासकार को बहुत कुछ सहायता मिल सकती है। भारतेन्दुजी की पुस्तक में घटना इस प्रकार है।

(१) अग्रवाल जाति का मुख्य देश पश्चिमोत्तर प्रान्त है।

(२) प्रथम वैश्य का नाम धनपाल था। उसकी राजधानी दक्षिण में प्रताप नगर थी। धनपालके आठ पुत्र हुए (१) शिव, (२) नल, (३) अनिल (४) नन्द, (५) कुन्द, (६) मुकुन्द, (७) बल्लभ, और (८) शेखर और एक बेटी हुई जिसका नाम मुकुटा था जो याज्ञ वल्क्य ऋषिसे विवाही गई, आठ पुत्रों का विवाह अश्वविद्या शालिहौत्र के आचार्य्य बिशाल राजा की आठ बेटियों से हुआ जिन का नाम (१) पद्मावती, (२) मालती (३) कान्ति, (४) शुभा, (५) भव्या, (६) भवा, (७) राजा और (८) सुन्दरी था।

(३) आठ पुत्रों में से शिव के वंश में विश्व नाम राजा जम्बूद्वीप में हुआ। विश्व के वैश्य हुआ। उसके वंश में सुदर्शन हुआ। उसका पुत्र धुरन्धर हुआ इसका पड़पोता सकाधि हुआ। इस के वंश में मोहनदास हुआ। जिसने कावेरी के तट पर श्रीरंगनाथ जी के मन्दिर बनबाये मोहन दास का पड़पोता नेमिनाथ हुआ जिसने नैपाल बसाया उसका पुत्र बृन्द हुवा, इसके वंश में गुर्जर बहुत प्रसिद्ध हुआ जिसके नाम से गुजरात बसा इसके वंश में हीर नाम एक राजा हुआ। उसके रंग इत्यादि सौ पुत्र थे। रंग का पुत्र विशोक, उसका मधु और मधुकामहीधर हुआ इसके वंश में बल्लभ नाम राजा हुआ उसका पुत्र राजा अग्र, (अग्रसेन) अथवा अग्रनाथ

हुआ। राजा अग्रने कुमुद नाम नागराज की कन्या माधवी से विवाह किया यह माधवी सब अग्रवालों की जननी है।

(४) अग्रसेन हरिद्वार से कोल्हापुर गया वहाँ नागराज महीधर की कन्या से विवाह किया और फिर दिल्ली की तरफ आया।

(५) राजा अग्रसेन के राज्य की सीमा इस प्रकार थी।

उत्तरमें हिमालय पर्वत और पंजाब की नदियाँ, दक्षिण और पूर्वमें गंगा थी पश्चिम में यमुना से लेकर मारवाड़ तक का देश था, राज नाम अग्रोहा था दूसरा बड़ा नगर उसके राज्य में आगरा था।

(६) राजा अग्रसेन ने १८ यज्ञ किये जिनमें १७ तो सम्पूर्ण हो गये अठारहवें यज्ञ में पशु हिंसा से घृणा हो गई इसलिये वह आधा रह गया।

१७॥ यज्ञ से १७॥ गोत्र उत्पन्न हुए, यह भी कहा जाता है कि एक समय बर और कन्या विवाह एक ही गोत्र में हो गया इसलिये एक नया गोत्र बनाया गया, और उसको आधा गोत्र ठहराया गया।

(७) १७॥ गोत्र इस प्रकार हैं।

(१) गर्ग (२) गोयल (३) गावल, (४) वत्सल, (५) कासिल, (६) सिंहल, (७) मंगल, (८) कन्छल, (९) तिंगल (१०) ऐरण, (११) टैरण, (१२) ढिंगल, (१३) तित्तल, (१४) मित्तल, (१५) तुन्दल, (१६) तायल, (१७) गोभिल और (१८) गवन, अंतका गवन आधा गोत्र समझा जाता है।

(८) राजा अग्रके पश्चात् उसका बेटा विभु गद्दीपर बैठा इसके वंश में राजा दिवाकर जैनी हो गया। जिस को इतिहास में प्रभाकर बर्द्धन लिखा है।

(९) राजा उग्रचन्द्र के समय से राज्य घटने लगा यहाँ तक कि संवत १२५० में शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी ने अग्रोहे का राज्य अग्रवालोंके हाथ से छीन लिया।

(१०) अग्रवाल शब्द का अर्थ होता है अग्र का बालक अथवा राजा अग्रसेन की सन्तान।

जो दस बातें भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी की पुस्तक से छांट कर लिखी गई है अब देखना यह है कि उनसे इतिहास ज्ञान कितना प्राप्त होता हैं इन दस बातों में निम्न लिखित बातें ऐतिहासिक कही जा सकती है

(१) नागराज बासुकी जिसकी पुत्री से राजा अग्र या उसके पुत्रों का विवाह होना वर्णन किया गया है ऐतिहासिक नागवंश है।

(२) गुर्जर और अहिर जिनका नाम राजा अग्र से पहले आया है इतिहासिक जातियाँ हैं।

(३) यज्ञ में पशु का न मारना या बंद हो जाना ऐतिहासिक बात है जो धर्म सम्बन्धी है।

अग्रवाल शब्द मीमांसा।

सबसे पहले अग्रवाल शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में निश्चय कर लेना उचित जान पड़ता है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी ने "अग्रवालों की उत्पत्ति" नामक पुस्तक में अग्रवाल शब्द को अग्र और बाल दो शब्दों से मिला हुआ माना है, और इसका अर्थ किया है अग्र का बालक, अर्थात् राजा अग्रसेन की सन्तान, और अग्रवाल शब्द का अर्थ प्रसिद्ध भी ऐसा ही है जैसा कि भारतेन्दु जी ने किया है। अब देखना यह है कि क्या यह अर्थ ठीक है, व्याकरण शास्त्र के नियम से इस का अर्थ में कोई आपत्ति नहीं हो सकती परन्तु देखा जाता हैं कि अन्य जातियों के अन्त में भी बाल शब्द लगा हुआ है जैसे ओसवाल, खंडेलवाल और पल्लीवाल इन तीनों जातियों के अन्त में जो वाल शब्द लगा हुआ है उससे बालक या सन्तान का अर्थ सिद्ध नहीं होता। बल्कि रहने वाला या निवासी सिद्ध होता है जैसा कि ओसवाल वास्तब में ओसवाल, खंडेवाल वास्तव में खंडेवाल

और पल्लीवाल वास्तव में पालीवाल सिद्ध होता है इन सब शब्दों में उन स्थानों का नाम मिला हुआ है जहाँ कि इन जातियों की उत्पत्ति हुई थी जैसा कि ओस या में ओसवालों की, खंडेले में खंडेलवालों की और पाली में पल्लीवालों की उत्पत्ति हुई थी। अब देखना है कि अग्रवाल शब्द में भी किसी स्थान का नाम मिला हुआ है या नहीं। अवश्य मिला हुआ है। इन सिद्धान्त से अग्रवाल शब्द का अर्थ होता है अगरोहेवाल या अगरोहे का रहने वाला। व्यवहार में रात दिन बोलने से अगरोहे का हैं अक्षर लोप हो गया और अगरोहेवाल की जगह अग्रवाल बोला जाने लगा, जैसा कि ओसवाल शब्द असल में ओसयावाल था। रात दिन की बोल चाल में ओसया का या अक्षर गिर गया और खंडेलेबाल शब्द में से खंडेला का अ अक्षर और पालीवाल में से पाका अक्षर गिर गया।

उपरोक्त कारणों से मेरी तुछ बुद्धि में जहाँ अग्रवाल शब्द का अर्थ अग्र का बाल हो सकता है वहाँ उसका अर्थ अगरोहेवाल या अगरोहे का रहने बाला भी हो सकता है। दूसरी जातियों के नाम का अर्थ देखने से अग्रवाल शब्द का अर्थ अगरोहे का रहने वाला भी ही ठीक जचता है, भारतवर्ष में अटक से कटक और काशमीर से कुमारी तक जितने अग्रवाल पाये जाते हैं सब अपना निकास अगरोहे से बनाते हैं, इसलिये सबसे पहले अगरोहे का हाल लिखा जाता हैं।

Agroha is an ancient town in the Fatehabad Tahsil of the Hissar District in the Punjab and is situated in 29°/20′ north, and 76°/38′ east thirteen miles north-west of Hissar on the Delhi Sirsa Road.

Agroha is said to be the original seat of the Agarwal Banias who flourished more than 2000 years ago. This town was once a place of great importance. The ruins of a Fort said to have been built by Agarsen are still visible about half a mile from the existing

village. Near the village is a large mound which evidently consists of the debris of a large town. These debris show that at one time Agroha was certainly a large and important city and place of great importance. It is very likely that this town was a wealthy and prosperous settlement of Banias from eastern Rajputana at the time that the Ghaggar was a perenial river and fertilized a far larger area than it does now. Excavation made in the Agroha mound in 1889 brought to light fragments of sculpture and images. Bricks of all sizes and coins have also been found there. In one place the walls of a substantial house have been laid bare, while a large depression near the mound in which excellent crops are now raised is evidently the site of an ancient tank. Agarsen's Fort which dates from before the beginning of the Christian era is a modern constructure when compared with these remains.

Agroha was captured by Mohammad Ghori in 1194 or 1195 A.D. Since that time the Agarwal Banias have been scattered over the whole peninsula. The clan comprises many of the wealthiest men in India. The Emperor Ferozshah Tugiak who reigned from 1351 to 1388 A D. made Hissar his capital instead of Delhi. He ordered a new fort and a new palace to be built for himself. In the construction of these royal buildings the materials were brought from the old Hindu Temples but the large quantities were in all probability brought from the site of the town of Agroha which had lost much of its former importance. During the rise of Sikh power Raja Amarsing of Patiala built a

fort on the old mound of Agroha in 1774. A D

Gazetters of the Punjab and the Hissar District.

प्रतापनगर अग्रवाल वंश भूमि अगरोहा।

पंजाब प्रान्त के हिसार जिले में अगरोहा एक बहुत प्राचीन नगर है और हिसार से १३ मील के फासले पर उत्तर पश्चिम की तरफ भूमध्य रेखा से १९०—२०' उत्तर और ७००—३८' पूर्व में उस सड़क पर बसा हुआ है कि जो सिरसा से दिल्ली को जाती है। यह नगर अग्रवालों का जन्मस्थान कहा जाता हैं जो आज से दो हजार वर्ष पहले बहुत शक्तिशाली थे। यह नगर किसी समय बहुत विख्यात था। वर्तमान गांव में आध मिल के फासले पर एक प्राचीन दुर्ग के खंडहर पड़े हुए हैं। कहा जाता हैकि इस दुर्ग को राजा अग्रसेन ने बनवाया था। खंडहरों के देखने से साबित होता है कि जरूर किसी समय यह नगर एक बहुत बड़ा शहर रहा होगा और बहुत विख्यात होगा। अनुमान यह है कि जिस समय घघर नदी बारह महीने बहती थी और आज कल की अपेक्षा पृथ्वी के अधिक भाग को सींचती थी उस समय अगरोहा उन धनाढ्य और भाग्यशाली बनियों की बसती थी कि जो पूर्वी राजपुताने से आकर यहाँ बसे थे। सन् १८८९ में जब खंडहरों को खोदा गया तो पत्थर की मूर्तियां सिके और कई तरह की छोटी बड़ी ईंटे निकलीं। एक जगह एक बड़ी भारी हवेली की दीवारें जूयूं की त्यूं खड़ी हुई हैं और पास ही में एक निचली जमीन में तालाब के चिन्ह है। अब इस जगह अनाज की अच्छी फसल होती है। अग्रसेन का किला जो इसवी संवत् के आरंभ से पहले का है देखने में नया मालूम होता है।

सन् ११९४ या ११९५ में शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी ने अगरोहा अग्रवालों के हाथ से छीन लिया। उस समय से अग्रवाल लोग इधर उधर

जाकर सारे भारतवर्ष में फैल गये। हिन्दुस्तान में अधिक धनाढ्य आदमी इसी जाति में है। बादशाह फ़िरोजशाह तुगलकने (जिसने सन् १३५१ से १३८८ तक राज्य किया) दिल्ली की जगह हिसार को अपनी राजधानी बनाया था। एक नया किला और एक नया महल बादशाह के लिये बनाया गया। इन इमारतों में जो पत्थर लगे वे हिन्दुओं के मन्दिर तोड़कर लाये गये थे। परन्तु अधिक संख्या में अगरोह के किले से लाये गये:थे। जो अपनी प्राचीन प्रभुता खो चुका था। सन् १७७४ में जब सिक्खों का भाग्य उदय हुआ पटियाला नरेश राजा अमरसिंह ने अगरोहा के खंडहरो पर एक किला बनवाया था।

गजेटीयर आफ़ पजाब ऐंड हिसार।

भारत वर्ष में प्रत्येक अग्रवाल अपने को राजा अग्रसेन की सन्तान बताता है और अगरोहे को अपना जन्म स्थान मानता है। अगरोहे का हाल तो लिखा जा चुका। अब राजा अग्रसेन का कुछ हाल लिखा जाता है। इसके बाद राजा वासुकि नाग का हाल लिखा जायगा क्योंकि निर्यिवाद रूप से अग्रवालों का मात्रि वंश वासुकि नाग से माना गया है।

राजा अग्रसेन या उग्रसेन।

पुराण और इतिहाससे राजा अग्रसेनका नाम इस प्रकार पाया जाता है

(१) भगवान श्री कृष्णचन्द्र के नाना और कंश के पिता महाराज अग्रसेन मथुरा के राजा थे, इनका विवाह भी नाग कन्या से हुआ था। यह राजा अग्रसेन द्वापर युग के अंत और कलु के आरम्भमें हुए हैं। यदि हिन्दुओं का विश्वास ठीक माना जावे तो इस अग्रसेन को हुए आज से ५००० वर्ष होते हैं परन्तु यह समय इतिहासकारों को मान्य नहीं है। वे कृष्णचन्द्र को आज से अनुमान ३००० वर्ष पहिले मानते है। यह राजा अग्रसेन चन्द्रवंश में थे।

(२) एक राजा अग्रसेन नाम का महाराजा युधिष्टिरसे तेरहवीं पीढ़ीमें इन्द्रप्रस्थके राज्य सिंहासन पर बैठना पाया जाता है। इनका समय आज से २८०० वर्ष पहिले मानना पड़ता है यह राजा अग्रसेन भी चन्द्रवंश में थे।

(३) एक राजा अग्रसेन नाम का आबू के पवार वंश में सन् ८३ में हुआ है।

(४) चौथा अग्रसेन राजा पल्लक नगर का स्वामी था यह स्थान मदरास प्रान्त के जिले नालौर में वाकै था, इस राजा उग्रसेन को सम्राठ समुद्र गुप्त ने अपना अनुयायी बना लिया था सम्राट् समुद्र गुप्त का शासन काल सन् (३२६ से ३७५) तक है। इसलिये यह राजा उग्रसेन भी इसी समय में माना जा सकता है। यह उग्रसेन जातिका पल्लव था इसका देश कावेरी नदी के तट पर था। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी ने लिखा हैं कि महाराज उग्रसेन के पूर्वजों ने कावेरी के तट पर बहुत से मन्दिर बनवाये थे। इस बात को देखते हुए पल्लव राज अग्रसेन नम्बर ४ की तरफ ध्यान देना ही पड़ता हैं। मैं ठीक नहीं कह सकता कि जिस राजा अग्रसेन अग्रवाल जाति अपना निकास बताती है इन चारों में से कोई हो सकता है या नहीं, परन्तु कुछ चेष्टा इस बात के जानने की अवश्य की जावेगी, मेरा अनुमान है कि पल्लव नरेश राजा उग्रसेन औरों की अपेक्षा अगूवालों का अधिक सन्बन्ध है इस विषय को पल्लवों की व्याख्या में विस्तार पूर्वक लिखा जायगा।

नागवंश।

यह बात निर्विवाद रूप से मानी गई है कि अग्रवाल जाति का मात्रिकुल नागवंश है। इसलिये नागवंश का हाल विस्तार पूर्वक लिख देना जरूरी समझा गया। राजस्थान के इतिहास में करनल टाड साहब लिखते है कि संस्कृत भाषा में नाग और तक्षक सांप को कहते है। भारत के इतिहास और पुराणों में जहां तक्षक जातिका उल्लेख है वहां उसका अभिप्राय

नागवंश से हैं। राजा परिक्षित का एक तक्षक द्वारा मारा जाना और नागों का महाराज जन्मेजय द्वारा-नाश किया जाना रूपक अलंकार में लिखा गया है। यह घटना वास्तव में ऐतिहासिक है।

यूरुपियन इतिहासिकार लिखते हैं कि पहला आक्रमण नाग जाति ने भारत वर्ष पर ईसासे अनुमान ६०० वर्ष पहले किया था। उस समय उनका राजा शिशुनाग था। चन्द्रगुप्त जो भारत का प्रथम सम्राट माना जाता है मौर्य था। मौर्यवंशको पुराणों में तक्षक लिखा है प्रमार वंशके प्राचीन शिला लेखोंमें मौर्य को प्रमार की एक शाखा मानकर तक्षक लिखा है। मौर्य वंशके जो शिला लेख चित्तोरगढ़ में मिले हैं उनमें भी मौर्यवंशको तक्षक ही लिखा है।

टाड साहब लिखते हैं कि राजा शालिवाहन भी तक्षक था। जिसने दक्षिण भारत में बिक्रम सम्वत् की जगह अपना सम्वत् प्रचलित किया।

मीराते सिकंदरी एक फारसी भाषा में भारतवर्ष का इतिहास है। उसमें लिखा है कि शेष नाग अपने वंश की तेईसवीं पीढ़ी में था। इससे पाया जाता है कि नागवंश का पहला राजा शेषनाग नहीं था।

यूरुपियन इतिहासवेताओं का कहना है कि शेषनाग ईसा से ६०० वर्ष पहले भारतवर्षमें आया। परन्तु उनका यह अनुमान ठीक नहीं जाना जाता। कहीं कहीं यूरूपियन इतिहासवेताओं की बातों का उन्हीं की लिखी हुई बातों से खंडन हो जाता है। सबसे पहले हम टाड साहब को लेते है।

राजस्थान के इतिहासमें टाड साहब भगवान श्रीकृष्णके समय को ईसा से ११०० वर्ष पहले मानते है फिर आप कहते हैं कि महाराज परिक्षित तक्षक के हाथसे मारे गये जिसका बदला महाराजा जन्मेजयने तक्षक लोगों को लाखों की संख्या में मार कर लिया। टाड साहब का यह भी कहना है कि तक्षक और नाग वंश एक ही हैं। परिक्षित और जन्मेजय का शासन काल महाराज युधिष्टिर से यदि १०० वर्ष पिछे भी माने तो तक्षक लोगों का भारतवर्ष में ईसा से १०० वर्ष पहले पाया जाना सावित होता है

फिर नहीं मालूम शेष नाग को ईसा से ६०० वर्ष पहले भारत वर्ष में आना किस तरह मान लिया गया इससे पाया जाता है कि शेष नाग जातिका समय निर्णय करने में यूरूपियन। ऐतिहासवेताओंने भूल को है यातों तक्षक और नागको न्यारा न्यारा मानना पड़ेगा या शेष नाग को उनका प्रथम राजा न मान कर यह मानना पड़ेगा कि भारतवर्ष में तक्षक और नाग लोग थे तो पहले से परन्तु राज्य शेष नाग के समय में उनको प्राप्त हुआ महाभारत के पढ़ने से जाना जाता है कि युधिष्टिरादि पांडवों को खांडव प्रस्थ का राज्य दिया गया था जहां उन्होंने जंगल और वन को साफ़ करके इन्द्रप्रस्थ नगरी बसाई थी जिसको आजकल दिल्ली कहते हैं। दिल्ली और मथुरा के बीच देश का स्वामी काली नाग था उसको कृष्ण ने दमन किया था इसके अतिरिक्त जब दुर्योधन ने भीम को विष देकर गंगाजी में डाल दिया था तो उस को नाग लोग उठाकर लेगये थे और नागराज ने भीमसेन को पहचान कर कहा था कि यह मेरे दोहिता का दोहिता है क्योंकि नागराज की बेटी से शूरसेन उत्पन्न हुए थे और शूरसेन की बेटी कुन्ती के गर्भ से भीमसेन ने जन्म लिया था। महाभारत की कथा को छोड़ कर यदि रामायण को देखा जाये तो वहाँ भी यही पता चलता हैं कि लंकेश्वर रावण की रानी मंदोदरी भी नाग कन्या थी और उसकी पुत्र वहु सुलोचना भी नाग पुत्री थी। इन बातों से सिद्ध होता है कि नाग या तक्षक लोग हिन्दुस्तान में आर्य्य जाति की प्रभुता से भी पहले के हैं यह जरूर हैं कि आर्य्य जाति के राजाओं से उनका सम्बन्ध हुआ और परस्पर विवाह शादी होने लगे।

बात यह जान पड़ती है कि पांडवों से पहले नाग लोगों का राज्य रहा होगा। पांडवों ने उनका राज्य छीनकर इन्द्रप्रस्थ का राज्य स्थापित किया होगा। नाग लोग अवसर देखते रहे होंगे कि जब मौका मिले अपना राज्य वापिस लेलें इसी अभिप्राय से उन्होंने महाराज परीक्षित के प्राण लिये होंगे फिर महाराज जन्मेजय ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के निमित्त उनका सर्वनाश करने की चेष्टा की होगी कि जिससे उनको फिर सिर

उठाने का अवसर न मिले।

पुरानी दिल्ली में (महरौली) जो आज कल एक लोहे की लाठ गड़ी हुई है और जिस पर संस्कृत में कुछ खुदा हुआ है उसके सम्बन्ध में यह दंत कथा प्रसिद्ध है कि इसको अनंगपाल तुंवर ने ब्राह्मणों के कहने से यह जान कर गड़वाया था कि इसका सिरा वासुकी नाग के सिर में गड़ गया और अब तुवंरों का राज्य अटल हो गया परन्तु राजा को ब्राह्मणों की बात पर विश्वास नहीं हुआ और उसने अपना संदेह दूर करने के लिये कीली को उखाड़ने की आज्ञा दी, जब कीली उखाड़ी गई तो उसकी नोक रक्त में भिगी हुई थी राजा ने उसको ज्यूँ का त्यूँ गाड़ने को कहा परन्तु वह पहले की तरह पक्की नहीं गड़ी और ढीली रह गई कई आदमियों का कहना है कि ढीली शब्द विगड़ कर दिल्ली हो गया।

अब यदि हम कवियों के रूपक अलंकार को छोड़ कर सच्ची बात जानने की चेष्टा करें तो हम को बहुत कुछ इतिहास का पता लग सकता है बात इस तरह जान पड़ती है कि जिस राजा ने यह लाठ गड़वाई थी उसने नाग राजा को दमन किया होगा और रक्त में भीगने का यह मतलब जान पड़ता है कि नाग लोग अधिक संख्या में मारे गये होंगे जिससे उनको फिर सिर उठाने का साहस न हो।

पालीताने के इतिहास में लिखा है कि आज से १८०० वर्ष पहले वासुकि नाम राजा राज्य करता था, समुद्र गुप्त सम्राट के समय में भी नरवर या पद्मावती में गणपति नाम नाग का राज्य था और उसके आस पास भी छोटे छोटे नाग राजा राज करते थे इन सबको सम्राट समुद्र गुप्त ने दमन किया था।

मिसटर वी ए० सिमिथ (V. A. Smith) साहब भारत के प्राचीन इतिहास में लिखते हैं कि पुराणों की सूची को देखते हुये यदि किसी वंश को इतिहासिक महत्व दिया जा सकता है तो वह शेषनाग वंश है जो राजा

शिशुनाग के नाम से चला है शेषनाग उस देश का राजा था जिसको आज कल पटना और गया जिला कहते हैं। उसकी राजधानी राजगृही नगरी थी जो भूमध्य रेखा से उत्तर की तरफ २५० और पूर्व की तरफ ८५०—२८' पर बसी हुई थी और जो आज कल एक छोटा गाँव रह गई ; इतिहासवेत्ता ओं का अनुमान है कि जैन धर्म के २३ वें तीर्थंकर पारसनाथ जी स्वामी भी इसी वंश में थे क्योंकि उनके सिर पर आज तक सर्प का छत्र बनाया जात है पारस नाथ का समय ईसा से ६५० वर्ष पहले माना जाता है। महावीर का समय ईसा से ५३३ वर्ष पहले माना गया है। बाबू पूर्णचन्द्र जी नाहर ने पारस नाथ का जन्म ईसा से ८७७ वर्ष पहले माना है।

तक्षक जाति का जन्मस्थान तक्षक खंड बताया जाता हैजिसको आज कल ताशकंद कहते हैं और जो चीनी तुरकिस्थान में है भारतवर्ष में तक्षक शिला इनको राजधानी मानी गई है जो आज कल रावलपिंडी जिले में पृथिवी के गर्भ से खोदी जा रही है।

शेष नाग लोगों का आदि स्थान शेष स्थान बताया जाता है जिस को आज कल सीसतान कहते हैं और जो फारिस देश के अन्तरगत है।

सर डेनजिल इबेटसन साहब (Sir Denzil Ibbetson) "पंजाब की जातियों" में लिखते हैं कि गोगापीर नाग वंशीयों का सबसे बड़ा देवता है। जिसका मतलब यह है कि चौहान भी नाग वंशी है।

वासुकि नाग

वासुकि नाग की कन्याओं के साथ राजा अग्रसेन या उसके बेटों का विवाह होना तो सबने मान लिया परन्तु यह किसी ने नहीं लिखा कि राजा वासुकि कौन था और कब हुआ बहुत से मूर्ख अब तक नाग कन्याओं को साक्षात सर्पणी या नागण मानते हैं और कहते हैं कि यह नागण दिनमें सर्पणी और रात में स्त्री हो जाती थीं इन मूर्खों को यह ज्ञात नहीं है कि

नाग वास्तव में एक मनुष्यजातिका नाम था जिन्होंने कि भारतवर्ष में बहुत समय तक राज्य किया है। अब हमको यहाँ पर यह देखना है जिस वासुकि नाग की कन्याओं के साथ राजा अग्रसेन या उसके पुत्रों का विवाह हुआ था वोह किसी मनुष्यका नाम है या जाति का यद्यपि तक्षक और वासुकि जाति वाचक शब्द मालूम होते हैं तथापि इस जगह वासक या वासुकि जातिका अथ न होकर मनुष्य के नाम का ही ठीक जान पढ़ता है। अब यह प्रश्न होता हैं कि यह वासुकि कौन था और कब हुआ।

पहले पहल रामायण से जाना जाता है कि लंकेश्वर रावण की पटरानी मन्दोदरी और उसके पुत्र मेघनाद की धर्म पत्नी सुलोचना नाग कन्या थी, रामचन्द्रजी का समय इतिहासिक दृष्टि से आजसे अनुमान चार हजार वर्ष पहले माना गया हैं यदि मन्दोदरी और सुलोचना वास्तवमें नाग कन्या थी तो नाग जाति का आज से चार हजार वर्ष पहले मौजूद होना मानना पड़ेगा।

महाभारत में लिखा है कि भगवान कृष्णचन्द्र के नाना अग्रसेनकी रानी नाग कन्या थी, कृष्णजी ने यमुना में काली नाम नाग को दमन किया था, यदि महाभारत की घटना ठीक है तो कम से कम आज से तीन हजार वर्ष पहले भी नाग जाति का स्तीत्व भारतवर्ष में पाया जाता है, इसके पश्चात् ईसा से ६०० वर्ष पहले तो यूरोपियन इतिहास वेत्ता भी शेष नाग वंश की स्थिति मानते हैं, परन्तु इन घटनाओं में अब तक वासुकि शब्द नहीं देखने में आया, यूरोपियन इतिहासकार लिखते हैं कि ईसा से अनुमान २०० वर्ष पहले कुशण जाति ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया था। इस कुशण वंश में महाराज कणिशिक बड़ा प्रतापी और शक्तिशाली नरेश हुआ है, शक सम्वत् जो ईसा से ७८ वर्ष पीछे आरम्भ होता है, और जिसका प्रचार दक्षिण में अधिक होता है इसी कणिशिक द्वारा चलाया जाना माना गया है यद्यपि इसमें इतिहास कारों का मत भेद है कणिशिक के बेटे का नाम वासुशिक. (Vasishaika) पोते का नाम हुईशिक (Huishika) और परपोते

का नाम वासुदेव (vasudeva) था विनसेंट स्मिथ साहब वासुशिक और वासुदेव को एक नाम मानते हैं, पंडितों का कहना है कि वासिशिक या वासुदेव को ही वासुकि या बासक नाग कहते हैं, इन तीन का शासन काल ईसवी सन् १५२ सं २२६ तक माना गया है, करनाल डिसट्रिक गजेटोयरमें इस प्रकार लिखा हुआ है।

In the first two centuries of the Christian era, the tract was probably included in the empire of the Indo Scythian Dynasty Known the Kushan. Safaidon on the borders of the District is still pointed out as the site of the great slaughter mentioned in the Mahabharat, It has been conjectured that this is a reference to the Snake taken of the Scythians, and alludes to some incident in the down fall of the Kushan Empire in 200 A. D.

District Gazetteer of Karnal

इसका यह मतलब है कि करनाल का जिला ईसा की पहली और दूसरी शताब्दी में कुशन राजाओं के शासन में था, कहा जाता है कि सपीदम में बहुत से नाग मारे गये थे, अनुमान यह है कि ईसवी सन् २०० में जब कुशन राज्य विध्वंश हो गया तो बहुत से नाग मारे गये होंगे।

इस लेख में कुशण लोगों को नाग माना गया है इतिहास में लिखा है कि वासुदेव चौहान जो प्रथम पुरुष चौहान का वंशधर था पहले पहल सम्वत ६०८ विक्रमी में अहिच्छत्र पुर से सांभर में आया था अब हम यह देखन चाहते है कि राजा अग्रसेन से इस वासुदेव का कुछ सम्बन्ध मिलता है या नहीं चीनी यात्री ही युनिथिसाँग जो ईसा की सातवीं शताब्दी के आरम्भ में यहाँ आया था और अहिक्षेत्र पुर में भी रहा था लिखता है कि अहिक्षेत्र पुर में नागसर नाम का बहुत अच्छा सरोवर या तालाव बना हुआ है इससे पाया जाता है कि चौहान लोग नाग वंशी हैं, संस्कृत में नाग को अहि भी कहते हैं इससे भी सावित होता है कि चौहान ज़रूर नाग वंशी है।

छत्र और चँवर महाराणा उदयपुर और फौजा लशकरी अग्रवाल मेवाड़।

अग्रवाल जाति की छत्र और चँवर पर जही मलकियत है इस का जिक्र पहले भी आचुका है कि महाराजा अग्रसैनजी से चला आता है पर अभी इस वक्त महाराजा उदयपुर की रियासत में रोक टोक हो गई थी इस वक्त जो जो खतों किताबत हुई वह हम नीचे लिखते हैं।

महाराजा उदयपुर रियासतमें जब अग्रवाल लोग जाकर बसे वह अरसा सम्वत् १९३४ वीक्रमीय हैं इन्होंके वहां जाने पर शादी का जो सबसे पहला अवसर आया तब इन्होंने रियासत समझकर प्रथम अवसर शादीका था छत्र चँवर नकारा निशान आदिके लिये महाराणा उदयपुर से हुक्मलिया था वहां यह दरख्वास्त पेशकी गई थी।

सेवामें।

श्रीमान् हिन्दु सुर्य्य भारत भूषण महाराणा उदयपुर मेवाड़ हमारी अरज है के हमारे यहां सगपण किया है सो शादी का लग्न जेठ सुदी ११ सम्वत् १९३४ वी० का हैं जी तावे अरज हमारी यह है के कदीम से हमारी ज़ात अग्रवालों में शादी के समय वर पर छत्र चँवर लगाये जाते हैं यह रिवाज हमारे बादशाही जमाने से है। इस वास्ते अर्ज हमारी यह है के म्हांने कोई रोक टोक न करें इस पुरानी रिस्म को आप भी जानते हैं। सोई वास्ते अरजाऊ हुआ हां कोई दखल नहीं दें। दस्तखत पंच।

इस दरख्वास्त पर हुक्म हुआ सोई नीचे दरज है।

हुक्म राजश्री महकमें खास नं० ४८३३

असल वापिस होवे वाँकी दरख्वास्त हैं शादी के लिये छत्र चँवर की बावत सो ईकी रोक टोक न करें। सं० १९३४ वी० का चैत्र सुदी ११ अप्रैल सन् १८७८ ई०।

नोटः—यह हुक्म दे नकल किताव सफै नं० २४ सरक्युलर नं० ४१ पर दरज हैं वसुली फीस —) जरीये हु० नं० १००९ पोह सुदी १४ सं० १९७४। हुक्म पुलिस

नकल समस्त अग्रवाल फौजा लशकरी के पास भेजी जावे। असल महकमें खास वास्ते हुक्म मुनासिवके मोहरसील हो सं० १९३४ चैत्र सुदी १३

द० मौलवी अब्दुल रहमान खाँ साहब सुपरीनटेनडेन्ट पुलिस व जज अदालत मुतालवेके राज्य उदयपुर। मोहर अदालत

अब सम्वत् १९८२ में अग्रवालों के यहां एक शादी के समय दुल्हापर छत्र चँवर को पुलिस ने रोक दिया तब फिर अग्रवालों ने लिखापढ़ी करी वह दरख्वास्त यह है।

(दरख्वास्त दुसरी)।

भादव बदि ११ सं० १९८२

श्रीमान् जी हुजूर दाम इकबाल हुवा श्रीमहाराणा उदयपुर (मेवाड़) अप्रच्च। म्हारे कदीमी रिवाज शादी के मौकापर छत्र चँवर नगारा निशान है सरूमें म्हां लोगारे सं० १९३४ में उदयपुर में शादी हुई थी जीं मौका पर पैली रियास्त समझकर दरख्वास्त करके हुक्म लियो और अब म्हांने पुलीस तंग करे हैं की असलहुक्म की नकल पेश करो अब म्हां लोगों की दरख्वास्त है कि पुलीस के नाम हुक्म (बक्सा) जावे या अरज है धणी इश्वर परमेश्वर है म्हें लोग सब मेवाड़ के पंच हाजिर हां। दस्तखत पंच।

१ द० पांचु लाल का	२ द० जशकर्ण का	३ द० जीतमांल का
४ द० मुरलीधर का	५ द० गौरी लालका	६ द० गंगा धर का
७ द० गुणक का	८ द० भूरीलाल का	९ द० छगनलाल का
१० द० रामकिशन का	११ द० रूड़मल का	१२ द० मांगीलाल का

हुक्म।

इस दरख्वास्त पर फिर यह हुक्म हुआ कि यह तुम्हारी रिवाज पुरानी कबसे है और क्यों? अगर पुरानी है तो इसका क्या सबुत? भारतवर्ष

को अन्य रियासतों में छत्र चंवर लगाया जाता है या नहीं। अगर लगाया जाता है तो इसका सबूत दो। अगर अन्य रियासतों के अग्रवाल काफी सबूत दे देंगे तो फिर विचार किया जायगा।

खास रुक्का महाराणा उदयपुर मेवाड़।

(सबूत) खतो किताबत।

(नसीराबाद राज्य) ३१-१-२५

सेवामें,

श्रीमान् हिन्दू सूर्य्य भारत भूषण महाराणा उदयपुर, (मेवाड़)

श्रीमान्जी राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन जयपुर के प्रस्ताव नं० २२ वें के आदेशानुसार श्रीमहाराणा साहिब की सेवामें प्रस्ताव की नकल निम्नलिखित भेजता हूं तथा सविनय व सादर प्रार्थना करता हूं कि इस पर उचित ध्यान देंगे, कष्टके लिये क्षमा प्रदान करें।

प्रस्ताव।

हालमें समाचार पत्रों में अग्रवालों के यहां विवाहमें वर पर छत्र चंवर की जो रिस्म है उसपर बहुत चर्चा हो चुकी है। यह रिवाज बहुत प्राचीन है इसका प्रमाण भाट जागोंकी पुस्तकों से मिलता है यह सम्मेलन जिसमें जोधपुर, बीकानेर, भरतपुर, अलवर, कोटा इत्यादि रियासतोंके प्रतिनिधि आये हैं श्रीमान् हिन्दू सूर्य्य भारत भूषण श्रीमहाराणा साहिब से जो हमेशा से हिन्दू मात्र के गौरव मर्य्यादा तथा उनकी रिस्मों की रक्षा करते आये हैं, कर रहे हैं। और आशा है कि करेंगे। प्रार्थना करता हूं कि श्रीमान् इस रस्मको हमेशा की भांति कृपया पूर्ण तथा रक्षा कर समस्त अग्रवाल जातिको अनुगृहीत करें और उदार चित्तता दिखावें। यह रस्म ऊपर लिखी रियसतों में प्रचलित है और राज्यसे किसी प्रकारकी बाधा नहीं है।

आपका आज्ञाकारी—

श्रीनारायण अग्रवाल अवैतनिक मन्त्री,
राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सभा।
(जयपुर राज्य)

श्रीमान्यवर महाराणाजी,

निवेदन है कि कुछ अरसे पहले चंवर छत्रका झगड़ा अग्रवाल और महैश्वरीयों के दरमियान रियासत हैदराबाद दक्षिण में हुआ था जिसमें रियासतकी तरफ से अग्रवालों के हकमें फैसला मिला।

(२ सरा सबुत रियासत कोटा हुक्म)

नकल महकमा खास कोटा मिसल नं० ७।६ सिगा जुड़ीशल मरजुआ व फैसला ६।११।२० हस्ब अर्जी समस्त पञ्चायती अगरवालान भँवर गढ़ निजामत किशनगंज दरबारे मिलने इजाजत दुलह पर चमर छत्र उड़ाने की व वक्त शादी रिपोर्ट निजामत शाहा बाद ३०।८।१८ की रिपोर्ट गिरदावर कानुगोह-देवरी व गीरदावर कानूगोह खटका आई है उनसे चमर छत्र का रिवाज व वक्त शादी नोशेपर करने का मालूम होता है बगैरा ॥ २ ॥

महकमा खास ११।७।१६

दुलह पर छत्रचँमर उड़ाने की इजाजत है। वास्ते तामील माल में जावे

"कृष्ण गोपाल"

H. H. Maharana Sahib Bahadur,
Udaipur.

Chattar, Chamer, Nagara, Nishan has been continiously coming from ancient to be used in marrioge procession police interfers.

Though presenting state sanction of samaj 1934 orders be issued from His Highness which police dont accept. We all Mewar punch are waiting.

No order fovoured for Chatter, Chamer, Nishan vagera. Police pressing this system is from old times, after 1934 order from His Highness which police dont accept. We all Mewar punch are waiting.

Tru copy D/16. 2. 26.

From

The Secretary,
Council of State,
JAIPUR.

To

The private Secretary,
to His Highness the Maharana Sahib Bahadur of Udaipur (Mewar)

Subject:-Request of Agarwala Lashkari Fojva permission to use Nishan, Nagara. Chattra and Chamer on occassion of marriage in their community in Mewar State.

श्रीलालालाजी वकील अजमेर वालेने राज श्री महक्मे खास में १८ अप्रेल १६।२४ अंग्रेजी की दरख्वास्त भेजी को मेवाड़ में अगरवालों को छत्र इजाजत दी जाय इसपर राज श्री महक्मे खास ने उनको लिख दिया गया है हुक्म नम्बरी १८१५७ मिती जेठ बदी सं० १६८० उनको लिख दिया गया है कि इसको यहां रोक नही हैं इसकी मोसल राज श्री महक्मे खास सीगा मुत्तफरीक नम्बर २१७६१६८ की है।

Dear Sir,

In advantage to your letter dated the 18th December 1925, on the subject, I am directed to say that in addition to using Nagara, Nishan and Chamar which are common to other Communities also, the Agarwal Community in the Jaipur state specially enjoys the pirvilege of using Chhattra on occassion of marriage.

(Sd) S. C. Majumdar.
Secretary Council.

* भूत खन्ड समाप्त *

चक्रवर्ती भूपत भये, अग्रसेन महाराज ।
जिनके वंशज अग्रवाल, महाधनी सिरताज ॥

श्रीमहाराजा अग्रसेनजी का दरबार

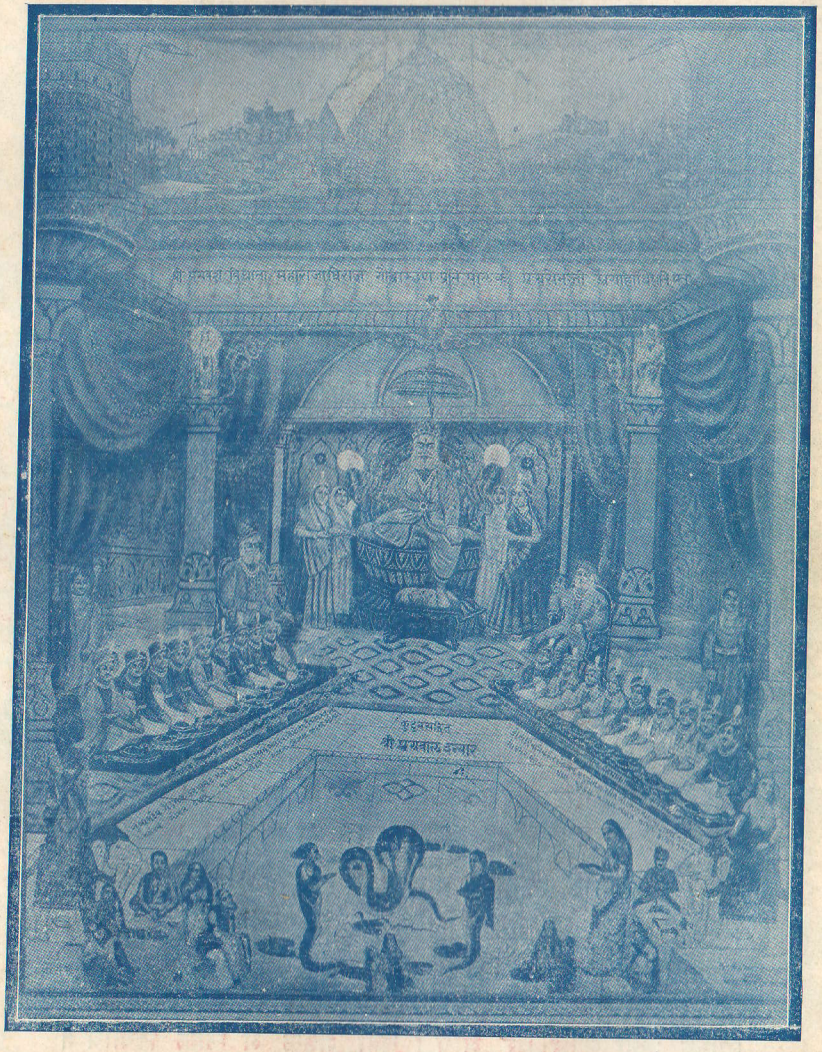

जब तक रवि और शशि रहें, जब तक महि आकाश ।
'शीतल' तब तक अग्रोहा करे, जग में सुयस प्रकास ॥

इतहांसिक घटनाओंके आधार पर चित्रकारने महाराज के दर्बारका यह दृश्य बांधा हैं । अग्रोहा प्रतापनगरके अधिपति अग्रवाल बंश शिरोमणि

अग्रसेनजी महाराज

दोहा—अग्रसेन महराज का दर्शनीय दरबार ।
अग्रवाल जनता इसे देखे दृष्टि पसार ॥
क्यासे क्या अब होगया आदि जन्म स्थान ।
कभी हमारी जातिका उड़ता रहा निशान ॥

चौबोला--उड़ता रहा निशान बना था गढ़ विशाल मन्दर भी ।
चित्र देखिये शोभा जैसी बाहर थी अन्दर भी ॥
छत्तीस हैं तालाब बावली शोभा चौबीस देतीं ।
बावन बुर्ज पताकायें जनु गगन छुए हैं लेतीं ॥
कुएं आला से आला धन्य बनवाने वाला ।
न शक्ती क्षीण तुम्हारी कर सकते हो सभी
करो यदि फिर स्थान उजाला ॥

दोहा—अग्रसेन महाराज के दायें बायें ओर ।
कंवर बिराजत देखिये क्या शोभा इस ठौर ॥
मन्त्री दोनों वृद्ध है जो अति चतुर सुजान ।
रानी दो दासी सहित करती है सन्मान ॥

छन्द--यह चित्र उस समय का है जब नृपवर बन जाने वाले थे । पुत्रोंको सब राजपाटके काम बताने वाले थे ॥ यों कहा आप सब हिल मिल कर अब राज काज करते रहना । बाण-प्रस्थ मुझे लेना है वेद शास्त्रका सच कहना । प्रजा बने व्यौपारी जिससे सदा खजाना अटल रहे । नाम न हो बदनाम जब तलक श्रीगङ्गामें नीर रहे ।

दोहा—शोभा फिर से देखिये हाथी हौदे दार ।
रतन जटित झूले पड़े खड़े होय तैयार ॥
वेद पाठ पण्डित करत धरत ईश का ध्यान ।
विद्वत जनका भी यहां था ऐसा सनमान ॥

चौपाई--क्षत्र नृपति पर शोभा पाता । चंवर सुरा गौका दिखलाता ॥
चोबदार भी हैं बड़भागी । जिनकी लगन नृपति पर लागी ॥
कमल फुल जल पर उतराये । नाग किलोल करत दिखलाये ॥
महल अट्ठारह मंजिल ऐसा । घूमत गगन में मानो जैसा ॥
दीपक जहां काम पर आये । वहां महल में लाल दिखाये ॥
था प्रकास तिमीर नशावन । लागे रात्रि दिवस बनावन ॥
दम २ दमकत मणि कइं भाई । शोभा कवी सो वरनी न जाई ॥

दोहा—भूपत हो केवल नथे अग्रसेन महाराज ।
रतन पती कहती रही उनको सर्व समाज ॥

* श्रीहरिः *

श्रीविष्णु अग्रसेनवंश पुराण

(जिर्णोद्धार खण्ड)

महाराजाधिराज अग्रोहा प्रताप नगराधिपति—

* श्री अग्रसेनजी की जय *

श्री सूर्यवंश अवतंस मुकुटमणि
म हाराज शिर छत्र फिरे
हा थ चमर ओर छड़ी व्यजन लिये
रा जा जिनकी भेंट धरें
ज गमगात मणि जटित भवन लखि
श्री सुरेश मन शोच करें
अ खिल भवन के बीच
ग्र ह नहीं अग्रसेन सम देख परें
से वा गो विप्रन की नित प्रति
न रपति अपने हाथ करें
की ये अनेक यज्ञ व्रत जप तप
ज ब से निज शिर मुकुट धरे
य ह अनुसरण करो सब भाई
(श्री) अग्रसेन दया करें
धर्म सनातन कभी न त्यागो
दास गदाधर अरज करें ॥

नोट-श्रीसनातन धर्मावलम्बीय अग्रवाल सभा कलकत्तामें श्रीअग्रसेन-जयन्ती के उत्सवपर गाई गई आरती ।

श्रीविष्णु अग्रसेनजी महाराज अग्रोहाधिपति

-की-

आरती ।

जय जय अग्रसेन महाराज, भारी भार उठानेवाले ॥
किसमें थी भला ये सामर्थ्य, उजड़ अग्रोहा के अर्थ,
समझकर सभी काम फिर ब्यर्थ, कहाये नगर बसानेवाले । जय० ॥
यद्यपि सब विभुतियां थी पास, तुम्हें थी नहीं किसीकी आस,
तदपि थी जाति पा रही त्रास, उन्हीं का दुख मिटानेवाले । जय० ॥
बांधा सवा लाख घर कोट, न जिनमें मिली तनिक भी खोट,
साथ में लेके उन्हींकी ओट, भूमिका भाग जगानेवाले । जय० ॥
जाति पर कृपा करी महाराज, हमारी यहां बचाई लाज,
तुम्हारा पूज रहे हम ताज, नौका पार लगानेवाले । जय० ॥
ऋषि मुनि किये बहुत एकत्र, यज्ञ का शङ्ख बजा सर्वत्र,
मिलने लगे बधाई पत्र, धर्म की ध्वजा उड़ानेवाले । जय० ॥
आपका यश छाया सब ठौर, धरमके कहलाये शिरमौर,
अहिंसा व्रत पर करके गौर, धर्मकी नीति सिखानेवाले । जय० ॥
कहता ब्रह्मानन्द पुकार, चाहता फिर हो जाति सुधार,
हृदय में बहे प्रेम की धार, तुम्हीं हो धीर बंधानेवाले ॥ जय० ॥

* बोलो श्री विष्णु अग्रसेनजी महाराज की जय *

श्री महाराजाधिराज सार्वभौम चक्रवर्त्ती गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक
अग्रवंश विधाता प्रताप नगराधिपति—

अग्रवाल-कुलपूज्य आदिपुरुष की स्तुति ।

जनता कह रही जो राजा अग्रसेन उपकारी ॥
अग्रोहामें पांच सहस्रों, वर्ष प्रथम था राज ।
चैन और सुख देख नयन थी उत्सुक सभी समाज । जनता०॥
दुखित भाइयों को अपनाते, आते थे जो धाम
सुखित बना देते थे उनका इसीलिये था नाम जनता० ॥
एक जोड़ा ईट और एक टका सोनेका प्रतिघरसे आजाता था
सवालाख घरकी बस्तीमें वह भी चैन उड़ाता था । जनता० ॥
कितना भ्रातृ प्रेम था देखो भाई दृष्टि पसार
भूल गये अब अग्रोहा को सुन लो आज पुकार । जनता० ॥
पुनः उद्धार करो नगरी का बना रहे इतिहास
पूर्वजों के नाम निशांका दिन दिन बढ़े प्रकाश । जनता ० ॥
जिससे पूर्व समय फिर पलटे अगरोहा बस जाय
अग्रवाल जातिका झण्डा फिर उसी तरह फहराय । जनता० ॥
अग्रसेन की मीमांसा जो अग्र सदा रह करके
जैसे ॐ शबद को करते काम प्रथम ही धरके । जनता० ॥
या जिसकी सेना हो आगे अग्रसेन कहलाता
इस संसार बीचमें चलकर आगे मारग बतलाता । जनता० ॥
ब्रह्मानन्द जातिका जो शुभचिन्तक कहलाता
अग्रसेन राजा काही उपदेश तुन्हें बतलाता । जनता० ॥
उस पर अगर चलोगे भाई हो जाओगे पार
जाति धर्मकी रक्षा होगी होगा देशोद्धार ॥ जनता० ॥

श्रीमहाराज विष्णु अग्रसेनजीकी स्तुति ।

जय २ अग्रसेन महाराज, पुरी अग्रोहा बसानेवाले ।।
शीश निज धर सोनेका छत्र, राज तुम किया अटल सर्वत्र,
हुई सब घर विभूति एकत्र, नाम चारों दिशि छानेवाले ।। जय
गऊ ब्राह्मण संतोंके दास, की जिस विधि रामकृष्ण इतिहास
देख नहीं सके जिन्होंकी त्रास, भेंट सर्वस्व चढ़ानेवाले ।।,जय ।।
नंदघर जिमि गौव नौलाख. वही जगमें थी तुम्हारी शाख,
सवालाख कुटुंब रहे सब भाख, न्याय शुभ नित्त कमानेवाले । जय ।।
वेदविधि बुलवा सब ऋषि सर्वज्ञ, किये साठे सत्रह यज्ञ,
गोत्र यों चले लखे मर्नज्ञ, मर्म जो धर्म कमानेवाले ।। जय ।।
दया इक रखा धर्म सिरमौर, अहिंसा व्रत पाला सब ठौर,
सुकवि फारसा नित करके गौर, सीफ्तमें छंद बनानेवाले ।। जय ।।

* बोलो श्री विष्णु अग्रसेन जी महाराज की जय *

* दोहा *

अग्रसेन गोपाल थे वैश्य वंश अवतार ।
तिनके हम ऐसे भये देखो दशा निहार ।।
अब कब वे दिन आइहैं जब अग्रोहे जाय ।
भाईसे भाई मिले लम्बी भुजा बढ़ाय ।।
अपनी दुख सुख की कहे विभव देखि हर्षाय ।
साडे सत्रा गोत्रकी बैठक शुभग सजाय ।
बिछे गलीचा रेशमी मसनद जरी लगाय ।।
एक एक को देखके मन ही मन मुसकाय ।

लसैं ग्रंथ सब सामने कृष्ण आदि अवतार ।
शोभा लखि मोहैं सबै धन गोपालनहार ।।
नौलख गौवें नन्द के त्यों अग्रोहे माहीं ।
कलियुगमें भी वैश्य ही गोरक्षा करवाहीं ।।
विप्र धेनु सुर सन्त सब कोटिन देहिं असीस ।
अग्रवाल दरबार सुख भोगो विश्वा बीस ।।
पति संग सुघर सुहागिनी गीत बधाई गाव
दूध पूत सुख सम्पदा भर भर गोदी पांय ।।

अग्रोहा तप भौम में करे पुन्य तप दान ।
सो पावै दरबार में कीर्ति सुख सनमान ।।

बोलो श्रीविष्णु अग्रसेनजी महाराजकी जय ।

श्री अग्रोहा लीजो सुधार २ मेरे प्यारे ।। टेक ।।
बजरङ्गदास भजन कर हर के सुखी रहे परिवार २ ।। सु०।।
बैजनाथ दया रख हृदय में किरति गावे संसार २ ।। सु०
जुग्गीलाल कर धर्म का पालन खुशी रहें नित करतार २ ।
कमलापती है नाम तुम्हारा करो धर्म प्रचार २ । सु०
गिल्लूमल करि प्रकाश विद्या २ का खोलो भण्डार २ । सु०
सुखी रखे श्रीरामचन्द्रजी अग्रोहा जाके रचो दरबार २ ।
रच दरबार उसे फिर बसालो ब्रह्मानन्द कहते हरवार २ ।। सु ।।

अग्रवाल दरबार अष्टादश गौत्र विस्तार ।

दोहा—

प्रथक २ मख अग्र ने कीन्हें चित हुलसाय ।
एक एक रानी सहित अष्टादश ऋषि लाय ।।
साढ़े सत्रह यज्ञसे भये अठारह लाल ।
ऋषि नाम सों गोत्र भी निर्भय अग्रवाल ।।

सवैया ।

अष्टादश यज्ञ रचे बर भूपने नाम ऋषिन के चित्त भरोजु ।
गोभिल मैत्रेय जयमीन शांडिल ओरव कौशिक ध्यान धरोजु ।।
कश्यप ताडेय माडव्य मुद्गल धान्यास तैतरेय पांय परोजु ।
नागेन्द्र गर्ग वशिष्ठ धौम्य वत्स गौतम आर्घ करो जु ।।
छोड़ भगे जब अग्रका नग्र तो भूल गये निज गोत्र विचारे ।
गोइल मीतल जीतल सींगल ऐरन कांसल ओर निकारे ।
कंछल तिंगिल मङ्गल मधुकल टेरण तामल जाय सचारे ।
नांगिल गरविन्दल टेलण बांसल गोइन खूब प्रचारे ।।
भूलत भूलत भूल गये जब फूल रहे थे रसालकी डारन ।
डारनसे पकके टपके ज्यों आम चुयें खुद ही खुद भारन ।।
भारन जाय बिके जब पेंठमें मोल भयो सस्तो तेहि कारन ।
कारन कर्म करे सो भरे इम वैश्य के नाम भये बहु धारन ।।
भूलत गोत्र के वेद छुटे अरु भूल गये पुनि सूत्रऽरु शाखा ।
शाखा फेर अनेक भई उपवीत नहीं उर में जब राखा ।।
राखा नहीं जब ध्यान पुरान का ब्रात्य भये ताका फल चाखा ।
चाखा सो सब जानत मानत निर्भय वैश्य अनेकन भाखा
बोलो श्रीविष्णु अग्रसेन जी महाराजकी जय ।

दोहा—अग्रसेन के सुतन को पत्री लीखूं बनाय ।
हाथ जोड़ पगपड़ कहूं सुनीये ध्यान लगाय ।।

पत्री बाचतके समय सभा मध्य जो होहीं ।
जैगोपाल सबसे कहूं लेहु दास गुन मोंहीं ।।

सवैया ।

सिद्ध श्री सर्वोपमा लायक अग्र तनय अग्रवाल कहाये ।
जगत सेठ कोटिध्वज लखपती ओहो उपाधि अपार सुहाये ।।
गौशाला मन्दिर धर्मालय बाग कुवां सब ठौर बनाये ।
पै अग्रोहे को भूल गये क्यों कुन्दनलाल कहे सिर नाये ।।
भाग्योदय सब भाइन के अरु भाग्योदय अग्रोहा के जानो ।
निर्भय ब्रह्मानन्द भये तो जन्मथली को भी नाम सुनानो ।।
उजड़ थेह शतावदीहु को जो ताहो चहैं अब फेर बसानों ।
आय संदेसे कहें सबसे जिन कुन्दनलाल सबै सनमानो ।।
करके पञ्चायत ग्रामन २ ले प्रिय बन्धु आनन्द खरो जी ।
पठ प्रस्ताव हिये हुलसायके कंचन अक्षर छाप धरो जी ।।
पुनि छपवाय पठाय दिसावर भाइन को प्रमोद भरो जो ।
आना भेट करो हर्षाय के सालकी साल पयान करो जी ।।

दोहा

अग्रसेन महाराज की अग्रवाल औलाद ।
जन्मभुमी उजड़ गई कर लीजै आबाद ।।

दोहा

अग्रसेन गोपाल की अग्रवाल संतान ।
नगर बसालो बड़कन का बचें गऊ के प्रान ।।
चक्रवर्ती भुपत भये अग्रसेन महाराज ।
जिनके बंसज अग्रवाल महाधनी सीरताज ।।
उनकी नगरी उजड़ी कर दीखत है थे ।
अग्रवाल सब भगदीये तज जननी से नेह ।।

अग्रसेन का नाम सुमरलो मनमें हिम्मत धार।
अग्रोहे की बुरी दसा कुं अबतो लीजो सुधार॥
सुनियेा नेह लगाय के अग्रोहे का हाल।
सुनके सोची मानियो तुमहो अग्रवाल॥
अग्रसेनसे वंश चला था निश्चय कर सुनता जारे।
फीर उसने विस्तार फलाया अग्रवाल जाती कारे॥
सबा लक्ष घर बसे शहर में मानस नांह गीने जारे।
उमदा शहर बसावो भारी चारखुंट विख्याता रे॥
अग्रवाल जो कथा सुनेंगे पाप कटे जांसा रे।

कबित्त।

धन्य आज दिन शुभ घड़ी आके यात्रासे राजा नन्दजी ने किया अग्रवाल दरबार है। साढ़े सत्रा गोत्रा पधारे हैं दरबार बीच राजा अग्रसेन जी के बंश का चमत्कार है॥ १ गर २ गोयल ३ बासल ४ कांसल ५ सींगल ६ जीन्दल ७ मीतल ८ मंगल ९ एरण १० टालण ११ तींगल १२ तायल १३ कंछल कुमार है। १४ नागल१ ५ बीन्दल १६ ईन्दल १७ मधुकल है सत्रा गोत्र अठारवां गवन जोकि आधे में शुमार है॥

❀ देश की याद ❀

जिसे जन्मकी भूमि भाती नहीं है, जिसे देशकी याद आती नहीं है।
कृतघ्नी महा कौन ऐसा मिलेगा, उसे देख जी क्या किसीका कहेगा।
धनी हो बड़ा या बड़ा नाम धारी, नहीं है जिसे जन्मकी भूमि प्यारी।
वृथा नीच ने मान सभ्यता पाई, बुरे के बढ़े से हुई क्या भलाई।
जिन्हें जन्मकी भूमिका मान होगा, उन्हें भाइयोंका सदा ध्यान होगा।
दशा भाइयों की जिन्होंने न जानी, कहैगा उन्हें कौन देशाभिमानी।
कई देश के हेतु जी खो चुके है, अनेकों धनी निर्धनी हो चुके हैं।
कई बुद्धि ही से उसे हैं बढ़ाते, यथाशक्ति हैं वे ऋणी को चुकाते।
हे नाथ ऐसी हमें बुद्धि दीजे, दशा देश की देख छाती पसीजे।
दुखों से बचाते रहें देश प्यारा, बनावे उसे सभ्य सत् कर्म द्वारा।

मनुदत्त शर्म्मा, वाशिष्ठ।

बोलो महाराज श्रीविष्णु अग्रसेनजीकी जय!

अग्रोहा में अग्रसेन की गदी पर नृप नन्द हुए
कर तिर्थ यात्रासे लौटे अग्रोहा में आनन्द हुए
भारी भोज किया जिसमें भाई अपने सब बुलवाये
साड़े सत्रा गोत्र पधारे इस विधि से बतलाये

गर १ गोयल २ बांसिल ३ कांसल ४ सींगल ५ जींदल ६ गुणवारे थे; ऐरण ७ मङ्गल ८ मीतल ९ मधुकल १० तींगल ११ आदि पधारे थे॥ तायल१२ कंछल१३ नागल१४ बिन्दल१५ इन्दल१६ ठालण१७ आये थे। थे पूरे सत्राह पर आधे गवन कहलाये थे॥

गोत्रावली अग्रवाल वैश्य महाजनोंकी।

नं०	गोत्र	वेद	शाखा	परवर	सूत्र
१	गर्ग	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	पंचपरवर	कात्यायनी
२	गोइलभी	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	त्रिपरवर	कात्यायनी
३	कच्छलभी	श्यामवेदी होता	कौत्थमीशाखा	,,	गोभिल
४	मंगलभी	ऋग्वेदी होता	साकल्य और	,,	असुलायन
५	बिन्दलभी	यजुर्वेदी होता	माधुनीशाखा	,,	कात्यायनी
६	ठालनभी	यजुर्वेदी होता	माधुनीशाखा	,,	कात्यायनी
७	सिंगलभी	श्यामवेदी होता	कौत्थमी शाखा	,,	गोभिल
८	जिन्दलभी	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	,,	कात्यायनी
९	मितलभी	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	,,	कात्यायनी
१०	तुंगलभी	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	,,	कात्यायनी
११	कांसलभी	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	,,	कात्यायनी

१२ ताइलभी	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	,,	कात्यायनी
१३ बांशलभीश्य	ामवेदी	कौत्थमी शाखा	पंचपरवर	गोभिल
१४ नागलभी	श्यामवेदी	कौत्थमी शाखा	,,	असलाइन
१५ मुद्गलभी	ऋग्वेदी होता	सापकिल शाखा	,,	असलाइन
१६ दरनभी	यर्युवेदी होता	माधुनी शाखा	,,	कात्यायनी
१७ ऐरनभी	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	,,	कात्यायनी
१८ गौवनभी	यजुर्वेदी होता	माधुनी शाखा	,,	कात्यायनी

गोयल गोत्र थिर करे राज कंछल सारते मन काज
मङ्गल गोत्र हैं महमन्त अरकेश लेता अन्त
फूलन्त बिन्दल वसन्त ढालन गोत्र सबके सन्त
मितल गोत्र मरजी मान तुंगल करत है अभिमान
वांशल गोत्र कब दातांर है नागिल जिम औतार
सिंगल गोत्र है सरनाम सांरत है सब काम
ऐरन गोत्र के लिये ओट भय मानते गढ़ कोट
इन्दल देत अरियां त्रास कब राज्य करते आस
मुद्गल करत है मन ज्ञान गोयन गोत्र अर्ध बखान।
साढ़े सतरां गोत्र प्रतिपाल विप्रन बहुत
वर भूम साही जोत जुग बरन में नहिं आज
सखस कीनी साज लेना जु कुलकी लाज
पढ़ते जु कब जस राय शहर अग्रोहा बसाय
जामे वर्ण चार सुख पाय
१८ पुत्र भये रिखिराई जाकुं शेष घर ब्याही
शेष पुत्र ब्याहके किये वचन इक सार वांसुक
बाचा दे चले दिनी बुधि अपार ताकि सेवा
अंशको भये वंश उद्योत अग्रोहे उत्पत भये
साढ़े सत्तरा गोत्र

नोट साढ़े सत्तरा गोत्रों का वर्णन इस प्रकार भिन्न २ किया है। सार सिद्धान्त बभूतिया भाटों की बहियां में है लिखा है॥ सोही आगे लिखते हैं विस्तारसे। अग्रवंश इतिहासके आचार्यों ने वर्णन किया है।

आल इण्डिया सेण्टर अग्रवाल दरबार।

(मूल भट्ट वाणी)

छत्रबान अग्रवाल धनवान पुत्रवान सावरी बेल कल्याणवान राजावासुक के दोहत मान अगर के शर तपे महा सुघर बन मांह शहर जो कहिये अग्रोहा बसिया ताके नाम शहर बसाया अग्रोहा जामे चार वर्ण सुख पाय सत्रा पुत्र भये ऋषिराइ।

जाको सहस नाग घर ब्याही सहस नाग के घर
ब्याह के किये बचन इक सार
वांसुक बाचा कर चले दिनी बुद्धि अपार
ताको सेवा अंश ते भये वंश उद्योत
अग्रोहे उत्पत भये साढ़े सत्रह गोत्र
साढ़े सत्रा गोत्र पवित्र नर अग्रवाल सुवश बसो
अग्रवाल के वंश को जानत सकल जहान
तापे चँवर ढुले छत्र फिरे देत बड़े रे दान
अग्रवाल भूपाल दान दे मान बढ़ावै
अग्रवाल भूपाल कीर्ति कुल जस कुमावे
अग्रवाले बंश में गढ़ अग्रोहा स्थान
करो काम सब धर्म का सदा बधो कल्याण
पितास्बर धोती बनी केशर तिलक चढ़ाय
योते अग्रसेन के बैठे चँवर ढुलाय

एक लल निशान पदम दश रावल राणी
पंदरसो पखरेत भयो आकाश वाणी
नाभ कमल के कमल कमल के केश महँ तल
वेद पुराण समर्थ समझ लिजो दोय जात ब्रह्मा रषि
श्री अग्रवाल उत्पत है
एक वन ॐकार दोय धरति धर अम्बर
तीन कहुं त्रिलोक चार जस बेद भनंतर
पांच रचे ब्रह्माण्ड छठे दर्शन के मन्दिर
सिपत कमन के रिषन सरवर योगीन्द्र
दश कहुं अवतार एक ध्रुव अग्यारह रुद्र

बारहमी भान राजा रक्षा करे तेरवां रतन चौदमा तूं राजेश्वर पंदर सों पखरेत सोलहवीं कला जलन्धर सिंहासन सत्तरा तुरी अठारह भार बनस्पति उनीसा पर बीश हो राजा अग्रसेन को प्रकाश

अग्रसेन के द्वादश पंच पुत्र घर वासुक व्याहन आये।
किरोड सजे गजराज किरोड़ लख चले पैदल
राजा वांसुक घर मांडवा वाण शीश न छाबिये
अग्रसेन के बंश ने किये पुज्ये भाट बभुतिये
बार शनिच्चर पच्चमी त्रेता फागुण पहला पक्ष
शहर जो कहिये अग्रोहा जाकि सूरज भरत है सक्ष
वाय बनी चौबीस ताल छतीस बंधाये
कूप १०८ एक सौ आठ तासु फिरत दुहाई
चार किले चौफेर बने बारह दरवाजे (दरवाजे)
हाट बीस हजार बजे छत्तीसो बाजे
दातार इते दुनियामें सात किरोड़ दतब दिया
जिन पुज्या भट्ट बभुतिया
मङ्गल विन्दल गोत्र ढेलण सिंहल सर्व देशा

जितल मितल गोत्र तुंगल तायल धर्मधारी
मङ्गल गोत्रो मोहना सिंहल गोत्र सपूत
गर गोत्री घोड़ा देवे मलकन जान
मंडन नागल जिन्दल गोत्र पंच मन देह बड़ाई
ऐरण से ठेरण पति साडे सतरा गोत्र
पवित्र नर अग्रवाल सुवसवसो
अग्रसेन शुभ नाम अग्रकुल कियो उजागर
अग्रवाल भूषाल वैश्य कुल कीर्ति कलाधर
शौर्य दयाकी मूर्ति दीपति बल वैभव के घर
पुत्रवान धनवान रहे गोपाल निरन्तर
क्षत्रीगण के बीच में वैश्य राज स्थापित किया
बनियों में वीरता यह जग को दिखला दिया
रहे सदा नवनिध उनके पुन्य प्रताप से
होय इतिहास प्रसिद्ध अग्रवाल वंश फुले फले
बाय बनी चौबीस पाज छतीस वंधावे
कूप तेरा सो साठ ता ऊपर फिरे दुहाई
चार किले चौफेर बने षोडस दरवाजे [षोडश]
हाट छपन हजार बजे छतीसों बाजे
सवा लाख घर शहर में बसतां उपर स्थिर रहै
राजा अग्र बसायो अग्रोहो एता काम त्रेता किया

अग्रोहासे निकल कर अठारा वास बसाये।

प्रथम बांस हिसार शहर हांसी बसायो
तीन गांव तोशाम तासु पर फिरे दुहाई
सरसा शहर सुहावना नारनोल नामी तखत
पंच गांव पंच भावना सातों शहर सुथान

महम रोहतक भी जोनो पानीपत करनाल जिंद
कैथल बखानो मेरठ दिल्ली दिप डिंग सुनाम
बुडियो नगर चढ़तो कला सहारनपुर जगाधरी
अठारह बांस अग्रवालका महादेव रक्षा करी
और कांटी कानुड़ धरी सुधक तपे धणी
माता जिलो पाटण जोर समर्थ यों भंवर विधाता
नामल और अमृतसर अलवर पुण्य दान किजै ऐता
उदयपुर आमोर सांभर कुचामण मेडतो पाली श्रीयो
को सौभाग्य साह डिडवाणें डंका बजे

व्यौंक विस्तार

बगड़िया और रुहेटा लोहिया भैरूं का गिन्दोड़ा
भरतिया छित्रका तम्बाखूवाला रिंगणीया दलाल परशराम
पादशाहवाला चाणावत उदावत कागावत एतावास
डिडवाणे वसे

जस बरदाई खेमका सुरेका सिंहानिया सरावगी सरायकुल धानुका श्रेसकेशाण गुण गाये केजडीवाल कशरटा बाजोरिया मुरारका पोद्दार कीर्ति कराये जालाण गोयनका डालमिया नेवटिया बुधिया बागला बृदाये भरतिया बजाज ताकि कीर्ति चहोकुंटमें चौधरी तिलक सुमथ मन भाये उदका चमड़िया सौफडिया कमलिया लुंडिया मोर झुमरिया लीलदेका मोदी बुबना केडिया सरावण सदा कुथलाई हिसारोया शिरे तुलसानकी कीर्ति यों मांमें सवाई आठ दश गोत्र कीर्ति मिलाय पद अग्रोहे उत्पन्न फतेहपुर सुख पाये हैं ।

कवित्त ।

गहरे बम्ब बम्ब जान खान सुलतान मुलतान पेखिये गहना ऐन तेरी रही स्यन हिन्दुयान की लाख तलवार ले बम्ब बम्ब गहना नाम भाट ईश्वर जैमें आज अग्रवाल ने छत्र लेना एक तो छत्र देख्यो अष्टभुजी देवी पर एक ता छत्र देखो दिल्लीपत नरेश पर एक तो छत्र देखो मोर मुकुटवारे पर एक तो छत्र देखो अग्रसेन के जाय पर ।

सुराका सिंघानिया बागला बजाज जानो
पंसारी शराफ कुल साचो बिहरायो है ।
धानुका रूइया और खेमका कसेरा जाहर
खेतान केसान सकतिया सवायो है ॥
झंझुनवाला तुलसान और भरतिया विसाल मानो
भये हैं लोहिया मोर बंकें मन ध्यायो है ॥
सफडिया चमडिया सरावो कुल सरस जो सवायो है
बुधिया नेवटिया खेम वंश विहरायो है ॥
लीले का मोदी और बुबना केडिया जालहान
की करित्त बनाय पढ़ते कविराय हैं ॥
ढाढनिया बाजोरिया मुरारका पोतदार
का सुयश ही सवायो है ॥
सांगानेरिया सरस डीडमानिया कानोडिया
करन सिरे हिसारिया ही का सुयश सवायो है ॥
अग्रोहा निकास हु से मुहल्ला ३६ सो
फतेपुर बास पायो है ॥
श्वीपीया गाय तीन हजार सात सौ सत्तर घोड़े
तुरंग तीन हजार रोकड़ी पांच किरोड़े
सत्ताइस हस्ती दीये दीया सोना अम्बा बाड़ी
तगड़ी पगड़ी टका औलाद बधो तुम्हारी
भाट बनाये भानजे सवा मन मोती दिये
अग्रसेन के वंश को जाने सकल जहान
नौबत बजे छत्र ढुले देत बड़ेरे दान

अग्रवाल वैश्य महाजनोंकी वंशावली।

आद नाम एक अलख है और न दूजो कोय
बहुत कियो बिस्तार तप उपज्यो मन माहीं
मनसे उपजी शक्त और शक्त मन मतो उपायो
मध्यकर्ण महाजन ब्रह्मलोक भणीजे गावे बेद पुराण
श्रवण सारा सुन लीजिये इष्ट मुष्ट के हाथ
हाथ लो धनुष परमाण अभय कोश एक कोश
कोश सो जोजन कहिये सो जोजन एक देश देश
सो मण्डल कहिये सो मण्डल एक खण्ड नो खण्ड
पृथिवी जानिये जगन्नाथ ब्रज खण्ड राजा अग्रसेन
वखानिये पंच किरोड़ निशान पदम दोरावल रानी
पंदरा सो पखर ते बांसुक साह बखानी आठ लाख
ऊंचा चले हस्ती महमंती कही सहस मण तेल जले
तल दिया बाति दातार तपे दुनिया मांही
जिसने सात किरोड़ गज दियो साढा सत्तरा
गोत्र पवित्र भया जिन पुज्या भाट बभूतिया
एक कहुं ॐकार दोय धरती धर अम्बर तिन कहुं त्रिलोक
चार जस वेद पढंतर पांच रचे ब्रह्माण्ड छठे मन्दिर के
दर्शन सात गयनके ऋषि सात सरवर और समुन्द्र
अष्टकुली पर्वत साख दोय भरत विलंदर और नवनाथ
न पर नाथ भेष भरिया योगी जलन्धर तेरा तत्व बखान
के चौदवां कहुं रतन पंदरमी कला जलन्धर सोलवीं तुम
राजेन्द्र वारा भान रक्षा करे दिगम्बर अण्ड पर गुनीस

गुनिन्सा पर बीस जहां राजा अग्रसेन को प्रकाश यह राजा ऐसा भया जिसने पुजा भाट बभुतिया सोनेका कटारा दिया चौतीस गांव गौड ब्राह्मणों को दियां राजा हरभज साह की सन्तानपर पण्डित कियो विचार सकल। दिखे वो पाणी होम करन वो पुरुष मई भई आकाश सो वाणी नारायण के नामसे जल थल उपजो तांही तहां अग्रोवो उत्पति भई दोय जात क्षत्रीभ ई सुन की रानी विसनी, विसनीका पुत्र भयन्द और भयन्द की रानी अन्देला और अन्देलाको रानी सावित्री और सावित्री के पुत्र सदा रिख और सदा रिख के त्रिसेला और इनके पुत्र मावाली और मावाली की रानी हीरा देवी और हीरा देवी के पुत्र मध्यमा और मध्यमाकी रानी उसमनी और उसमनी के पुत्र ब्रह्मा और ब्रह्माकी रानी वाणी और वाणी का पुत्र मरीची और मरीची की रानी विन्दा राजा कश्यप के तेरा रानी गंजा इससे तैंतीस किरोड़ देवी देवता उत्पन्न हुए रानो देहुता जिन जाये मेघमाला नवमी रानी पदमावती दशमी रानी नाम करोबा जिन जाये सदरल ११ वीं रानी रतनकुंवराय जिन जाये चार पुत्री चार पुत्र जिन जाये नागनी कुली चतुर तेरवीं रानी गरुड पंचमी रानी सोहन प्रभात नौलख तारा गगन में शोभा छठवीं रानी सुलतान जिन जाये सुरजभान सातमी रानी ऋतुमाला जिन जाये अष्टकुली पर्वत सोला आठमी रानी मेघनिन्द्रा राजा कश्यपकी रानी रूपमाला ताके सुत अमरिष और अमरिष के पुत्र धुमारिष और धुमारिष के पुत्र पमारिष और पमारिषके पुत्र ब्रह्मारिष और ब्रह्मारिष के पुत्र प्रकाश और प्रकाशके वंशमें धनपाल वैश्य राजा रतनपनि प्रतापनगरके व्यवस्थापक और तुलाधार जाजली हरभज साह सालभद्र समाधि नामा वैश्य इस वैश्य-वंशमें धनकुबेर लक्ष्मीपुत्र हुए तुलाधार तुलके आधार पर जिविका है जिसकी तुल तकड़ो तकड़िया कांटा गज कसौटी पायली नाप इनके आधारसे जिनका रोजगार है या महाजनी विद्या है इसको धनपाल या धनरक्षक प्रतापनगरकी गद्दी के येही पहले राजा हुए इसी वंशमें महीधर अग्रसेन धनपाल अग्रोहा प्रतापनगर एक ही मालम होता है दक्षिण आदिक में अग्रोहा

नहीं है अग्रोहा जिला हिसार तहसील फतेहाबाद थाना भुन्ना चौकी अग्रोहा कस्बा के माफिक है अब चन्द रोज से दिल्ली सरसा को नित्यप्रति मोटर चलता है और हिसार से ब्यायव दिशा तेरा मील है गाम फतीहाबाद की सड़क पर बसो अग्रोहा के नाम।

श्रीविष्णु अग्रसेन जी महाराजकी जय!

आल इण्डिया सेण्टर अग्रवाल दरबार।

अग्रवाल कीर्तिमाला।

अग्रवाल के वंश कुं जानत सकल जहान।
तापे छत्र फिरे नौबत बजे चँवर ढुले देत बड़ेरे दान॥
तुम हो दाता तरवर हम अब तुम ताक हंस ज्यों ताके
सरवर समुंद्र सागर भरे तुम्हारा सबकुं मान
चार कुंटमें जाणिये गढ़ अग्रोहा स्थान छव दर्शन पत
सांवरी बेल बोलत बेन सुभट

कबित्त।

करत है कवेश जात नामी शहर अग्रसेन वंश के थोक न्यारे २ हैं। धर्म्मदासजी दिवान सुयश लिया शोभा बिसारे हैं॥ कीर्तिमें क्रतुका देश २ में नाम कीन्हा उहीका भ्रातनमें भारे हैं। लक्ष्मणका लखपति लखे जात शाह भनत कवि गंगहनन दरिद्र हरण हमारे हैं। कीन्हों है खुड़ानो खूब प्रगट उन्नत ना आणिये है। श्री ये जोसराय का शाहन में शाह सुख के समाज बड़ी जात बाणीये हैं॥ मंडीवाला थौक मनोहर सदा सिद्ध कोई बातकी न खामी है। डेडराज जी पांच पञ्चोंमें भलाई लिया हवेलीवाला हवेली झुकाई सामी है। बभुतिया बजाज सोला शहारनमें नार नोल नामी है। बल वोही बिक्रम हरिकरण करी दो पात सिंची सीतारामने जब देखो लहरात यही धर्म और पुन्य सपाये वोही सीताराम कुवा और बाग लगाये

वोई सीताराम जी सबलु शाहके नन्द जो करत बिंडमके काम ऐरण गोनी दादरीवाला सीतारामजी अग्रवाल बाणिये है।

छतरवान अग्रवाल धनवान पुत्रवान सांवरीवेल कल्याणवान राजा बासुक के दोहतमान सती माई सहाय करे हमारी आशीर्वादका जगदम्बा बनाय रहै।

अग्रवाल कि धाकसैं चिमकति चारो कूंट
देश २ घोड़ा दीया मुल्कों पर ऊंट
अग्रवालसे बाणिये सो मेरे यजमान
करत काम सब धर्म का सदा वधो कल्याण

कबित्त

जिवे जल और पवन जीवे धरतो धर अम्बर जीवें वेद ब्रह्मा जीवे महादेव डिगम्बर सरस्वत मनाय विधक। जीवे राम रसना पीवे जसराज भाट दे आसका सकल सभा जुग जुग जीये। बधो वंश अग्रवालक गनितप्रति दुनो होय। जैसे फूल कंवलको वारिध दियो परोय। अग्रवाल असवार और सब न्यात पैदल देखन कलको तप सो नरेश विधना बनाई आय आप धर्मको धायो है हेर हेर टेर टेर छपन में पूछ लो साढ़े बारा न्यात में अग्रवाल तो सवायो है।

छन्द।

है कोई ऐसा विर बली जो चोलों के सङ्ग जल जावे।
मेरी मनसा पूर्ण करके जगमें नाम कमा जावे॥
इतना सुनकर सब सुन्न हुये और सभा में कोई नहीं बोला।
किसको थे अपने प्राण न प्रिये जो दग्ध होय लेकर चोला॥१॥
तब दसराज जी ने अपने दिलमें मनसूबा बांध लिया।
यह कार्य्य न राजाका होगा मुझको समझगे जगमें कपट किया॥३॥
तब दसराज चोले लेकरके दग्ध हो गये ये तत्क्षण।
पता लगा जब कन्यनको राजा ढिग पहुंची थी उस क्षण॥४॥
हे राजा हम आप देवेंगी इसको अङ्गीकार करो।
तब राजा उनसे हाथ जोड़ बोला तुम पुत्री माफ करो॥५॥

है कोई ऐसा वीर बली जो चोलोंके सङ्ग जल जावे ।
मेरी मनसा पूर्ण करके जगमें नाम कमा जावे ।।टेक।।
केवल सन्तान तुमारी ही होने हित मैंने काम किया ।
मैं निरअपराधी हूं पुत्रियो तुमरे हित यह काम किया ।।५।।
यह विनय रायकी सुनकरके तब कन्या दिलमें शान्त हुई ।
फिर अग्रसेन से युं बोली राजा हम अब सब शान्त हुई ।।६।।
जो कुछ होना था आज सब हो गया क्रोध से न कुछ काम चले ।
अब कुछ उपाय ऐसा बतलावो जो इन चोलोंका नाम चले ।।७।।
वंश आपके में राजा तुम यह परिपाटी बांध चलो ।
फिर राजाने स्विकार किया और फरमाया यह काम भलो ।।८।।
मैं अपने वंशमें आजहिं से यह परिपाटी रखता भाई ।
व्याह समय बर कन्या दोनों यह रीत सदा रखना भाई ।।९।।
सिर पर मुंहरी चुंदड़ी पहेन यह वर कन्या दोनों रखना ।
मुंहरी नाग शरीरोंका चुंदिड़ी कांचली चिन्ह रखना ।।१०।।
कन्या अपने नणसार का चिरा फेरन में पहरेगी ।
चोले का बिगड़ा शब्द ही चिराको मनमें समझेगी ।।११।।

दोहा—

उसी रोज से आज तक बने भभूतिया भाट ।
अग्रवाल के वंश में इनका ऊंचा ठाठ ।।

बोलो महाराज श्रीविष्णु भगवानकी जय ।

श्रीचतुरभुज विष्णु भगवान की जय

ख्याल—कहैं चतुरभुज विष्णु आप ही, ऊजड़ नगर बसा लेंगे ।
अग्रवाल दरबार कराके, गोरक्षा करवा लेंगे ।। टेक ।।
अग्रवाल इतिहास वर्तमां, पहले तो छपवा दीजै ।
जगह जगह श्रीमान् सेठके, पास उसे पहुंचा दीजै ।।
भूत, भविष्यत, वर्तमान सब, हाल साफ समझा दीजै ।
होगा सफल मनोरथ सबका, मरती गाय बचा लीजै ।
निश्चय अग्रवाल कीरति कर, भारतको दिखला देंगे ।।
कहैं चतुरभुज विष्णु आपही, ऊजड़ नगर बसा लेंगे ।।१।। अग्र०
बेमालूम नगर ऊजड़ है, वांपै होंगे महल खड़े ।
साढ़े सत्रह गोत्रों के ही, होंगे कमरे बड़े बड़े ।
पहली मंजिल सात गोत्रकी, पांच मंजिलतक जाय चढ़े ।
छठवींसे फिर बजै नगाड़ा, सप्तम पै जय ध्वजा उड़े ।
दिनमें ध्वजा रातमें बिजली, शत योजन चमका देंगे ।
कहै चतुरभुज विष्णु आपही, ऊजड़ नगर बसा लेंगे ।।२।। अग्र०
चारोंलँग गोकुलेन्द्र भवनमें, सांढ़, बैल गोवत्स बसैं ।
सुन्दर चित्र कृष्णलीला के, दीवारों पर सुभग लसैं ।
पुष्प वाटिका कूप बावड़ी, देख देखके देव हँसैं ।
साँझ होत ही दीपमालिका, जबही सबही दीप चसैं ।
वंशपूज्य श्रीमहालक्ष्मीजी के, मन्दिर शोभा देंगे ।।
कहैं चतुरभुज विष्णु आप ही, ऊजड़ नगर बसा लेंगे ।।३।। अग्र०
एक वर्ष के दो मेलों में, अग्रवाल सब आयेंगे
अग्रवाल दरबार सजाके, जाती न्याय चुकायेंगे ।
स्त्री पुरुष सबी सजधजके, गौवोंके गुण गायेंगे ।
शोभानिरख सकल सुरनर मुनि, जयजयजयति मनायेंगे ।
'निर्भय' विद्या, वस्त्र अन्न के. सदावर्त लगवा देंगे ।।
कहैं चतुरभुज विष्णु आपही, ऊजड़ नगर बसा लेंगे ।।४।। अग्र०

पुराणोंके आधारपर
श्रीमहाराजा अग्रसेनजीके पूर्वजोंकी वंशावली

(ले -श्रीयुत नन्दकिशोर जी अग्रवाल चौधरी)

प्रिय सहृदय पाठकगण ! महाप्रलय के पश्चात् उस परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर, आनन्दकन्द, शेषशायी भगवान की जब पुनः संसार उत्पन्न करनेकी इच्छा उत्पन्न हुई तो उसकी अद्वितीय नाभी से उत्पन्न हो एक कमलपुष्प जलसे बाहर आया और उससे 'ब्रह्मा' जी का जन्म हुआ। तदनन्तर जिस प्रकार वंशवृद्धि हुई उससे जानकारी प्राप्त करानेके लिये सूक्ष्मरूपसे, महाराज अग्रसेन का विशेष ध्यान रखते हुए, निम्नलिखित वंशावली लिखता हूँ:—

ब्रह्मा
|
मारीच
|
कश्यप
|
स्वायम्भुवमनु
|
प्रियव्रत — उत्तानपाद

प्रियव्रत
|
अग्नी
|
यमपुरुष
|
सत

उत्तानपाद
|
दक्षप्रजापति[1]

[1] महाराज अग्रसेनकी वंशावलीसे इनका आगे कोई सम्बन्ध नहीं रहने के कारण उन्हें वहीं पर छोड़ दिया गया है। इससे यह अभिप्राय नहीं है कि यहींपर वह वंश समाप्त होता हैं।

नाभ
|
विश्वविख्यात महाराजा 'भरत' चक्रवर्ती जिनके नाम से हमारा देश भारतवर्ष अथवा भरत खण्ड कहलाया।
|
तासन
|
द्वेष
|
सांट
|
अखंदड़ा
|
क्षम
|
समरथ
|
अदनी
|
रिक्ष
|
सूर्य — चन्द्र[2]

सूर्य
(इन्हीं के वंशधर सूर्यवंशी कहलाये)
|
वैवस्वतमनु
(महाराजा 'मनु' जिन्होंने मनुस्मृति बनाई)

इक्ष्वाकु	जमनास	निकुंभ
अनरन	शाची	सहमासर
प्रथू	हरिवद	तरीसास्वत
त्रिशङ्कु	कोवतयासर	करोश
विश्वगन्ध	वरिधासर	सिनीजीत
जेदर	हरजस	धंधमार

महारथी बुनयास	सदारिख	करोसियारिख
↓	↓	↓
जगद्विख्यात महाधर्मात्मा	सलमरिख	मईरिख
महाराजा मान्धाता	↓	↓
↓ ↓	जोनरिख	हंसरारथ
अंवरीष परिक्ष३	↓	↓
↓	अनेनरिख	ब्रह्मरिख
धुमरिख	↓	↓
↓	संगमरिख	प्रकाश
जमनारिख	↓	↓
↓	करोसरिख	नास
भक	वृहत	मीररिख
↓	↓	↓
खत	सिनरिख	बीरधर
↓	↓	↓
मोहान	(आपका बसाया हुआ	अहमंतरिख
↓	सहसर नामक कस्बा	↓
जलनगधा	आज भी ज़िला गुड़-	श्यामदत्त
↓	गांव में विद्यमान है)	↓
तीमरिख	मौनदत्त	शौभाग्यदत्त
↓	↓	↓
त्रमसेन	मध्यमासगर	चूड़ामणि
↓	↓	↓
धर्मसेन	करमदरिख	पूरनाखद
↓		↓
अमरसेन		भईलिंग

२ देखो नोट नम्बर (१) महाराज चन्द्रसेही चन्द्रवंशियों का आरम्भ हुआ है एवं आज पर्यन्त उन्हींके वंशधर चन्द्रवंशी कहलाते आ रहे हैं।

३ महाराज अग्रसेनकी वंशावली से आगे महाराज 'परिक्ष' का कोई संबंध न रहनेके कारण उन्हें हम यहीं पर छोड़ते हैं। आपके पिता महाराज मान्धाता ने इन्हें ज्येष्ठ पुत्र होनेके कारण राज्य दिया एवं कनिष्ठ पुत्र अम्बरीषको पांचालदेश में एक रियासत जहांउन्होंने वर्तमान कालिक अमृतसर बसाकर उसे अपनीराजधानी बनाई थी। महाराज परीक्षकी २४ वीं पीढ़ीमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने जन्म ग्रहण किया था।

गुजरादरिख	अंगदिवी	नामपर आजतक मैहड़
↓	↓	रियासत विद्यमान है)
हरिदाज	महिधर	↓
↓	↓	बलेन्द्रसेन जी
धिराज	(आपके बसाये हुए	↓
↓	मैहड़ नामक नगर के	महाराजा अग्रसेनजी

(इनके सम्बन्धमें विशेषरूपसे आगामी लिखा जाता है)

अग्रवाल वैश्योंके इतिहासपर दृष्टी।

जोधपुरकी मर्दुमशुमारी [जनसंख्या] की रिपोर्टमें अग्रवाल वैश्यों के विषयमें जो लेख मुद्रित हो चुका है उसे हम यहां इसलिये उद्धृत करते हैं कि हमारे वैश्य भाई उसकी सचाईकी परीक्षा करें और अपने कुल गोत्रादि की आवश्यक बातों पर ध्यान दें उन पर विचार कर कि उनमें क्या उचित है और क्या अनुचित है? हम अपनी ओरसे इस लेखपर टिप्पणी भो दिये जाते हैं और चाहते हैं कि दूसरे सज्जन भी इस विषय का एक उपयोगी निर्णय कर लें। रिपोर्ट में लिखा है कि—

"अग्रवाल महाजन अपनी वंश परम्परा क्षत्रियोंसे मिलाते हैं। इनकी कथा [१] का खुलासा यह है कि राजर्षि ब्राह्मणों के खानदान में धनपाल नाम एक प्रतापी राजा हुआ जिसका राज प्रताप नगरमें था। उसके वंशमें अग्रसेन दिल्ली-मण्डलका राजा हुआ जिसने आगरा [२] और अगरोहा ये दो शहर अपने नाम पर बसाये और पनंग देश में जाकर माधवी और कुमुद नामा दो नाग-कन्याओंसे व्याह किया। फिर कोल्हापुर के स्वयंबर से १७ नाग कन्याओंको और लाया और १ अबछरा [अप्सरा] इन्द्र से

भी लो जिसका नाम मधुशालिनी था। इन १८ औरतों से १८ बेटे हुए जिनके नाम [३] से १७॥ गोत्र अग्रवाल बनियों के हैं, आधा गोत्र अबछ [प्स] राके बेटेका है। अग्रसेनजीने अपने पाटवी बेटे विभू को तो राजगद्दी सौंपी और बाकीको क्षत्री [४] धर्म छोड़ाकर वैश्य-कार्य्यमें लगाया जिससे उनकी वैश्य संज्ञा हो गई जो अब अग्रवाल बनिये कहलाते हैं।

"बदि मंगसर (५) शनि पच्चमी, त्रेता पहिले चर्ण।
अग्रवाल उत्पन भये, सुन भाखी शिवकर्ण॥"

विभुकी औलाद मेंसे राजा दिवाकरने वैष्णव धर्म छोड़ कर जैनमत धारण किया। उनकी देखा देखी बहुतसे अग्रवाल जैनी हो गये। फिर शहाबुद्दीन गोरीने दिवाकरकी औलादसे अगरोहा छीन लिया जिससे अग्रवाल दूसरे मुल्कोंमें चले गये और अगरोहा विरान हो गया। अग्रवालों का वतन तो हरियाना देश है कि जो जमुनाके किनारे किनारे दिल्ली से पञ्जाब की सरहद तक चला गया है, मगर अग्रवाल थोड़े बहुत हिन्दुस्तानमें हर जगह मिलते हैं जो ज्यादा तो दूकानदारी और काम मुसद्दीगिरी करते हैं। मुसद्दी पेशा अग्रवालों का एक खानदान नारनोल में हैं जो सिंगो कहलाता है और दूकान करने को ऐब (६) समझता है, बनिया (७) कहने से बुरा मानता है। तमाम बनियोंमें अग्रवाल ही एक ऐसो कौम है कि जो दिल्ली की बादशाही का दावा रखती है, व्याहमें २॥ दिन तक उसके सिरपर छत्र घूमता है। अग्रसेन के वख्त में ये खुद ही दिल्लीके बादशाह थे और जब तवरों की बादशाही हुई तो उनके वजीर हुए। पिछला राजा जब तीर्थ-यात्रा को जाने लगा तो वजीरसे कह गया कि मैं पीछा आऊँ जबतक तू तख्त पर बैठकर राज करना। वह ऐसा ही करने लगा। अग्रवालोंने यह देखकर कहा कि भाई साहेब! तख्त पर तो हम भी बैठेंगे क्योंकि—

'अग्रवाला सब ठुकराला। मूंग मोठमें कौन बड़ाला॥'

वजीरको बड़ी मुश्किल पड़ी। आखिरकार तख्तपर बैठनेके लिये ६ आदमी चुने गये मगर वहां तो सबके बैठने की गुञ्जायश न थी। इसलिये वे

अपनी एक एक टांग उस पर रखा करते थे। चौहानोंने जब यह माजरा सुना तो उनसे तख्त छीन लिया (८)।

मारवाड़ और शेखावटी में जो अग्रवाल बसते हैं वे भिवानी वगैरह से आये हैं, बजाज, नागोरी, पटवा, मेवाड़ा, पसारी और सराफ वगैरह कहलाते हैं। इनमें एक खांप फतहपुरिया है। ये पहले सांभरका महसूल बहुत चुराया करते थे इसलिये मारवाड़ो तमाशोंमें इनका यही गीत गाया जाता है। "लेवे खांड (१०) बतावे मुस्ती। हांसिलरो बनिया खेले निस्ती॥ आयो बाण्यो फतहपुरियो॥" फतहपुरिये भी मारवाड़ियों के माफिक सफरके पक्के हैं। व्यौपार और रोजगारके वास्ते दूर दूर चले जाते हैं, अंग्रेजी छावनियों में भी अकसर यही हैं। अग्रवालों का धर्म वैष्णव भी हैं और जैनी भी, सगपन दोनोंमें हो जाता है। औरत मर्द का धर्म नहीं मिलता। एक जैनी होता है और दूसरा वैष्णव। मर्द वैष्णव मन्दिर में जाता है औरत जैन मन्दिरोंमें। और कहीं इसके विरुद्ध भी। लेकिन औलाद बापके मजहबमें समझी जाती है। अग्रवाल सब लक्ष्मीजीको पूजते हैं और अपनी कुल-देवी मानते हैं। व्याह अपनी मां का गोत्र टाल कर करते हैं और कहीं सिर्फ अपना ही टालते हैं। बींदनी को फेरों के वक्त सफेद कपड़ा पहनाते हैं। जो और गहना न हो तो न सही मगर चांदीकी पातड़ी जो अंग्रेजी अठन्नी के बराबर होती है गलेमें जरूर होनी चाहिये, बगैर इसके फेरे नहीं होते, नातेका रिवाज नहीं है।

सगपन होनेके पीछे बींद बींदनी के बाप शामिल नहीं खाते और इसी तरह उनकी मांयें भी। यह रीति इन्हीं में है दूसरे महाजनों में नहीं है। पहला बच्चा पैदा होने पर "परोजन" होता है। उसका यह दस्तूर है कि अच्छा मुहूर्त देखकर पुरोहित मर्द औरतका गठजोड़ा बांधता है, कुलदेवी की मूरत लकड़ी पर खुदी हुई उनके आगे रखकर व्याह के मन्त्र पढ़ता है फिर दोनों ३ दफे उस मूरतके गिर्द फिरते हैं। बच्चेको उस वक्त पास नहीं रखते बल्कि दूसरेके घरमें भेज देते हैं। फिर ब्राह्मणों को जिमाकर बिरा-

दरी को जिमाते हैं। परोजन होनेके पीछे बच्चेके कान छेदते हैं। बाकी गमी वगैरह की रश्मों में कुछ विशेषता नहीं है। खाने पीने में भक्ष्य अभक्ष्य का बहुत विचार है। कच्चा भोजन गौड़ ब्राह्मण के हाथ का खाते हैं (११)।

(१) परदेशी अग्रवाल बींदको घोड़ पर चढ़ाने से पहले गधे पर चढ़ाते हैं, देशी नहीं चढ़ाते।

(२) परदेशी अग्रवाल परदेशमें बींदके ऊपर चंवर और छत्र करते हैं और हाथी पर सवार होकर तोरण मारते हैं, मारवाड़ (१२) में घोड़े पर सवार होकर चंवर छत्र भी यहां बींदोंके ऊपर नहीं होता है।

(३) मारवाड़ में फेरोंसे १ दिन पहले बींद बींदणी के घर जा कर पगड़ी बांधता है और बींदनी बींद के घर आकर चूंदड़ी ओढ़ती है, परदेश में ऐसा नहीं होता है।

(४) परदेशी अग्रवाले बींदनीको ब्याहके वख्त सफेद कपड़े पहिनाते हैं और मारवाड़ी रङ्गीन।

(५) मारवाड़ के अग्रवाल बांस के ऊपर घाघरा, दुपट्टा और लोटा बांधकर बींदके आगे रखते हैं, परदेश में नहीं रखते।

(६) परदेशमें बींदके ऊपर सेहरा बांधते है और मारवाड़में मौड़।

(७) परदेशमें अव्वल दफे औलाद पैदा होने पर परोजन होता है, मारवाड़में नहीं होता।

टिप्पणियाँ—

(१) बाबू हरिश्चन्द्र जी ने "अग्रवालों की उत्पत्ति" में लिखा है कि "इसका विशेष भाग भविष्यपुराणके उत्तरभाग में के श्रीमहालक्ष्मी-व्रत की कथासे लिया गया है।" परन्तु हमें भविष्यपुराणकी मुद्रित और कइ एक लिखित पुस्तकोंमें अग्रवालोंके विषयमें कुछ भी नहीं मिला! इस कथाकी

शैली पौराणिक है, परन्तु जबतक किसी पुराणमें उसका समूल न मिले तब तक भाटोंकी पुस्तकोंही को इस विषयका मूल कहा जा सकता है।

(२) अग्रसेनका राज्य चाहे आगरे में रहा हो परन्तु अग्रवालों की जन्मभूमि अगरोहा ही है, आगरा नहीं। आगरे को बाबू हरिश्चन्द्रजी "अग्रपुर" ठहराते हैं और बहुतसे लोग उसे "अरगलपुर" लिखते हैं परन्तु उसका प्राचीन नाम स्युग्रपुर है देखो "वैश्य दर्शन" प्रथम भाग।

(३) अग्रवालोंके गोत्रोंका विषय यद्यपि जटिल है तथापि इसमें कोई सन्देह नहीं कि अग्रसेनके पुत्रोंके नामसे गोत्र नहीं चले, पुरोहितों के गोत्रों से गोत्रकी प्रवृत्ति हुई है। वर्तमान समयमें यजमानों और पुरोहितोंके गोत्र में क्यों भेद पड़ गया इस बातका निर्णय वैश्य-दर्शनमें किया है।

(४) अग्रवाल वैश्य त्यक्तधर्मा क्षत्रिय नहीं है वरञ्च शुद्ध वैश्य हैं। भारतेन्दु महाराज धनपाल ही को पहला वैश्य ठहराते हैं, परन्तु जोधपुरी रिपोर्ट अग्रसेनजीके पुत्रों को तो वैश्य ठहराती है और उनको क्षत्रिय ही रखती है।

(५) रिपोर्टमें यह दोहा "इतिहास कल्पद्रुम" से लिया गया है जो साह शिवकर्ण रामरत्न माहेसरी का बनाया हुआ है।

(६) क्यों?

(७) बनिया शब्द संस्कृत के "वणिक्" शब्दका अपभ्रंश है! संस्कृत में भी "वणिक" शब्द वैश्यके समान गौरवयुक्त नहीं समझा जाता परञ्च उर्दू के दुकानदार की भांति आता है जिससे सरलता का तादृश सम्बन्ध नहीं है, परन्तु साधारण रीति से वैश्य भी अपने को बनिये ही कहते हैं।

(८) यह किस्सा चाहै अग्रवालों की "सात हाथ लम्बी" तलवार की भांति केवल कल्पना-प्रसूत और आमोद जनक ही हो परन्तु उनके वंश-परम्परागत अहंभावका सूचक है। दुःखकी बात है कि अभी भी बहुत से बड़े२ अग्रवाल यह नहीं समझते कि-"सर्वे महत्वमिच्छन्ति तद्ब्रून्दमसीदति।"

(९) अग्रवालोंके गोत्रोंकी सूची एक इटावेके आनरेरी मैजिस्ट्रेट बाबू

गिरधारी लालजीने "सुज्ञात प्रकाश पत्र" में प्रकाशित की थी, दूसरी बाबू हरिश्चन्द्रजीने अपनी "अग्रवाल-उत्पत्ति" में लिखी और तीसरी अजमेर के लाला रामचन्द्रजीने निकाली और चौथी यह है, परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि एकके एक २ साथ दूसरी नहीं मिलती। भारतेन्दु ने गोयल गोत्र केसिवाय 'गाबाल' 'गोभिल' दो स्वतंत्र गोत्र लिखते हैं जिनका दूसरी सूचियों में कुछ पता नहीं है और जो "बुद्धल, बुङ्गल, मुधकल" प्रभृति उनमें हैं उनका इसमें ठौर ठिकाना नहीं है। यही हाल अन्य बहुतसे गोत्रों का है। लाला रामचन्द्र की सूची जो पीछेसे सुधारी हुई कही गई है इतनी अशुद्ध छपी हैं कि उसमें कौथमी को कौसथमो, आश्वलायन को आखिलाउन, साकल को शाकिल और गोत्रको पुनः पुनः गौत्र लिखा गया हैं।

(१०) मारवाड़ी भी फतहपुरियोंकी दिल्लगी करते हैं !!!

(११) जान पड़ता है कि जोधपुरबाटीके मारवाड़ी अग्रवालोंकी इतनी शोचनीय दशा होगी कि उनमें 'कांदा लशुन' के खाने और भिश्तीके हाथका जल पीनेवाले भी मिल सकते हैं। परन्तु शेखावाटी, हरियाना और पूर्वके अग्रवालोंमें ऐसा कोई नहीं कर सकता। दुःख की बात हैं कि अङ्गरेजा फैशन की बरकत से अब चौके पर चौका लगानेवाला सोडावाटरका लालच इधर बढ़ने लगा।

(१२) मारवाड़का अर्थ यहां असली मारवाड़ समझना चाहिये, सेखावाटी आदि नहीं।* (वैश्योपकारकसे उद्धृत)

प्रभाती।

जागियो प्रभात भयो वैश्य अग्रवाले॥ टेक॥
शाहनपति शाहवन्त, यशवन्त नृप धर्म के धुरीण अग्रसेन नगरवाले। जागि०
चक्रवर्ति सार्वभौम राजकियो रूमझूम ऐसा गया चक्रघूम मरे फक्रवाले।
कोटिध्वजलक्षपती उनकीजबघटीरतीसंगजरी उनकीसती डालचलेताले। जागि०
सोईनगरभयो थेह उठतुमअब करोनेह गौअनकेरचोगेह निर्भयवंशचाले। जागि०

नोंट-जोधपुर की रिपोर्ट मारवाड़ से मुराद जसलमेर फलोदि जोधपुरसे है न कि राजपुताना मात्रसे।

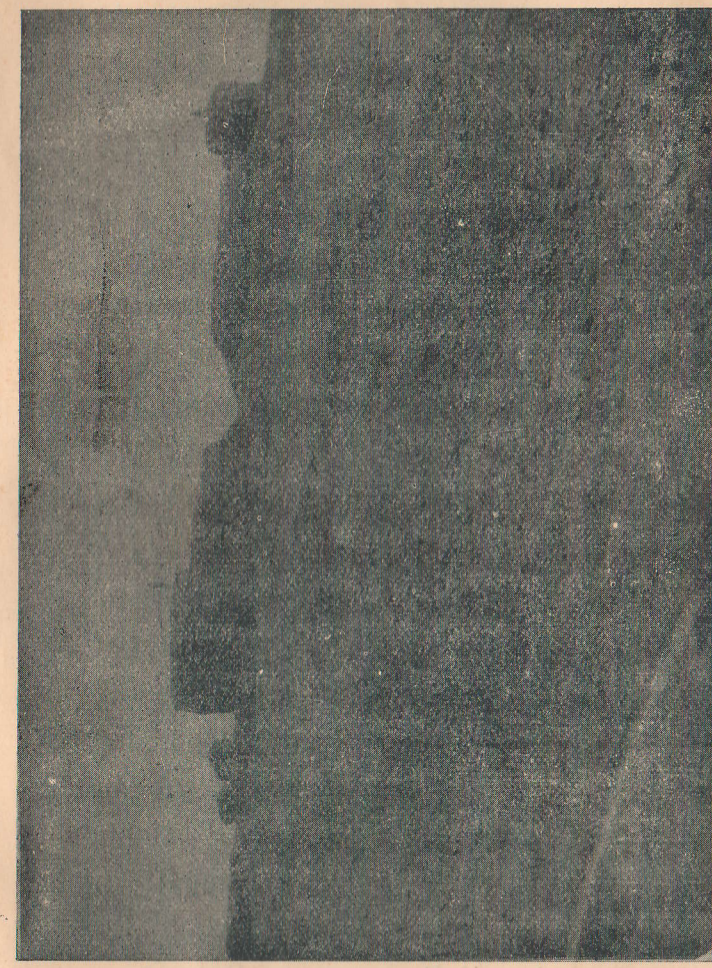

अग्रोहा किले 'थे' का वर्तमान दृश्य !

ख्याल—हम साधू गौरक्षक आये गोकुलेन्द्र भवन बनायेंगे।
अग्रसेन के अगरोहे का ऊजड़ थेह बसावेंगे॥ टेक॥
अग्रसेनके नाती पोते अग्रवाल कहलाते हैं।
जन्मभूमि अगरोहा अपनी छोटे बड़े बताते हैं॥
सती देवता सुमिर वहीं के पहले सीस नवाते हैं।
मुंडन छेदन संस्कार भी वहां जाय करवाते हैं॥
इसी लिये हम उनके दिलपर सच्ची भक्ति जमायेंगे।
अग्रसेन के अगरोहे का ऊजड़ थेह बसायेंगे॥ १॥
कोटिध्वज लखपती अनेकों जगत् सेठ कहलावें ये।
गोशाला मन्दिर धर्मालय बाग आदि बनवायें ये॥
सारे भूमण्डलमें सुन्दर ऐसी कीरति पावें ये।
सदावर्त औ दान पुण्यकर जाती जान बचावें ये॥
अग्रवाल निज जन्म-भूमिकी काया पलट करायेंगे।
अग्रसेनके अगरोहे का ऊजड़ थेह बसायेंगे॥ २॥
कठिनकराल अकाल देशमें बिनाघास गौमरती हैं।
सौके पशू आज पन्द्रहमें बैलगाय सब बिकती हैं॥
कमसरियटकी बीडकी गौवें अग्रवालको तकती हैं।
सदावर्त लगवावहु घासका विनय विचारी करती हैं॥
है वैश्योंका मुख्य धर्म हम, गोरक्षा करवायेंगे।
अग्रसेनके अगरोहेका, ऊजड़ थेह बसायेंगे॥ ३॥
बहुत जगह गोशाला थारे, अब खेड़ेपर बनवाओ।
अग्रसेनके अग्रोहे में, अग्रवाल बन दिखलाओ।
तन मन धन लग जाय भलेही, गऊलोक भी सजवाओ।
गोमाताके प्राण बचाओ अगरोहे को बसवाओ॥
'निर्भय' 'ब्रह्मानन्द' 'ब्रह्मचारी' काज सिद्ध कर जायेंगे।
अग्रसेनके अगरोहे का, ऊजड़ थेह बसायेंगे॥ ४॥

अग्रोहेका उत्थान।

कवित्त।

शाहन पति शाह नाह नाहर जहान के,
श्रीसुत नृप अग्रसेन बैठे अगरोहा में।
चक्रवर्ती सार्वभूमि भारतमें राजकियो,
धन रजधानी कबि कहैं छन्द दोहामें॥
गौअन प्रतिपाल औ कृपाल बिप्र साधुन के,
सोई का बिलाय जाय धसक जाय ढोहामें।
खेतसीदास राधा कृष्ण रूढमल हरनन्दराय,
हनुमान बख्श पंच आय जोहामें॥

ख्याल।

पंचोंकी पंचायत सुनके, गोरक्षक यां आये हैं।
पंच शिरोमणि पंच रामगढ़ मारवाड़के पाये है॥ टेक॥
अगरोहा श्री अग्रसेन की, कभी थी सुन्दर रजधानी।
चक्रवर्ति था राज इन्हीं का, बात पुराणोंसे जानी।
उजड़ गया हो गया थेह जब, बात न साधू की मानी॥
उसी नगरके अग्रवाल हैं, धर्मवीर सबही दानी।
युवराज कहो या रत्न कहो, अष्टादश गोत्र कहाये है॥
पंचोंकी पंचायत सुनकर, गोरक्षक यां आये हैं॥१॥ पंच शिरो०
श्रीयुत इनको कहैं सभी औ, घर में लक्ष्मी करैं निवास।
कोटिध्वज लखपती अनेकों, जगत सेठ हो करैं प्रकाश॥
सदावर्त मन्दिर बनवाये, करैं विचारी गौवें आस।
वैश्यजाति गो-ब्राह्मण पालक, सदावर्त कर देंगे घास॥
लिये बिना ना विमुख गया कोइ, मनचाहे फल पाये हैं।
पंचोंकी पंचायत सुनके, गोरक्षक यां आये हैं॥२॥ पंच शि०॥

अग्रसेन का नगर थेह सुन, फटती सबकी छाती है।
अगरोहे का अग्रवाल सब, अग्रसेन का नाती है॥
इतने अग्रवालके होते, वहां दिया ना बाती है।
ऐसी बात सुनेसे निश्चय, बेहद शर्म सताती है॥
पंच धरेंगे ध्यान इसी पर, अग्रसेनके जाये है।
पंचोंको पंचायत सुनके, गोरक्षक यां आये हैं॥३॥ पंच शिरो०
गौवोंको दे सदावर्त वे, भारी पुण्य कमा लेंगे।
महाकराल अकाल मृत्यु से, गौ के प्राण बचा लेंगे।
गोकुलपाल उसी खेड़े पर, गोकुलभवन बना लेंगे॥
अग्रसेन औ अगरोहे का, फिर प्रताप दिखा देंगे।
'निर्भय' ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी, कहते सबसे गाये हैं।
पंचोंकी पंचायत सुनके, गोरक्षक यां आये हैं॥४॥
पंच शिरोमणि पंच रामगढ़, मारवाड़के पाये हैं॥

बोलो श्रीगौ माता की जय!

कवित्त।

अग्रके नगरको बसावो सुत अग्रवाल,
अग्रसेन भूपने संदेस कह पठाय है।
अथवा जो पुण्य और दान कियो आपजूने,
वाहीको प्रताप पूर्ण देह धारि आयो है॥
धार्मिक वो कीर्तिमान तुम्हें सीख देवेकोहि,
नयनन निहार लेहु साधु वेष धार्यो है।
निर्भय ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी कहत,
बसावो नगर यही समझायो है॥

बोलो श्रीगौमाताकी जय!

प्रभाती।

गोकुलेन्द्र भवन, अग्रवाले अगरोहा।
सुन्दर छवि अति बिशाल, रचिये मन मोहा॥ गोकु०॥
अग्रसेनजी भुआल, यज्ञ किये प्रजा पाल।
अष्टादश गोत्रवाल, पाये सुत सोहा॥ गोकु०॥
मातभूमि कर पुकार, कहत सेठ साहुकार।
मेरे सुत बेशुमार, कोटि ध्वजन जोहा॥ गोकु०॥
मेरे धन खोद खोद, भरदो तुम मेरी गोद।
पावो कीरति प्रमोद, भरकर उर नेहा॥ गोकु०॥
मैं हूं दुखियां निरास, सुत बिन ऊजड उदास।
थेह भई ब्रह्मानंद बास कीजै अगरोहा॥ गोकु०॥

बोलो श्रीगौमाताकी जय!

दोहा।

गोहत्यासे खेड़ा ऊजड़े, गोपाले बस जाय।
अग्रवाल "निर्भयवचन" देख लेहु अजमाय॥

बोलो श्रीगौमाता की जय!

भजन।

प्यारे खेड़ा है अगरोहा देखो देखो अग्गरवाले॥ टेक॥
जैसे लङ्का जली पापसे निशिचर नाश हुए।
इक लख पूत सवा लख नाती जलत रहे न दिये॥ देखो०॥
सवा लक्ष घर अग्रवाल के अग्रसेन के राज।
वहां कहो को दीपकवाले अग्गरवाले आज॥ देखो०॥
सकल देशमें अग्रवाल के सदावर्त औ दान।
कुछ ना देखा अग्रोहेमें मिली द्रव्य की खान॥ देखो०॥
आज कराल अकाल घास बिन गौअन वश बिलाय।
ऐसेहि महापाप से प्यारे नग्र थेह हो जाय॥ देखो०॥

खेड़े पर तुम गौवें पालो अगरोहा बस जाय।
निर्भय-ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी, जग कीरति हो जाय ॥ देखो ॥
बोलो गोमाताकी जय !

दादरा।

गोकुलेन्द्र भवन बनावो अग्रवारे ॥ टेक ॥
अगरोहा है अग्रसेनका जिनके सुत जग उजियारे ॥ गो० ॥
अष्टादश ऋषि गोत्र कहाये कोटिध्वज लखपति साहुकारे ॥ गो० ॥
अपनो नाम चलावत जगमें ठौर ठौर पर क्षेत्र प्रचारे ॥ गो० ॥
जन्मभूमि अगरोहा नगरी थेह भई ठीकर हैं डारे ॥ गो० ॥
निर्भय-ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी ऊजड थेह बसावन हारे ॥ गो० ॥
बोलो श्रीगौमाता की जय !

छन्द।

अगरोहेकी काया पलटो बिलकुल हो गया ढेर।
गऊ पाल के अगरवालो उसे बसा लो फेर ॥
बोलो श्रीगौ माताकी जय !

गज़ल।

अग्रवालो इधर देखो जरा आँखें मिलाओ तो।
अग्रके पुत्र तुम ही हो हमें सांची बतओ तो ॥ अग्र० ॥
अग्रका नग्र अगरोहा वहींसे आप निकले है।
या योंही लोग बकते हैं ये शक मेरा मिटाओ तो ॥ अग्र० ॥
अग्रवाले कहानेका कहांसे फक्र पाया है।
कभी देखा है अगरोहा किधर है कर उठाओ तो ॥ अग्र० ॥
ये देखा आंखसे हमने जगतमें सेठ तुम ही हो।
हजारों क्षेत्र हैं जिनके बड़े दानी कहाओ तो ॥ अग्र० ॥
शिवाला धर्मशाला और गऊशाला अनेकों हैं।
पै अगरोहे में कितने हैं उठो चलके गिनाओ तो ॥ अग्र० ॥

अग्र का नग्र अगरोहा तो ऊजड़ हो गया बिलकुल।
कहांसे आप आये हैं जनमभूमि दिखाओ तो ॥ अग्र० ॥
वहां चारे बिना गौवें दुखी लावारसी देखीं।
कसाई काट मारे हैं गऊ मां को बचाओ तो ॥ अग्र० ॥
हजारों दीन दुखियारे तड़पते भूख के मारे।
वहां से जो निकलते हैं उन्हें दाने दिलाओ तो ॥ अग्र० ॥
मुसाफिर आप भटके हैं नहीं है ठौर टिकनेको।
झड़ले वां उतारे जो तरस उन पै भी खाओतो ॥ अग्र० ॥
हो सच मुच अग्रवाले जो है अगरोहा जनमभूमी।
तो अपने नग्र अगरोहे को देखो और बसाओतो ॥ अग्र० ॥
ब्रह्मानन्द वर्षों से विचारे दुख उठाते हैं।
कहैं "निर्भय" क्षमादत्त भी जरा गर्दन उठाओतो ॥ अग्र० ॥
बोलो श्रीगौमाताकी जय !

गजल

अजी प्रणाम है उनको जो शेखी अब बघारे हैं।
भगोडे हैं असलमें ये या साधूके निकारे हैं। टेक ॥
अग्रका राज जगमें था हुए थे चक्रवर्ती जो।
था उनका नग्र अगरोहा वहीं साधूसे हारे हैं ॥ अजी० ॥
उड़ा धूनी चले घुंननाथ औ वर्षों राख नगरी पै।
भगे तब प्राण लेकर ये कहैं जो अग्रवाले हैं ॥ अजी० ॥
दवे* घर द्वार हैं सबके उसी खेड़ेकी भूभर में।
खबर फिर ली नहीं मुड़कर कि जबसे ये सिधारे हैं ॥ अजी०॥
बने धरमातमा डोले करैं हैं दान बढ़ बढ़ कर।

* यही [शब्द हरभुजसाहसे भैंसासाहने भी कहाथा इसीपर हरभुजजाहने राजा रिसालूकी मददसे अगरोहेको बसादियाथा पर गोहत्या होनेसे फिर उजड गया। देखो अग्रवाल इतिहास। इसी लिये इसबार धार्मिक स्मारकोंसे आबाद करेंगे।

गऊशाला धरमशाला शिवाला भी प्रचारे हैं॥ अजो० ॥
जगतमें सेठ कहलावें यही इनकी बड़ाई है।
चलो देखो तो अगरोहा नहीं देहरी औ द्वारे हैं॥ अजी ॥
कसाई गाय काटे हैं बहै खूं जन्मभूमी में।
कहें जिनको किये माता वही डिडकार मारे हैं॥ अजी० ॥
मरे मां भूखसे जिनकी और बेटा मौज करते हैं।
नयन खोलो बयन कहते तुम्हें क्या लोग सारे हैं॥ अजी० ॥
रगे तनसे जो थे बछड़े उन्हीं का मुख दबोचा था।
पिलाया दूध है तुमको बनाये तन तुम्हारे हैं॥ अजी० ॥
बहा आंसू कहैं सुरभी बचा दे घास के तिनके।
बसा ले नग्रको अपने ये सुन्दर मुख तुम्हारे हैं॥ अजी० ॥
क्षमादत्त और ब्रह्मानन्द सन्देसा गायका गावैं।
कहैं निर्भय कर कीरति अगरके पुत्र सारे हैं॥ अजी० ॥

बोलो श्रीगौमाताकी जय!

* अग्रवालोत्ते जना *

अबतो जागियोरे कैसें सोये अग्रवालो॥ टेक॥

उठ जागो और निद्रा त्यागो देखो नयन उधार।
अग्रसेन की कीरती प्यारे जानै सब संसार॥ अब तो०
बोथे तो अब उजड़ पड़ा है करै तुम्हारी आस।
आवो २ करके तुम्हे बुलावैं दिन २ होय प्रकास॥ अब तो०
उस खेडेके ऊपर प्यारे पडी ईंट और ठीकर।
अग्रवाल सब मिल आपसमें करते क्योंनी फीकर॥ अब तो०
तुमको क्या मालुम नहीं प्यारे बड़कों का मकान।
शुभ कर्मोंका झंडा गाडो करो धर्म पहचान॥ अब तो०

अग्रोहा की बुरी दशा का तुमको नहीं गुमान।
तन मन धन से उसे सुधारे वो है असल संतान॥ अब तो०
नाजुक दशा प्रताप नगरकी जिसके हम तुम बासी।
जिसकी खातर तुमको कहते ब्रह्मानन्द शुभरासी॥ अब तो०
अग्रोहा को दशा सुधारौ दया को मन में करके।
धर्म कि नैया है ये तुम्हारी उतरो पार पग धरके॥ अब तो०
ऐ शिक्षा दे तुमको प्यारे ब्रह्मानन्द ब्रम्हचारी।
अगरबंसी अगरवालो करो बसासत की तैयारी॥ अब तो०
अग्रसेन की कृपा से तुम सबही हो धनवान।
ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी कहते कर हिरदे में ज्ञान॥ अब तो०
साहन पति तुम साह कहाहो धर्म मूल बिद्वान।
इस कारण तुम जगमें करते धर्म पुन्य और दान॥ अब तो०
जन्मभूमि थारी ऊजड़ पड़ी है कंगालोंकी सी जान।
सिरफ एक तुम नाम सुना है ना कभी देखी आन॥ अब तो०
थारे बुजरगों का अब सुनलो ऊजड़ पडा खेडा।
आपसमे सब मिलके भायो पार करो तुम बेडा॥ अब तो०
ग्राम२ पंचायत कर के करो रुपया इकट्ठा।
जन्मभूमि अग्रोहा बसजाय मतना मानों ठट्ठा॥ अब तो०
हर मजसाह ने एक समय में ऐसी रीत चलाई।
एक टका और जोडा ईट दे बन्धु लिये बसाई॥ अब तो०
उसी तरह सें करो इकट्ठा प्रतिजन संख्या आना।
सबभारथदेशका मिलके होजाय बावन क्रोड़खजाना॥ अब तो०
भारथ प्रतिनिधि कर गौशाला नौलख धेनु चराना।
पिंजरापोल गौशालों की गौवें वहां पहुंचाना॥ अब तो०
सभी जगह तुम द्रब्य लगाते हो कर मन में दयाल!
जन्मभूमि तो उजड़ पड़ी है थारी अगर बाल॥ अब तो०

जो तुम असली अग्रवाल हो उसे बसा लो फेर।
कह अवधू संकर अगरोहे में है माया के ढेर॥
अबतो जगोयोरे कैसें सोये अग्रवालो।

बोलो श्रीगौमाताकी जय!

भजन।

हे प्यारे वैश्यो खर्च करो कुछ दाम॥ टेक॥
रायबहादुर सेठ चलों सब ताराचन्द घनश्याम
तार भेज दो वैश्य मात्रकुं है गौवनको काम॥ १॥ हे प्यारे०
टौउसेन से जन्मभूमि में करवा लो शुभ काम
श्रीभारत प्रतिनिधि कर गौशाला करो अग्र के नाम॥२॥ हे०
नौलख गौवैं पले सहज ही बसे अग्रोहा धाम
गोकुलेन्द्र भवन स्वर्ग सुख दिखे होगा यह अनजाम॥ ३॥ हे०
पञ्चायत का हुकुम चलावो पावोगे आराम
निश्चय निरभयानन्द नगर हो अग्रोहा शुभ धाम॥ ४॥ हे०

भजन।

एजी एजी वैश्यो सोच समझ सब करना॥ टेक॥
ये बातें हम सांची कहते वचन हिये में धरना॥१॥
अग्रसेन सुत अग्रवाल सुत यहां तुम्हारा घरना
जन्मभूमि अग्रोहा प्यारी उसका मेला भरना॥ २॥ एजी २
रामगोपाल राम पद पाया ऐसा कोई नर ना
जन्मभूमि में गाय कटे से कहै सबी कुछ हर ना॥ ३॥
रामकुमार जी सेठ हुवै तो गौवन का दुख हरना
मूलचन्द सराफ सदा ही गो बेंच कर डरना॥ ४॥ एजी २
रामजीदास आश कर आये उसे तजो मत वरना

जगन्नाथ हिसार जाय कर गौका होगा मरना॥ ५॥ एजी०
गौशाला में उतनी राखो जितनी का हो चरना। एजी०
बढ़ती गौ अग्रोहे भेज दो दूध पूत से फरना॥ ६॥ एजी०
गौहत्या भारतसे मेटो बड़े गौ का खरना। एजी०
अग्रोहेमें गौ दान दे दुख अपयश निधि हरना॥ ७॥ एजी०
कुरीति निवारणी धर्म प्रचारिणि वैश्य सभा मत टरना
पालो नौलख गौवैं निर्भयानन्द वैश्यके सरना॥ ८॥ एजी२
प्रगट होय गोपाल देश में छूटे अकर्म करना
गौमाताकी जय सबबोलो मनुआयुश अनुशरणा॥९॥ एजी०
ब्रह्माशङ्कर अवधविहारी तीन देव अवतरणा॥
इनकी शरण रहेसे प्रगटे है नरसिंह हं करणा॥१०॥ एजी०

दोहा।

अगरोहे पहुंचे बहुरि, देख्यो थेह विशाल।
जन्मभूमिको छोड़ के, भागे अगरवाल॥
गौशालाके हेतु पुनि, प्रण धर कियो प्रयान।
अग्रवाल के वंश को, लगे सुनावन गान॥

ख्याल।

दोहा—कलकत्ता शुभनगरमें, ब्रह्मानन्द पहुंचे जाय।
अग्रसेनके वंशसे, कहत संदेसा गाय॥
अगरोहेके अतिथिका करो सबै सनमान।
आसन भोजन आदिसे, जन्मभूमिका जान॥

चौक।

हम साधू गौरक्षक तीनों अगरोहे से आये हैं।
संग रजिस्टर इश्तिहार भी छपे छपाये लाये हैं॥ टेक॥
चक्रवर्ति गौ ब्राह्मण पालक अग्रसेन सुत तुम्हीं तो हो।

अग्रवाल अगरोहेवाले गुप्त महाजन तुम्हीं तो हो ॥
पाय तख्त अगरोहा जिनका ऐसे नामी तुम्हीं तो हो ।
चार धाम में पुन्यः करो हो ऐसे दानी तुम्हीं तो हो ॥
अगरोहे से ऐसे भागे खोज तलक ना पाये हैं ॥ हम साधू०
अग्रवालकी जन्मभूमि अब ऊजड़ हो बिलखाती है ।
इतने अग्रवालके होते वहां दिया ना बाती है ॥
अगरोहे में गौशाला बिन गैया मारी जाती हैं ।
गौहत्या से खेड़ा उजड़ा सुनके शर्म सताती है ॥
यह सुनि अग्रवाल पंचोंने विज्ञापन छपवाये हैं ॥ हम साधू० ॥
अमृतसर लाहौर कानपुर और हिसार चलौ देखो ।
इसी तरहसे बहुत जगह में जुरे पंच सो पढ़ देखो ॥
नाम पिता घर गोत्र व्यौक सब लिखा रजिस्टरमें देखो ।
आना मर्द और औरत पर भेट लगी है सो देखो ॥
जिससे पता चले तुम सबका कहां देशमें छाये हैं ॥ हम साधू० ॥
अग्रवाल सब जुरके बैठो गोत्र नाम लिखवा दीजै ।
आना मर्द और औरतका दसखत कर दिलवा दीजै ॥
जैसा किया घने पञ्चोंने वैसा ही तुम भो कीजै ।
अगरोहे की आज्ञा शिर धर पंचोंमें इज्जत लीजै ॥
विदा करौ जल्दीसे निर्भय ब्रह्मानन्द लौ लाये हैं ॥ हम साधू० ॥

श्री प्रतापनगर अग्रसेनवंश अग्रवाल वैश्य महाजनोंकी जन्मभूमि तीर्थधाम अग्रोहामें मेला-प्रचार ।

अग्रोहा धाम की रे अबतो बिगड़ी दशा सुधारो ।
अग्रसेन राजा थे बड़भागी किया धर्म्म का पालन ॥

क्षत्रिय धर्म्म दिया छोड़ राव किया अठारह यज्ञ का साध
अग्रोहा धाम की रे अबतो बिगड़ी दशा सुधारो ॥ १
अठारह यज्ञसे अठारह पुत्र हुए सो तुम सुन लोचतुर सुजान
एक यज्ञ रह गया अध बीचतासे साढ़े सतराह लिये मान ॥
अग्रोहा धाम की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो ।
किया धर्म्म का राज्य अग्रसेन ने ऐसान कोई हुआ ॥
पुण्य गंगा की धारा में उन मल मल के मल धोया ।
अग्रोहा धाम की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो ॥
अग्रसेन की हो औलाद तुम जितने अग्रवाल ।
इसीसे धर्म्म पुण्य करते हो हो कर मनमें दयाल ॥
अग्रोहा धाम की रे अबतो बिगड़ी दशा सुधारो ।
हिसार हांसी भिवानी दादरी आये दिल्ली ॥
दिल्ली से चल आये कानपुर देखा शहर विशाल ।
आ कर हमने प्रचार किया जन्म भुमि थांरी अग्रवाल ॥
अग्रोहा धाम की रे अबतो बिगड़ी दशा सुधारो ॥
कमलापत की तारीफ क्या है बहुत धर्म्म करे ।
ईश्वर उन पर हुये राजी सबही काम सरे ॥
गिल्लुमल दरबार रचावो अग्रोहा में जाय ।
पिछाड़ी बाल तुम क्यो होते हो अग्रवाल कहलाय ॥
अग्रोहा धाम की रे अबतो बिगड़ी दशा सुधारो ।
जुगीलालजी तुम सेठ भारी रचो खुब दरबार ॥
गौविप्रन की सेवा करो जग में होय जय जय कार ।
अग्रोहा धाम की रे अब तो बिगड़ो दशा सुधारो ॥
गिल्लूमल के क्या कहने है कि ये ऐसा दिलदार ।
हमने कहा कलकत्ता जांयगे दिये टिकट झट चार ॥

अग्रोहा धाम की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो ॥
चार टिकट के पच्चीस रुपये दिन्हे हैं दिल खोल ॥
अर्ज एक तुमसे करते अमृत बाणी बोल ॥
अग्रोहा धाम की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो ॥
अग्रवाल हो सबसे आगे पिछे पिछाड़ी बाल ॥
धोती कुड़ते साफे दे दो ब्राह्मण करे सवाल ॥
अग्रोहा धाम की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो ।
चार टिकट गिल्लमल दिने लल्लमल दो कपड़े ॥
हम है प्रोहित थारे सुभचिन्तक मतना बितो सकड़े ।

भजन करतल ध्वनी

लिजो जयगोपाल निर्भय गौरक्षक का टेक ॥

जब हम भारत भ्रमण करि आये कथ सचे हाल सुनाये करो सब इन पे ख्याल निर्भय गौरक्षक का ।

नृप अग्रसेन के जाये गौभक्त वैश्य कहलाये जय बोलें बोले निर्भय गौरक्षक का ।

श्री अग्रसेन रजधानी सब देखो जाय पुरानी नौलख गौवें पाले निर्भय गौरक्षक का ।

चलो अग्रोहे में सज के अब करो सम्मति मिल के सारे अग्रवाल निर्भय गौरक्षक का ।

सुख अग्र गौशाला सासन गौ ब्राह्मण प्रतिपाला भारत होय निहाल निर्भय गौरक्षक का ।

डिपटी कमिश्नर लावो निज जन्म भूमि दिखलावो मेला हो हर साल निर्भय गौरक्षक का ।

प्रेसीडेन्ट बनावो पुनि पञ्चायत कर वावो खुले भारत के भाल निर्भय गौरक्षक का

तहसील दार भी आवे और संग पुलिस को लावे बंधावे पगड़ी लाल निर्भय गौरक्षक का ।

हो जावे यही निशानी जयघोष बहुरि रजधानी गौहत्याको टाल निर्भय गौरक्षक का । लीजो जयगोपाल निर्भय गौरक्षक का ।

श्रीविष्णु अग्रसेन जी महाराजकी जय !

दोहा ।

हांसी जिसमें हो रही अग्रवाल को धाम ।
अग्रोहा उजड़ भयो देख बसायो गाम ॥
अग्रवाल हैं घणे धनी धनके मालामाल ।
गौशाला तक है नहीं मनके सब कङ्गाल ॥

❋ भजन ❋

ऐजी ऐजी वैश्यो उड़ती है कीर्ति तुम्हारी ।
हम गौ रक्षक जन्मभूमिके कहत वचन हितकारी ॥१॥ एजी०
हे रघुनाथ सहाय जैत अब करो दया सुखकारी ।
गौमाताके प्राण बचावो डिब्बत है महतारी ॥२॥
शेरसिंहजी शेर दिलसे कर चौधर अधिकारी ।
श्रीरणजीतसिंह भूपती ज्यों गौशाला कर जारी ॥३॥
गंगासहाय रईस रहीसी रहे जबही तुम्हारी ।
अग्र गौशाला दिखलावो नौलख गायें संभारी ॥४॥
श्रीरघुनाथ सहाय सुनो अब मेलाकी कर तैयारी ।
अगोहेको शीश झुकायो निर्भय कह ललकारी ॥५॥

बोलो श्रीविष्णु अग्रसेन महाराजकी जय !

बोलो श्री गौमाता की जय !

दोहा—

चांदनी चौक हिसारमें और बड़ाबाजार ।
सुनाने ब्रह्मानन्द लगे अग्रसेन बिस्तार ।
मेम्बर बोले हर्षके हमने मानी बात ।
आपसका झगड़ा हमें बिलकुल नहीं सुहात
ना यवन धन देवेंगे ना अब बेंचे गाय ।
इक्कावन गौवें अभी देंगे तुर्त पठाय ॥
नौकर हिन्दू मिलत ना मिलते ही ले राख ।
भंगी और इन यवन की रही न हमको साख ॥
मेलामें हम आय हैं साक्षी हैं भगवान ।
इतनी सुनकर ऊंट चढ़ सरसे कियो पयान ॥
सरसा सर कर सरस्वती सुमिरत हुं गौ माय ।
सकल मनोरथ सिद्ध कर निर्भय पहुंचे आय ॥

भजन ।

निर्भय आये नगर में, बोले जयगोपाल ।
गौमाता की जय कहो भारत होय निहाल ॥
जय बोले जय होत है विजय ध्वजा फहराय ।
गौमाता की कृपा से सुगम दिगविजय हो जाय ॥
मन के हारे हार हैं मन के जीते जीत ।
जय जय होवे देशसे निर्भय गावे गीत ॥
श्रीताराचन्द सेठजी मुरलीधरके बाप ।
हाथ जोड़ आसन दियो बोल सुने वे आप ॥
मेला पर पहुंचाय हैं बैल बैहेली रथ वान ।
सदा यहीं ले जायगा आवें जो मेहमान ॥
खुद आऊं बैशाख में साक्षी हैं भगवान ।
दर्शन करके नगरके करूं पुण्य और दान ।

हांसी सरसा जाय के पंचायत करवाय ।
बहुरि भिवानी आइये दूंगा फतेह करवाय ॥
स्टेशन हिसार पै देखो कोई स्थान ।
जहां धर्मशाला बने पावे सब सनमान ॥
अग्रोहा के यात्री ठहरें दफ्तर देख ।
यहीं सवारी भी रहै लिख मुनीम यह लेख ॥

बोलो महाराज श्रीविष्णु भगवानकी जय ।

दोहा—

नगर ढिंढोरा हो गयो जेते अग्रवाल ।
अग्रोहासे सब भगे जोह मालामाल ॥
ऊजड़ नगरी हो गई. जहां अग्रको राज
तहां वहा दुतीये मेला सुनो अखबारन में आज ।
गौ–भक्त तहां आये है जान वैश्य गौ भक्त ।
आज कल या भूमि में बहत गौको रक्त ॥
याते साहस कीजिये दीजे नगर सजाय ।
जगतसेठ और कोटिध्वज अग्रवाल कहलाय ।
अपने लायक जो करत वह पावे सनमान ।
अग्रवाल किस योग्य है जानत सकल जहान ॥
अग्रोहा उजड़ पड़ो करिहै लोग हँसाय ।
याते ब्रह्मानन्द कहत है विविध भांति समझाय ॥
मेलेके दिन निकट हैं कीजिये शीघ्र उपाय ।
नामवरी जगमें मिले अपकीर्ति बच जाय ॥
अग्रवाल को नगर लखि ऊजड़ थेह विशाल ।
अग्र गौशाला करी मेला की जड़ डाल ॥
रामजन्म कर चैत में विजय दशहरा फेर ।

पीली चिट्ठी भेज के कहीं सवन से टेर ॥
गौशाला बनवायें गौचर भूमि छुड़ाय।
जन्मभूमि तो अग्रोहा गौवनसे बस जाय ॥
बधिरण सुनी न अधरण
दिखलाई करतूत अग्रोहा में आजदिना बोले कलूभूत
अग्रवाल से कहां है वन बैठे सेठ।
हत्यारों को द्रव्य दे भरें व्याज से पेट।
गोहत्याके पापसे उजड़ हो गयो गाम।
खेड़े हुं से सिर गयो ऐसो पायो नाम।
बीकानेर नरेश सुनी गंगासिंह सरदार।
गोरक्षक आये जहां देखे पानीदार ॥
आश्विन शुक्ला प्रतिपदा सम्वत सत्तर मांहिं।
पंचायत निश्चय करी अग्रवाल सब आहिं ॥

दोहा।

गौजगमें जन्मायके खाने कुं दे माल।
दूध दही घृत शर्करा तसमई रोटी दाल ॥
तन अपना नापाक है हाड़ मांस और चाम।
अच्छा है आ जाय जो गौमाता के काम।
चक्रवर्ती नृप अग्रका अग्रोहा शुभ धाम।
आज दिना उजड़ पड्यो अग्रवालको ग्राम ॥
कलकत्ता शुभ नगरमें गौभक्तन की हाट।
गौमाता की कृपासे हैं लक्ष्मी के ठाट ॥
अग्रसेन के वंश में सूरजमलसे सेठ।
भगवानदाससे बागला भये धर्मकी भेट।
उत्तर दिश धरनी फटि भयो बहुत भुडौल ॥
गौमाता की जय कहीं निकशो ऐसो बोल।

तिन और से जल बढो दक्षिण पछिम पूर्व।
जैसे अब बंगाल में बाढ़ देखिये अति सर्व ॥
अग्रसेन को पुण्य ही दातापन दिखलाय।
भोजन बस्त्र आदि दे डुबत नगर बचाय ॥
चारों दिशा के बीच में अग्रोहा दिखलात।
उसी धर्म्म की धुरिके अग्रवाल कहलात ॥
सोही आगे बढ़त है चाहत प्रलय बचाय।
खो अग्रोहे आय के पंचायत कर जांय ॥

छन्द—

अग्रवाल सो जन्म भूमि अग्रोहा अपनाईये।
अग्रोहा उद्धारणी पंचायतें करवाईये ॥
जैनी हिन्दु आर्य हों वह परस्पर मिल जाइये।
जातिका गौरव दिखावो प्रेमबेल बढ़ाइये ॥
दे भेंट में ईकीस रुपैया बीस बात बनाइये।
मेला भरे हर साल में यह भांति नगर बसाइये ॥
पंचायतोंका हुक्म जारी देशमें करवाइये।
धर्म्म कर्म करवाय प्यारे किर्ति स्तुति पाइये ॥
अग्रवाल अग्रोहा दैनिक पत्र भी छपवाइये।
लाखों छपाके ट्रैकट घर घर भेंटमें पहुंचाइये ॥
निज धर्म कृषि गौरक्ष और वाणिज्य कर सुख पाइये।
मांसहारी हिन्दुओंके हाथका मत खाइये ॥

नोट-१—सज्जनो, ४५ वें पेज में चौथी लाइनके नीचे एक पद छूट गया है सो यह है:—

"गुरु ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी है उनकी आज्ञा जारी चलो पुरुषों की चाल निर्भय गोरक्षका।"

नोट-२—चैत्र सुदी ७।८।९ और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नौमी तक अग्रसेन जयन्ती उत्सव का मेला होता है।

मांसहारी नेगियनसे मांस को छुटवाइये।
चढ़ाय गैरनको यहीं गौमात बचाईये॥
पंचायत हर जातिकी कर गौ की जय बुलवाइये।
नौलाख गौवें पाल निर्भयानन्द वैश्य कहलाइये।

दोहा—अग्रोहा तप भूमिमें करे पुण्य व्रत दान।
सो पावे दरबार में कीरति सुख सनमान॥

रग २ में अग्रवंशियों के दान रस सञ्चार हो।
अग्रवाल सारे हिन्दके निज जाति हित तैयार हो॥
अग्रोहा नगर का प्रत्येक वैश्य खेवनहार हो।
डूबते इस शहरका फिर तो अवशि उद्धार हो॥

ख्याल—

कुंवार शुक्ल शुभ सांतसे शुभ नवमी तक मेला होगा।
अग्रोहामें आकर देखो नर नारी मेला होगा॥ टेक॥
बड़े बड़े सेठ और धनवाले जन्मभूमि लखि २ दे दान।
सबका यह सनमान करेंगे आवेंगे जो २ मेहमान॥
आवेंगे विद्वान दूर २ से गौभक्त देंगे व्याख्यान।
भजन मण्डली देश हितैषी दिनमें गायें सुन्दर गान॥
निसमे रहिस नाच और गाना बहुत तरह खेला होगा॥१॥ कु०
आयेगी दुकान दूर दूरकी दूर दूरके नर नारी।
तीन रोज तक धूम रहेगी होती है अबसे तैयारी॥
होगा उत्सव राम विजयका गौशाला होगई भारी।
गौकी पुज्या धुंधुणे को भेंट चढ़ेगी वहां न्यारी॥
धज्जा नारियल कडवी रुपैया गिनीका रेला होगा॥ २॥ कुवार०
दुकानें वह लायेंगे जिन रुपैया पगड़ी पाया था।
अपना नम्बर नाम दुकानका लिखया हक जमाया था॥
आने जानेका दुख सहकर मेला प्रथम लगाया था।

दो मेलों का नफा साल भर खायेंगे ठहराया था॥
छठे महीना बाद चैत्रमें फिर यही बेला होगा॥ ३॥ कुवार०
कुंवार शुक्ल शुभ सांतोंसे शुभ नवमी तक मेला होगा।
अग्रोहामें आकर देखो नर नारी मेला होगा।
रथ बहेली बघी मोटरमें बैठ सेठानी आवेंगी।
मनोकामना मनमें करके संग पती कुं लावेंगी॥
गंठजोडेकी जात करेगी गौवोंके गुण गावेंगी।
गौमाता की जय बोलेंगी दूध पूत सुख पावेंगो॥
निर्भय ब्रह्मानन्द गुरु अग्रवाल चेला होगा॥ ४॥ कुवार०

ख्याल—

हम निर्भय गौरक्षक वैश्यों जन्म भूमिसे आये हैं।
अमर भूप श्रीअग्रसेनका तुम्हें संदेशा लाये हैं॥
कुंवार शुक्ल शुभ ७ से शुभ नवमी तक मेला होगा।
अग्रवाल वहां आवेंगे नहीं जिन्हें कभी देखा होगा॥
कर पवनाइ हृदय लगावो तुम सबका एका होगा।
गोहत्याके नाश करण कुं पंचायति लेखा होगा॥
अग्रोहा आबाद करेंगे कहते यों समझाये हैं।
हम निर्भय गौरक्षक वैश्यो जन्मभूमिसे आये हैं॥
अमरभूप श्री अग्रसेनका तुम्हें संदेशा लाये हैं।
पंचायत करके तय कर लो क्या २ ठाट सजाना है।
हाथी घोड़ा मोटर वाहन कहां से लाना है॥
तम्बू और कनात गलीचे आदिक बहुत मंगाना है।
करो ठीक प्रबन्ध शीघ्र ही जैसे नगर बसाना है॥
अग्रवाल कोटिध्वज लखपति हमने यहां लख पाये हैं।
हम निर्भय गौरक्षक वैश्यो जन्मभूमिसे आयेहैं।
अमर भूप श्री अग्रसेन का तुम्हें संदेशा लाये हैं॥

अग्र गौशालामें वैश्यो नौलाख गाय बचा लीजे।
इसी तरहसे श्रीगोकुलेन्द्र भवन की अचल नींव निश्चय कीजे॥
गौशालों की प्रतिनिधि कर गौकष्ट हरकरके जीजै।
गौशालाओंसे नाता यह प्रत्यक्ष दिखला दीजै॥
वैश्य जाति जो जन्म होत ही गौरक्षक कहलाये हैं।
अमर भूप श्री अग्रसेन का तुम्हें सन्देशा लाये हैं॥
रहा नहीं अब समय देर का जल्दी सब करना होगा।
पंचायत का हाल छपा कर सकल देश भरना होगा॥
समाचार यह छपा देखकर सभीको सजना होगा।
स्त्री पुरुष मित्रयुत सबकुं अग्रोहे चलना होगा॥
निर्भय ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी कहते सबसे गाये हैं।
हम निर्भय गौरक्षक वैश्यो जन्मभूमि से आये हैं।
अमर भूप श्रीअग्रसेन का तुम्हें सन्देसा लाये हैं॥

बोलो श्रीगौमाता की जय

श्रीविष्णु अग्रसेन महाराज की जय

अग्रवालोपदेश—अग्रोहासुधार।

ऐजी ऐजी प्यारे अब तो कथा कहूं सारी।
अग्रसेन का मकान कुछ नहीं है अजान।
तुम सुनो करके कान, है मुल्कोंमें जारी
प्यारे अब तो कथा कहूं सारो। ऐजी ऐजो प्यारे॥१॥
राम राम जपो प्यारे दुख सारे कट जाय।
अग्रोहाकी कथा सुनो सब दोष दूर जाय॥
अग्रोहाका मण्डल प्यारे सबसे बड़ा कहाय जी।

थारे बड़कोंका मकान उजड़ कैसे पड़ा प्यारेजी।
कङ्कर पत्थर वहां पड़े दिन बहुतके पसारे जी॥
ऐसी दशा देख नर हुए दुखी सारे जी।
है हमको चिन्ता भारी प्यारे अबतो कथा०॥२॥ ऐजी०

ठिकर पड़ो घांस खड़ा देखके घबड़ाया जी।
ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी चलके वहां आया जी॥
ऊजड़ खेड़ा देख प्यारे मन अकुलाया जी।
न्यौली नग्रका निवासी गौड़ विप्र है गालीज्यो जान।

अग्रवाल जातिका तो कुल प्रोहित उसे मान॥
उसे देख दया आई अन्तर घट हुआ ज्ञान।
जब ये बुद्धि बिचारी प्यारे॥ अबतौ कथा० ३॥ ऐजी०

उपदेश करै ऋषि सुनो सबही चित्त लाय।
अग्रोहाकी दशा देख प्यारे जिया घबड़ाय॥
उसको सुधारो प्यारे नामको बड़ा कहाय जी।
बड़कोंकी चौकी प्यारे उसका सुधार करो॥
मालदार सभी तुम पुण्यका निशान करो।
सभी जने मिलके प्यारे बड़ोंका सन्मान करो॥
होय बड़ाई थारी, प्यारे अब तो कथा०॥४॥ ऐजी०

मन्दिर शिवाला करो और करो धर्मशाला।
थारी सती अट्ठारा हैगी उनकी करो प्रतिपाला॥
उनके तो मन्दिर चिनावो चेतो भ्राता तत्काला जी।
अग्रवा तो नहिं सहज बड़ोंका मुकाम जानो।
मनमें तो दया करके धर्मका उपदेश मानो॥
धर्मका निशान करो येही दया हृदय ठानो।
लीजो दशा सुधारी प्यारे, अब तो०॥५॥ ऐजी०

चौपाई।

अग्रसेन हुए महराजा, छत्र सिंहासन उनके साजा।
अब मैं छन्द बनाय कहूं ताजा, सुनो चित्तदे पूरण होय काजा॥
अग्रसेनसे वंश चला था निश्चय कर सुनता जा रे।
फिर उसने विस्तार फैलाया अग्रवाल जाती का रे॥
सवा लक्ष घर बसे शहरमें मानुष नांय गिने जायरे।
उमदा शहर बसाबो भारी चार खूंट विख्याता रे॥
अग्रवाल जो कथा सुनेंगे पाप सारे कट जांगे थारे॥

अग्रहामें उपदेश और पञ्चायत।

काशीजी से आये ब्रह्मचारी ऊजड़ नगरी बसाते हैं।
इसीलिये हम आकर प्यारे पंचायत करवाते हैं॥१॥
अग्रोहा के पंच मिलकर पंचायत जल्दी कर लो।
हिन्दू मुसलमान मिलकर बात हमारी चित धर लो॥
ब्राह्मण अग्रवाल सब मिलकर बात आपसमें कर लो॥
अग्रसेनकी नगरी अग्रोहा उत्पत्तीमें है पढ़ लो।
तुम आपसमें सोच समझ लो हम तो थेहपर जाते हैं॥
काशीजीसे आये ब्रह्मचारी ऊजड़ नगरी बसाते हैं॥ इसीलिये०
आओ पंचो थेह पर चाले लारे लारे आओ जी।
किस विध खेड़ा ऊजड़ा प्यारे आपसमें बतलाओजी॥
चुपके ना कोइ चालो प्यारे कोई न कोई बात चलाओजी।
किस विधि खेड़ा ऊजड़ा प्यारे इसका हाल सुनाओजी॥
सुन लो पंचो बात हमारी हम खेड़ा देख हर्षाते हैं॥४॥
काशीजीसे आये ब्रह्मचारी ऊजड़ नगरी बसाते हैं॥ इसी०
खेड़ा ऊजड़ देखके प्यारे मनमें ऐसी आई है।
साधु ऐसा कोई आया अद्भुत पपस्या लाई है॥

मेरे मनमें ऐसी जचगी धुंनाथ धूनी लाई है।
जितनी सती इस अन्दर दवगीं अग्रवालकी माई हैं॥
आते जाते अग्रवाल सब बहुत ही शरमाते हैं॥ ६॥
काशीजीसे आये ब्रह्मचारी ऊजड़ नगरी बसाते हैं॥ इसी०

येही खेड़ा अग्रवालका मिलके सारे अब देखो।
स्वागत कारिणी करो कमेटी आपसमें सब नाम लिखो॥
भाई भाई मिलके सारे आपसमें यक पटा लिखो।
हिन्दू अग्रवाल मिलके प्यारे आपसमें यह सारे शरत लिखो॥
अग्रोहा आबाद करेंगे श्री ब्रह्मानन्दजी कहते हैं॥
काशीजी से आये ब्रह्मचारी ऊजड़ नगरी बसाते है॥ ८॥ इसी०

दोहा।

ब्रह्मचर्य्यको साधिके, ज्ञानी हुए प्रवीन।
उमर वर्ष पचीसकी मानो करके यकीन॥ १॥
मनमें हिम्मत ठानके यही प्रण लिया धार।
जो उत्पत्ती स्थान है उसका करूं सुधार॥ २॥
अग्रोहामें जायके विद्यालय बनवाय।
फिर करी पंचायती अग्रबाल समझाय॥ ३॥
अग्रोहामें जायके ऊजड़ नगरी देख।
इसको हम आबाद करें ऐसा लिख दो लेख॥

पञ्चोंके प्रश्नोतर।

दोहा—

हाथ जोड़के पञ्च कहैं सुनो गुरू महराज।
इतने दिनका ऊजड़ा कैसे बसेगा आज॥१॥
सुन लो पञ्चो ध्यान दे सारे मिलके तुम्हीं।
जितने दुनियामें अग्रवाल सबकी जन्मभूमी॥२॥

सिरफ तुम यही लिखो जो कुछ कहूं बयान ।
जो आवेंगे बाहर से करेंगे सनमान ॥३॥
पञ्च जब कहने लगे सुन लो धरके चित्त ।
महाराज सांची कहत हैं नहीं हैं वित्त ॥४॥
ब्रह्मानन्द कहने लगे मनमें सोच विचार ।
अग्रवाल चितवायके बांधो पैसै चार । ॥५॥

भजन अग्रवाल चेतावणी ।

तुम सुनियो यार अग्रवाल कहाते ॥
तुम अग्रवाल कहाते । पिछा डीवाल क्युं हुवे जाते ।
मनमें करो विचार । तुम अग्रवाल कहाते ॥ १ ॥
जो पीछेको जोता है । वो पिछाड़ीवाल होता है ।
उसकी बुद्धि ख्वार ॥२॥ तुम सुनियो यार० ॥ २॥
होवो तुम एकसे एक आगे । थारे मनका भर्म जब भागे ।
आवो लारके लार । तुम सुनियो यार अग्रवाल कहाते ॥३॥
कहैं ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी । भक्तोंके मित्र मुरारी ।
लीजो बात सुधार । तुम सुनियो यार ० ॥ ४ ॥
अग्रवाल कहाते । पिछाड़ीवाल क्यों हुए जाते मनमें करो० ॥

शेर ।

अग्रसेन नामीक राजा सुन लो चित्त लगाय के ।
थारा वंश उसीसे चला था कहता हूं समझायके ॥
अग्रसेन राजा हुए भारी महिमा कही न जाय है ।
जो उसका था शहर भारी आज वहांपर कछु नाय है ॥

ठुमरी ।

विचार करो जी अग्रवालो ये मनमें २ ॥ टेक ॥
वो देश भक्ती जो पहले थी तुममें कहां गई इसका इजहार करोजी ।
अग्रसेनके जाये शूर और वीर कहाये दया धर्मका रस्ता लेकर प्रचार करो० ॥

कहां तुम इस अग्रवे की कीर्ति भुलाई अब तो कोई थे पर निशान करोजी० ॥
यह दुःखका कारण अविद्या है सारा तुम चाहो तो विद्या प्रचार करो जी० ॥
गुरुओंकी समाधि करते हैं चेले तुम अग्रवेकी तर्फको ध्यान धरो जी० ॥
जो कुछ निशान करोगे तुम प्यारे बड़कोंकी दयासे स्वर्गमें पांव धरो जी० ॥
कहे ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी सुनो मेरेप्यारे अब जल्दी अग्रोवेका सुधार करोजी०
अग्रवालों ये मनमें विचार करो जी० ॥

दोहा—

मेरा कहनेका काम हैं तुम क्या जानो नाय ।
मालुम सभी जहानको, मैं कहता हूं गाय ॥

अग्रवाल जन्मभूमिको करूणा पुकार ।

या हँस २ करे प्रकाश भूमि अग्रवालों की ॥
एतने पुत्र हैं मेरे उन्होंने कहां कहां किये हैं डेरे ।
मुझे हो रहा शोक सन्ताप भूमि अग्रवालोंकी० ॥ या हँस० ॥
ये पुत्र हुए अभिमानी नहिं सार धर्मकी जानी ।
बने धर्मात्मा आप भूमि अग्रवालों की० ॥ या हँस० ॥
मेरी हो रही हाय हाय ख्वारी नित २ ईंट जायं उखारी ।
तुम सोचो प्यारे आप भूमि अग्रवालोंकी ॥
मेरे बहुत पुत्र है आले साढ़े सत्रह गोत्रवाले ।
बसे देशमें तात भूमि अग्रवालों की० ॥
ये क्रोड़पति अभिमानी ऐसे बड़े बड़े हैं दानी ।
करावें मन्दिर आप भूमि अग्रवालों की० ॥
वे कुवां भी करवावें अरु सदावर्त लगवावें ।
और करावें जाप भूमि अग्रवालों की० ॥ या हँस० ॥
अब करो प्रभू मत देरी ये कहति दुखिया टेरी हो ।
रहा बहुत सन्ताप भूमि अग्रवालों की० ॥

ये पापन दुनियादारी क्या बृद्ध तरुण अरु नारी।
छा रहा इसमें पाप भूमि अग्रवालों की० ॥
तुम ब्रह्मानन्दजी बीर अब बांधो मेरी धीर।
अपनो चित राखो गंभीर यह करो प्रतिज्ञा आप भूमि० ॥
कहै क्षमादत्त कोई आया साधुन धूणा लाया।
उसने दिया श्राप भूमि अग्रवालोंकी या हँस२ करे पुकार ॥भू०॥

गोरक्षा प्रचारक भजन।

बोलो गौमाताकी जय प्यारे सदा रहो निर्भय ॥ टेक ॥
निर्भय शहर रामगढ़ आये गौवें नो संगहि लाये।
पिरी विजय ध्वजा फहरावे झोरीमें वा वहांसे भरवावे ॥
डमरू डमक डमक डम बाजे पक्का महल मेघ सम गाजे।
मानस तजदेव निज काजे सुनके बालकका दिल साजे ॥
सुन्दर कुरता पाग सजावें बालक घर २ से जुर आये।
सब कोई देखनको उठ धावें लखि के बालकफौज सुख पावें।
छोरी दौरि २ आवें गोदी भय्याको भी संग लावें।
गौकी जय बोलें और बोलवावें भारत विजय मन्त्र सिखलावें। बोलो०
बर्षी मेवा और मिठाई सबने मांग विन करि खाई।
आये ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी पहुंचे कैशदेव अटारी।
बातें होने लग गईं न्यारी कर दी अग्रोहेकी तैयारी। बोलो० ॥
बोले श्रीनिवास वहां जावे कुछ तो करके दिखलावे।
जगमें तब तो नाम कमावे कीर्ति अस्तुती प्रभुता पावे।
जननी जन्म भूमि है प्यारी उजड़ विन सन्तान हमारी। । बोलो० ॥
उसकी हो रही हाय ख्वारी नित २ ईंटै जायं उखारी।
कोई अग्रवाल जो होता खेड़ा खड़ा २ क्यों रोता।
संपति कुं राखमें खोता उसमें दान पुन्य कुछ होता।

जबसे अग्रवाल गये भाज तबसे होगया तुर्की राज।
कबजा गवर्नमेण्टका आज पाया लावारस महाराज।
बोले ब्रह्मानन्दजी बात देदो गठजोड़ेकी जात।
प्रगटे अग्रवालके तात खेड़ा कर लो अपने हाथ। बोलो०
जल्दी पञ्चायत करवावो मेजरनामा भी लिखवावो।
सबसे दसखत भी करवावो खेड़ा अपना तो कर पावो।
बोले श्रीनिवास मन भाई तुमने चोखी रीत चलाई।
मैं कहूं चतुर पिता से जाई पदवी पंच शिरोमणि पाई।
खेड़े में जो कुछ तुम पाओ ताके दर्शन हमें करवावो।
खर्च पड़ेसो ले जावो कुछ वस्तु यहां पहुंचावो।
सचमुच अग्रोहे का जाना अपना उजड़ नगर बसाना।
इससे अधिक पुन्य क्या पाना बालक गावे इस विधि गाना।
हैगी वैश्योंसे अर्ज हमारी ऊजड़ नगरी देखी थारी।
वहां पर गये ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी जिन करी पंचायत भारी।
प्रथम ही ब्रह्मानन्द जी जाके कहते दोनों दीन समझाके।
हिन्दू मुसलमान कुं गाके देखो अग्रोहा बसवा के।
उपदेशक ब्रह्मानन्द जो एक जिसकी राखे प्रभू जी टेक।
पीछे चेले होंय अनेक इनकी भविष्य बुद्धि कुं देख।
अग्रवाल मशहूर देशमें गौ ब्राह्मण पालक होवें।
जो गौ ब्राह्मण की रक्षा हित तन मन धन बोवें।
उसी जातके हम हैं निश्चय पालेंगे गौ थारी।
गौशालाका चीठा होवे अग्रोहाका भाग खुले।
लगे अडंगा तबतक प्यारे पंचायत ही करे सरे।
सुना रामगढ़ शहर सेठ का गोभक्त गोपाल बसे।
अग्रोहाकी गों आई यह सुनकर सब लोग हँसे।
कहे देशमें हमने देखी गौशाला सब सेठोंकी।

पिंजरापोल बनी है पक्की जहां तहाँ सब सेठोंकी।
मगर अग्रवाल जन्मभूमि है अग्रवाल सब सेठोंकी।
वहां न अबतक गौशाला है यही बड़ाई सेठोंकी।
हुआ अगोहा उजड़ बिलकुल वहां न अब तक दीप चसे।
सुना रामगढ़ सेठोंका गोभक्त गोपाल बसे।
जन्मभूमि के खसम है मुसलमां उनकी है नम्बरदारी।
सारी भूमि खेतकी जोतें जोति लई गोचर सारी।
रहा नहीं गौ चरनेका गौ फिरती मारी मारी।
नो गौवों की जगह नहीं है धन सेठ जी बलहारी।
चाहिये भूमी खरीदें अपनी गौशालाके महल लसें!
सुना रामगढ़ शहर सेठोंका गोभक्त गोपाल बसें॥
मनमें धैर्य धरो हो जाये गौशाला जो बने किले।
गौशालाका चिट्ठा होये अगोहेके भाग खुलें॥
गौमाताकी जय सब बोलो खबर होयगी जिले जिले।
नीम लगे मेलेमें सेठो विजय दशहरा भीं आया।
नौ गौवोंसे नौलख होयें निर्भयानन्द गौभक्त कसे।
सुनः रामगढ़ सेठोंका जिसमें गोभक्त गोपाल बसें॥

बोलो श्रीगौमाताकी जय!

रामगढ़ फतहपुरको चिट्ठी।

परिणाम यह हुआ कि रामगढ़के पंचोंने अंतरंगमें परस्पर बात चलाई कि गौओंकी पालके अगरोहेको वसाना अपना मुख्य कर्तव्य है क्योंकि यद्यपि सारे ही देशमें गौशाला धर्मशाला इत्यादि बनाये हैं और अपनीही जन्मभूमिमें कुछ नहीं। लोग यह भी नहीं कह सकते कि यहीं अगरोहा अग्रवालोंकी जन्मभूमि है, इस लिये फतहपुर वालोंको और मिलालेना चाहिये

जिससे काममें सुगमता और शीघ्रता हो। इस लिये सर्व सम्मतसे एक चिट्ठी फतहपुरको लिखी गई कि—

बोलो श्रीगौमाताकी जय।
श्रीगणेशजी श्रीरामजी सहाय छैं।

सिद्धश्री फतेहपुर शुभस्थानेक शाहजी मनसारामजी रामदयाल जोग लिखी रामगढ़सेती खेत्सीदासजी मोतीलालजीकी जैगोपाल बंचज्यो। अठैका समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिये। उपरञ्च आपकी चिट्ठी आई नहीं सोई दई चाहिये, और रामदयाल पुष्कर सेती आया पीछे बुखार बताईछे सोई समाचार लिखज्यो और अग्रोवासेती ब्रह्मचारीजी निर्भयानन्दजी अठै आये और अगोहेके तरफकी हकीकत कही सो इस जगां हाल पञ्चायती भेली हुई नहीं। सोई यह फतेहपुर आवे छै सोई आपने भी हाल हकीकत कैसी। उनाको कणो तो अग्रवे और अग्रवालोंके हकमें ठीक दीखैछै सोई आपके ध्यानमें के समज जचै छै आप सारी बातां सेती वाकिब छो सो निगा कर लीजियों चिट्ठी पाछो दीजियो समाचार सारा लिखियो। मिती मंगसर बदी १४ संवत् १९६८

सेठ खेत्सीदासजीने यह चिट्ठी मुझे दी और कहा कि आप फतेहपुर ले जाइये रामगढ़ और फतहपुर की एक राय होतेही अग्रवाल मात्र इस बड़े कामको हाथोंहाथ उठालेंगे और उस प्रतापनगर का प्रताप फिर भी वैसाही कर दिखायेंगे। अस्तु, ब्रह्मचारी ब्रहमानन्दजी बीकानेरको विदा हुए और मैं भिखारीदास सहित फतहपुर पहुंचा और सेठ रामदयालजीको चिट्ठी देकर सारा समाचार समझाया और दूसरे ही दिनसे फतहपुरके बजारमें उपदेश करने लगा कि—

चिट्ठीका उत्तर।

श्रीगणेशजी सहाय छै।

सिद्धि श्री रामगढ़ शुभस्थानेक शाह रामबक्शजो चिरूं खेत्सीदास मोतीलाल जोग लिखी फतहपुरसेती मनसाराम रामदयाल की जैगोपाल

बंचिज्यों। अठैका समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिये। उपरंच कागद आपने आगे दीनोहीछो और कागद आपको निर्भयानन्दजी ब्रह्मचारी सागे आयो समंचार जाण्या रामगढ़में पंचायती भेली हुई नहीं सो जाणां छां लैरसूं पंचायती भेली हुई होसी समाचार लिखज्यो। अग्रवेको बसाणो गायांको पालणों भौत चोखो छै सो उठै रामगढ़ माही वन्दोबस्त हो जावेगो तो फिर फतहपुरमांह भी हो जायेगो और जो थे चाहोगा सो हो जासी*। चिरूं रामदयालको इब बुखार आवैछै नहीं। भौत खुशी छै। साल १९६८ मिती मंगसर सुदी १० चिरूं रामदयालको जयगोपाल बंचयो घणे मान।

ख्याल वहर शिकस्त।

उठो जरा त्याग करके निद्रा ऐ अग्रवालों के लाल प्यारे।
जरा तो देखो नजर उठाकर तुम्हारा है कैसा हाल प्यारे॥
अग्रसेनकी कीरति को जाहिर दुनिया में यार करो।
जरा कौम अपनी पै भाइयो कूछ तो सोच विचार करो॥
अब तक उजड़ा पड़ा है खेड़ा उसका कुछ उपकार करो।
अग्रवंशकी नाव भँवर में फँसी पड़ी है पार करो॥
धर्मका झण्डा दो गाड़ कर अब हटाके रञ्जोमलाल प्यारे!
जरा तो देखो नजर उठाकर तुम्हारा है कैसा हाल प्यारे॥
अग्रोहे की बुरी दशा है टुक तो इस पर ध्यान करो। उठो०
तन मन धनसे उसे सुधारो मत जननी की हान करो॥
मातृभूमिको फिर उन्नति हो दिलमें यह अब ठान करो।
नाजुक दशा प्रताप नगर की इस दम नेक है ध्यान धरो।
अग्रवंश का खड़ा पताका हो दिलमें यह लाओ ख्याल प्यारे।
जरा तो देखो नजर उठा कर तुम्हारा है कैसा हाल प्यारे॥ उठो०

* इससे सिद्ध होता है कि रामगढ़वाले करें तो अगरोहेमें सब कुछ हो सकता है। महाराज सीकरनरेश भी इनका बहुत मान करते हैं।

भूतकालकी रही जो बातें बाकी तुम्हें सुनाऊंगा।
सत्रह भ्रातोंका हाल रहा जो वो भी सब बतलाऊंगा।
अग्रासेन की जो करतूतें वो भी सब दिखलाऊंगा।
उसे दूसरे भाग में फिर कैलाशसे आ छपवाऊंगा॥
करो वंशकी बने जो सेवा यही है मेरा सवाल प्यारे।
जरा तो देखो नजर उठाकर तुम्हारा है कैसा हाल प्यारे। उठो०
अबतो त्यारी कैलाशकी है सांचा तुमसे इजहार करूं।
कहां २ था राज्य इन्हों का इसका फिर प्रचार करूं॥
मूर्ति जो निकली है खेड़े में उसका भी उद्धार करूं।
गवर्नमेण्टसे मांग इजाजत उस जा मन्दिर त्यार करूं॥
यही काम करनेका समय हैं करो न अब ढील ढाल प्यारे।
जरा तो देखो नजर उठाकर तुम्हारा है कैसा हाल प्यारे॥ उठो०
जो कुछ रकम लगे मन्दिर में चन्दा सब करवाऊंगा।
जगह जगह फिर कर प्रचार तन मन धनसे उसे बनाऊंगा॥
राम राम लो मेरे प्यारे अब तो ध्यान लगाऊंगा।
भूल चूक रह गयी होय जो उसको क्षमा कराऊंगा॥
ब्रह्मानन्दके शिष्य हैं दौलतराम अग्रवाल प्यारे।
जरा तो देखो नजर उठाकर तुन्हारा है कैसा हाल प्यारे॥

दोहा—बोले रामगोपाल तब आऊंगा तत्काल।
पत्री पाय हिसार की मेला को लिख हाल॥
शामीयाना हम रेल पर देंगे तुरन्त पठाय।
पत्री स्वामी आप की हलकारा जब लाय॥
मोहता शिवनारायणजी मुलचन्द सराफ।
गाये डेड सो भेज दें तब तक हो माफ॥
इतनो सुन निर्भय चले पहुचे जाय हिसार।
गौमाता कुं सुमिर के बोले बचन संभाल॥

बहुरि भिवानी चल दिये पहुचे रातों रात।
प्रात उठत ही जाय के कही नगर में बात॥
तहसील भिवानी जिला हिसार।

भजन

ढुंढ फिरा गौभक्त जिले में तुमही हमें लख पाये हो।
मुरलीधर के पिता राय श्री ताराचन्द कहलाये हैं॥
फतेहाबाद जिला अरु सरसा कि गौशाला यह देखी।
वैश्य गाम दुध वाली यह बैल अरु बछिया सब देखी॥
बुढ़ा बैल दुध बिन गौयें यही बधिक घर देखी।
ब्राह्मण के घर बछिया जाकर हेर फर उस घर देखी॥
गया आप का बैल बधिक घर तुम तुरन्त ही उठ धाये हो।
ढुढ फिरा गौभक्त जिले में तुम्ही हमें लख पाये हो॥

बोलो श्री गौमाता की जय

बोलो श्रीविष्णु अग्रसेन महाराज की जय

सरसा बर्षा हो रही मेवा और मिष्टान।
जय बोले गौमात की सोई पाये खाने॥
जिनके फुटे भाग फुटन है मुख नाहीं।
निर्भय झोरि पुज के गौकी जय बुलाय॥

लावनी।

बड़कोंका उजड़ नगर वहां बसवावो।
वैद्यराम रामप्रताप प्रताप दिखावो॥

अहो चिरञ्जीलाल हाल सुन लीजै। अग्रोहेकी कुटुम्ब यात्रा कीजै। है वहां मेला बड़ा उसे लख लीजै। ध्वजा नारियल एक भेंट कर दीजै। गठजोडे की जात वहां करवावो। बड़कोंका उजड़ नगर वहां बसवावो॥ है ताराचन्दजीउदय आपकाभारी। मिलना उपाधीहोगयाअभी से जारी। किये लाखो रुपया खर्च नहिम्मतहारी। देमोटरकर जमाबिरादरीसारी।

मुकुंदलाल अग्रवाल

* ॐ *

आल इण्डिया सेन्ट्रल अग्रवाल दरबारकी तरफसे धन्यवाद ।

पुष्टिकर ब्राह्मण श्रीयुक्त पं० बालकृष्ण व्यासलालाणी पं० छोटूलाल व्यास कक्काणी पं० गोविन्दलाल व्यास जेसिलमेरिया पं० ब्रह्मदत्त [illegible] इन लोगोंको अनेकानेक धन्यवाद दिया जाता है जिन्होंने अपना अमूल्य [illegible] देकर पुस्तक लिखनेमें छपवानेमें तन मन धनसे सहायता दी । श्रीयुत बाबू बालचन्दजी मोदी बाबु शिवदत्तरायजी सागरमल पोद्दार [illegible] महादेवलाल खेतान सिताराम सराफ बाबू जगन्नाथ हेड जमादार [illegible] पेपर मील सदासुख कन्दोई बाबू श्रीगोपाल चिमनलाल केवलचन्द [illegible] रंगलाल अग्रवाल पं० मेघराज आसोपा बाबू राधाकृष्ण मोदी पं० सूर्यकरण आचार्य बाबू नथमल अग्रवाल श्रीनिवास अग्रवाल बाबु गोरधनदास मदनलाल सेठ, लक्ष्मीनारायण डागा बाबू हरेकृष्ण झाझड़िया मन्त्री स० भा० [illegible] सम्मेलन हरसुखदास बालकृष्ण जीवनराम सुगनचन्द पं० नन्दलाल जोशी बाबू हरदेवदास डागा श्रीचन्द मोदी बाबू नैनसुखदास जयनारायण [illegible] बाबू रामसिंह खेमका पं० गौरीशंकर ओझा बाबू बलदेवदास [illegible] मुरलीधर अग्रवाल ईश्वरदास बायेती पं० लालचन्दजी रंगा सेठ मंगलचन्द दीपचन्द पं० बालकृष्ण व्यास पं० संतोषीराम जोषी बा० बृजगोपाल डागा बा० द्वारकादास डागा पं० कालूराम पांडिया बा० सुन्दरलाल [illegible] डागा अग्रवाल वंश कुलदीपक सनातन धर्मावलम्बीय अग्रवाल सभाके मन्त्री श्रीमान बा० रामरिक्षपाल झुनझुनवालाको शुभाशिर्वाद जो कि आगे [illegible] देनेके लिये वचन दिये हैं इत्यादि लोगोंको धन्यवाद दिया जाता है जिन्होंने पुस्तक प्रकाशन में आर्थिक सहायता दी ।

मुकुंदलाल अग्रवाल

(1) श्री पन्नालाल पूरणचन्द मेहरे
अराणपुरा स्वालीपुरा रोड ...

(2) श्री नागरराम S/o रामनाथ
फतेहाबाद मण्डी जिला हिसार

(3) श्री नथुराम मुरारीलाल लुहियो मार
अलीगढ़ पो० अलीगढ़ यू.पी.

(4)